हिन्दी की शब्द-सम्पदा

विविध व्यवहार-क्षेत्रों में हिन्दी की अभिव्यक्ति-क्षमता की
एक मनमौजी साहित्यिक पैमाइश

विद्यानिवास मिश्र

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली–६ • पटना–६

प्रथम संस्करण : १९७०
मूल्य : आठ रुपये
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८ फ़ैज़ बाज़ार दिल्ली-६
मुद्रक : बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस
भेलूपुर वाराणसी-१
आवरण : सुखदेव दुग्गल

भाई (श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन) को
सादर

भूमिका

कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली से ग्वालियर कार से भाई (श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन) के साथ ग्वालियर जा रहा था। रास्ते में रंगों की चर्चा शुरू हुई फिर जमीन की किस्मों की चर्चा शुरू हुई और ग्वालियर पहुँचते पहुँचते भाई का फरमान मिला, यही आप एक लेख तयार कीजिए और हिन्दी अपने ही क्षेत्र की शब्दसमृद्धि से कितनी अनजान बनी हुई है इसकी बानगी दीजिए। यही से इस पुस्तक का श्रीगणेश हुआ और इसके बाद तो भाई के काबुली तगादा का भार कुछ ऐसा रहा और दिनमान में मालाबद्ध रूप में अलग-अलग किश्तों में लेखों के छपने की प्रतिक्रिया इतनी उत्साहवर्द्धक रही कि यह क्रम विदेश जाने पर ही टूटा, क्योंकि वहा अपनी धरती से सम्पर्क हवाई पत्रों तक सीमित रह गया।

इन लेखों के लिखने में मुझे अपने भोजपुरी अचल से तो सहायता मिली ही, सर जार्ज ग्रियर्सन की 'बिहार पीजेंट लाइफ' से, श्री अम्बाप्रसाद सुमन की 'ब्रज की कृषि शब्दावली' से तथा बुन्देलखण्ड की स्मृतियों से काफी सहारा मिला।

यह पुस्तक न तो ललित निबन्धों का संग्रह है न भाषाविज्ञान की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया शोधकार्य है और न शब्द प्रयोग का ही कोई चोखा चौपदा है। मेरे एक अत्यन्त स्नेही मित्र ने मुझे इस पुस्तक को छपवाने से रोका और कहा कि यह भाषाविज्ञान के अध्यापक के लिए शोभन नहीं होगा कि वह शब्द सम्पदा पर ऐसी अव्यवस्थित पुस्तक अपने नाम से छपाये। उनकी बात में काफी दम है पर मैं स्वयं इसे भाषाविज्ञान की पुस्तक मानने को तयार नहीं। यह साहित्यिक की दृष्टि से हिन्दी की विभिन्न अर्थच्छटाओं की अभिव्यक्ति करने की क्षमता की मनमौजी पैमाइश है। न यह पूरी है न सर्वांगीण। यह एक दिङ्मात्र दिग्दर्शन है। इससे किसी अध्येता को हिन्दी की आंचलिक भाषाओं की शब्द-समृद्धि की वैज्ञानिक खोज की प्रेरणा मिले, किसी साहित्यकार को अपने अंचल से रसग्रहण करके अपनी भाषा और पनी बनाने के लिए उपालम्भ मिले देहात के रहने वाले पाठक को हिन्दी के मदेसी शब्दों के प्रयोग की सम्भावना से हार्दिक प्रसन्नता हो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। परन्तु मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ इस पुस्तक को मैंने भाई (अज्ञेय) की आज्ञा पालन करके अपने को बड़े ही तनाव के दिनों में कुछ राहत देने के लिए तयार किया। अभी भी इस शृंखला में आगे लिखने की क्षमता है मन में हिन्दी के एक बहुत आंचलिक कोष की रचना की योजना है, ठेठ तत्सम और तद्भव शब्दों की अपनी अपनी विशिष्टताओं

के तुलनात्मक अध्ययन का भी सकल्प ह। यह सग्रह छप रहा ह इसका भी प्रयोजक मैं नही, श्रीमती शीला सन्धू ह जो दिल्ली की अतिनागर सभ्यता म रमी होकर भी इस पुस्तक के लिए इतनी उत्साहित हुइ। उन्हें धयवाद देना औपचारिकता होगी।

मैं हृदय से उन सभी का कृतज्ञ हूँ जिनके सहारे य लेख लिख गये प्रकाशित हुए और पुस्तकाकार छपे विशेष रूप से दिनमान साप्ताहिक राजकमल प्रकाशन और महावीर प्रेस का और सर जाज ग्रियसन, अम्बाप्रसाद सुमन अब्दुल्हक भाई और श्रीमती सन्धू का।

आश्विन शु० १।२०२७

—विद्यानिवास मिश्र

अनुक्रम

1

माटी की मूरतें · प्रवाह और शक्ति

माटी माटी की अपनी सिफ्त होती है। जमीन की बनावट के आधार पर मिट्टी की किस्मों के नाम चलते हैं, पहाडी या पठारी इलाकों में पथरीली, कँकरीली (राँकड), ठिकरीली, मुरुम (लाल मिट्टी), रामरज, गेरू, काली मिट्टी, नदीमातृक जिलों में बलुही, दुम्मट, मटियार, रेहार (रेहदार), रेतीली, ककरा (जिसमें उपजाऊपन न हो)। उपयोग की दृष्टि से जमीन के नाम होते हैं, बंजर या परती, मजरुआ (जो उपजाऊ होते हुए भी खेती के उपयोग में नहीं लायी जाती, उसमें बाग़-बग़ीचे लगाये जायें वस्ती हो डीह डाबर हो, परती हो चरागाह या गोचर हो, गडढा हो, पोखरी हो खरौरी हो, जंगल हो मूंगा-झाडी हो झखाड)। मजरुआ या जोत को या फसल उगाने वाली जमीन ऊसर हो सकती है। ऊँची हो तो थूस, बहुत हो तो भागड, नीची और फटी हुई जमीन ताल, नदी के पेट के भीतर हो तो गंगबरार, नदी की बाढ के दायरे में हो तो कछार, नीची हो तो खादर, नदी की दो धाराओं के बीच में हो तो दियरा, नदी के द्वारा छोडी गयी नयी जमीन चाकी, नदी के किनारे काँपी जमीन दलदल और नदी की नयी मिट्टी पाँकी, नदी से पोषित जमीन कछार या माठ, नदी द्वारा बरबाद की गयी जमीन खोह (गडढा) रेतीली (सिल्टी) दूहदार (जिसका अंग्रेजी = 'रेवीन') तलसिरी (ऊँचा-नीचा) हो सकता है। नदी के प्रभाव क्षेत्र से बाहर बांगर कही जाती है। गाँव के सिवानों के नाम पर जमीन और खेतों के नाम पडते हैं वस्ती से सटी हुई गोयड, और दीप पेड, नदी या किसी स्थायी चिह्न से नामित होती हैं, जैसे सिमरी (सेमल के पेडों के पास), नहर-तर बुटोवल और गाँव के खेतों के दिग्विभाग सरेह कहलाते हैं।

मिट्टी उपयोग में आने के पहले बड़ी तैयारी माँगती है। परती तोड़नी पड़ती है, गुड़ाई करनी होती है, खेत की बढ़िया तैयारी के लिए माघ फागुन में मघाड़ जुताई होती है फिर एक बार, दूसरी बार (दोसरा = दोखा) तीसरी बार (तिसरा तिगुरव) जोतना पड़ता है। जोतकर ढेला और बड़-बड़ ढोका को फोड़कर हेंगे से बराबर किया जाता है तब मिट्टी भुरभुरी हो जाती है और नमी या ओद कायम रखने के लिए ढँककर रख दी जाती है। रबी बोने के पहले इसका खयाल रखना पड़ता है कि ताप न बिचले ओस भागने न पाये। रबी के लिए तैयार किया जानेवाला खेत पलिहर, रोपनी या अगहनी धान के लिए जिसमें बीज या बेहन डाली जाती है उस बियाड़ कहते हैं। खरीफ की फसलों के लिए खेत जोतकर पानी से भर दिया जाता है और इस प्रकार कर्दई करने से मिट्टी सड़कर खाद हो जाती है। कभी कभी बो कर पौधों के आस-पास की घास निराने के लिए बाद खेत की जोत कर सेव लगा देते हैं। वर्षा के बाद नमी की कमी से मिट्टी में दरार पड़ने लगती है और एकाएक वर्षा बन्द हो जाने पर मिट्टी पपड़ियाने लगती है और फिर वर्षा न हो तो खेत उसड़ जाता है।

भारतीय किसान अपनी माटी के पीछे फ़क़ीर रहता है। और सबको छल छुना देगा माटी को नहीं दगा क्योंकि वह जानता है सब दगा दे जायें, माटी दगा न देगी। आज नहीं तो कल माटी की कमाई फले बिना न रहेगा इसी से वह उर्वरकों के अतिप्रयोग से माटी का दोहन करने से डरता है। खेती के नित नये बदलते कानूनों से माटी का शोषण होते देख व्यथित होता है मिट्टी की उपेक्षा से आहत होता है। उसका कोई भी अनुष्ठान सप्तमृत्तिका (बिमौट = वल्मीक गोठ भीटा या डीह—पुरानी बस्ती का अवशेष कुआँ, वनस्पति रास्ता, जुते खेत इन सात स्थानों से लायी जानेवाली) के बिना पूरा नहीं होता। विवाह की रस्म ही मटमगरा (मिट्टी से माँगना) से शुरू होती है। उसके दैनंदिन जीवन में भी मिट्टी छायी हुई है, मिट्टी के मकान मिट्टी के बर्तन, मिट्टी का उपचार। माटी का प्रजापति भारतीय कुम्हार तो इतिहास का सबसे बड़ा साक्षी है। भारत के पुरातत्व को आलोक मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों और ठीकरों से ही तो मिला है। काले कपिश चमकाये, मृदभाण्डों और उनके भग्न कपालों या खप्परों से ही प्रामाणिक रूप से सभ्यता के स्तरों का आज कल निर्धारण किया जा रहा है और माटी की मूरतों (मृण्मयी प्रतिमाओं) या मृण्मूर्त्तियों से कला की यात्रा प्रारम्भ होती है। कुम्हार के दंड चक्र (चाक) सूत, आँवा यहाँ तक कि मिट्टी लाने वाला गदहा भी भारतीय दर्शन के मूर्धाभिषिक्त उदाहरण हैं।

मिट्टी के बर्तनों में दीया, कोसा परई, तश्तरी, कड़ाही, कड़ाह फैले मुँह वाले हैं, सकोरा (पुरवा, कुल्हड़, करवा), भरुका पतुकी, कलसी कलसा, गगरी,

मटकी, मटका, घडा, कूडा, माट, अल्जिर सँकरे मुँह वाले ह। मिट्टी के नाद में ही मवेशी चारा खाते हैं। कच्ची मिट्टी से डेहरी (अनाज रखने के लिए) बनायी जाती ह। अनाज रखने के लिए ढक्कनदार खोहा, कुडनी, पिहानी बनाये जाते ह। मकान छाने के काम में भी मिट्टी की ही खपरल और नरिया आती ह और दीवाल की पुताई भी रामरज मिट्टी से की जाती ह। कुम्हार का शिल्प हस्तकौशल का शिक्षा ह मिट्टी को कटाई, चलनी स चलाई, सनाई, रुँदाई, लोंदा (मृत्पिंड) बनाई, हाथ स गढाई, चाक घुमाई और सूत कटाई, सुखाई, थापी से पिटाई, रँगाई, पकाई और सावधानी से उनको गँजाई सभी प्रक्रियाएँ बडी सावधानी से सम्पन्न होनी चाहिए नही तो बत्तन टेढा हो जाय, पकते समय सँवरा या सँवता जाय पानी पडते ही चिरिया जाय या एकदम भहरा कर फूट जाय, नीचे रखते ही पेंदी निकल जाय अपने आप बत्तन भरक जाये।

हमारे देश की सस्कृति कृषि प्रधान होने के कारण भू रचना (अंग्रेजी टेरेन) पर बहुत अवलम्बित रही ह और इसीलिए पृथ्वी या श्री की स्तुति इनकी मृण्मूर्त्ति या स्वण प्रतिमा की पूजा, बाल से लेकर कटने तक खेतिहर जीवन के अनुष्ठान हमारे जातीय सस्कार के अग हैं स्वाधीनता की चेतना के साथ माटी की पुकार हमारे साहित्य में उठी और माटी की परम्परा हमारी कला साधना में हिलगी।

• •

१

पानी बिन सब सून

हमारी चिन्तन-परम्परा में सृष्टि का आरम्भ ही जल से हुआ है जल विस्तार गहराई अनन्त इन सब का प्रतीक है। हमारी वाणी का नाम ही सरस्वती है। राष्ट्र की कल्पना में सात नदियों गंगा, यमुना गोदावरी सरस्वती सिन्धु कावेरी, नर्मदा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। तीर्थ का अर्थ ही पानी का घाट है और पानी ही इस लिए तीर्थ में है। पानी के स्रोत हमारे देश में मुख्यत मेघ और नदी हैं। वन पर्वतगर्भ जल स्रोत भी हैं और कृत्रिम जलप्रणालियाँ एवं कूप तड़ागादि भी प्राचीन काल से हैं सिंचाई के साधन बहुत प्राचीन हैं। हमारे देश में सिन्धु ब्रह्मपुत्र और शोणभद्र (सोन) नद हैं गंगा नर्मदा ताप्ती महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी बड़ी नदियाँ हैं शेष इन की सहायक नदियाँ और उनकी शाखाएँ हैं या छोटी नदियाँ हैं। इनके अलावा पहाड़ी नाले हैं, बरसाती नाले हैं, सोते हैं झरने हैं प्राकृतिक कुंड हैं झीलें हैं खारी और मीठी ताल हैं तल्या हैं तालाब हैं, कुंड हैं, तड़ाग हैं दह (ह्रद) हैं पोखर (पुष्कर) हैं गड्हियाँ हैं कुएँ हैं, चूहड़ (जोहड़) हैं बावड़ी (वापी) हैं धोआ हैं नहरें हैं कूला (कुल्या) हैं नालियाँ हैं। और सब से ऊपर बादल हैं वे प्रसन्न न हों तो पृथ्वी का जलस्तल सूख जाता है, जैसी कि आज स्थिति हुई है।

अब नदी का आँका-बाँका रेखाओं से शुरू करें। नदी का ढलुहा किनारा जो पानी की सतह से लगभग बराबर होता है (संस्कृत में पुलिन) रेता कहलाता है ऊँचा किनारा कगार। नदी का बहाव जहाँ सबसे तेज हो, वही धार, उसके ठीक बीच में मझधार है। नदी के बीच में उभरी हुई जमीन चाकी कहलाती है। इस पार से उस पार (अवार/आर) तक आर पार के बीच को नदी का

पाट कहते हैं। बरसात के अलावा नदी का वास्तविक विस्तार, नदी का पेट है, उससे पानी उपटता ह तो नदी में बाढ़ या बहिया या सलाब आना कहा जाता है और बाढ उतरती है तो नदी पेट में समा जाती ह किनारे पाक छोड देती ह या उसकी धार बडी कडखा (तेज) हुई तो मिट्टी खोद कर ककरा बालू पाट कर खेत बरबाद कर देती ह। मोडों पर नदी बहुत काट भरती ह और अडार ढाहती चलती ह। कभी कभी बाड आने पर नदी धारा बदलती ह तो पुरानी धारा टूट जाती ह और उसके मयार पर पानी सूख कर नदी की छोडन या दोहर कुछ दिना तक बनी रहती ह। बाढ़ में यकायक पानी का ढल आता ह, हिमपोषित नदिया में जेठ वैसाख में ही गेरुए पानी का पहला ढल आता ह। उसके बाद नदी का जल गन्दला हो जाता ह, वर्षा में और मटमला और फेनिल हो जाता ह। शरद् की धूप में फिर पानी निथरता ह, तब निघट कर निमल नीर बन जाता ह। वसे तो बहता पानी निमला, बहना ही नदी की सतत पवित्र होने की प्रक्रिया है।

नदी का जल थिर तो रहता नही, वह हमेशा चचल ह यही ह कि कभी कम और कभी ज्यादा। कभी तो उसमें बुलबुले उठते ह और फिर बुल्ले उठते हैं फिर हल्की सी हिलोर उठती ह फिर यकायक लहर झूमने लगती ह। ये लहरें हवा का रुख पाते ही भेडिया बन जाती हैं और नदी लपेटा मारने लगती ह। और बाढ की उफान में तो कही कही आवत्त, चक्रावत्त या भँवर बन कर बडी बडी नावा का आफत में डाल देती ह। जहाँ धार मन्द होती ह वहा नदी अगम अथाह होती ह भँवर की जगह प्राय ओडा कुड (∠अवट) या चन्द्र होता ह। उथले या छिछले पानी म नाव जमीन पकड लेती ह, फिर उसे धक्का या टहोका देना पडता ह। दो धाराआ की टक्कर की जगह बहुत खतरनाक हाती ह वहा सिल पड जाती ह और नाव फट जाने का डर रहता ह। अगर आर पार छिछला पानी हा तो उस जगह बिना परे हल कर नदी पार किया जा सकता ह, ऐसी जगह हलान कहलाता ह और सीधे इस पार स उस पार तक नाव से पार करन की जगह सोझपट्टी और सोते-सोतियो से हो कर नदी की छोटी बडी सभी धाराआ का पार कराने वाला घाट लमता कहलाता ह। नदी पार करने का दूसरा साधन ह पुल। पीपा का या नावो का या पटरो का पुल वर्षा में तोड दिया जाता ह, पठारी नदिया के ऊपर वर्षा के सिवा आठ महीने काम देने वाला पक्का पुल रपटा (अग्रेजी में जिस आयरिश ब्रिज कहत ह) कहलाता ह खम्भों या पाया वाला पुल या मेहराबो वाला बडा पुल, बारहो महीने काम में आता ह। पहाडी नदियो पर बास और रस्से के पुल (झूलना पुल झूला) बनाते ह।

पानी के थाह की माप फिल्लीडुबान, घुटनाडुबान, धोतीबचाव, कमरभर,

घातीभर, डुबान या भर पोरसा, हाथीडुबान जैसे गणनात्मक विशेषणों से की जाती है। परन की स्थिति आने पर पानी पराह कहा जाता है। जहाँ परना भी सम्भव न हो उसे ओंडर पानी कहते हैं। पानी का रंग निथरने पर ही निखरता है। गहरा पानी जामुनी, पहाड़ी नदियों का पानी झलमल और पारदर्शी गेरू घुल कर मिलने से गेरुई और सूर्य या चन्द्र की किरणों से मिल कर झिलमिल प्रखर धूप में झलमल और बादलों की घटाओं के साये में कालाभँवर, साँझ की लाली में लाल।

पानी की आवाजें भी विलक्षण हैं यह कलकल करता है छलछल करता है, नाव के नीचे पड़ कर थपथप करता है कोई चीज यकायक गिरती है तो छपाक ध्वनि होती है जरा सा हवा ने लहकारा तो पानी छपछप करने लगता है और गर धारा भी तोड़ मारने लगी तो पानी थरथराने लगता है और जहाँ धाराओं टक्कर हुई वहाँ पानी लड़ते समय दहाड़ने या गरजने लगता है। धार की तरह पानी जब किसी छेद में से निकलता है तो सुरसुराता निकल जाता है और उस छेद की मुहानी पर केवल भुलभुल करता रहता है। कभी कभी तो बाढ़ में पानी रेंगते रेंगते पठता है फिर भर जाता है यकायक सारी फसल बोर देता है फिर बाढ़ उतरते ही सर से निकल जाता है और कभी कभी पानी तेजी से बढ़ता हुआ आता है और बहाता-बहाता चला जाता है। पहाड़ी नदियों में ऐसी ही बाढ़ प्राय आती है जो घंटे दो घंटे में ही उतर जाती है।

पानी के कृत्रिम साधनों में नहर या कूल सबसे अधिक प्रमुख है। नदी से बड़ी नहर निकलती है फिर शाखा नहरें, इन नहरों से पइन, पइन से नाली और नाली से क्यारी में पानी पहुँचाया जाता है। जहाँ से पानी लिया जाता है वह जगह मथार कहलाती है वहाँ सिल्टी बराबर जमा होती रहती है और उस बराबर काटना पड़ता है, पइन भी सिल्टी से पटती रहती है उसे झारना पड़ता है। गर्मी के महीने में दिया गया पानी गरमा और बाकी महीनों में दिया गया पानी नरमा कहलाता है। नहर के अलावा कभी कभी छोटे नाले को बाँध कर पानी रोक लिया जाता है। पहाड़ी या पठारी खेतों में पहाड़ी की ढाल की ओर तीन ऊँची कच्ची बाँध कर बरसात का पानी रोक लिया जाता है यह पानी जरूरत के मुताबिक छोटे छोटे फाटकों से बाहर निकाल दिया जाता है। देवमातृक खेतों में रहट, पुर और ढेंकुल के द्वारा कुओं से सिंचाई होती है। चमड़े के थैले को ही पुर या चरस कहते हैं और जितने पुर जिस कुएँ पर चलें उसके हिसाब से कुएँ एकपरे, दुपरे, चौपरे या अठपरे कहे जाते हैं। पुर घिर्रियों पर चलते हैं। परे कुएँ पर जो लकड़ी का ठाठ रखा रहता है उसे ओखर-पोखर कहते हैं कुएँ के चारों ओर का चबूतरा जगत कहलाता है। कुएँ का घेरा जमुवट कहलाता

है। जहाँ पानी ऊपर पहुँचाना होता है, वहाँ परोहे के द्वारा पानी नीचे से ऊपर किसी मोड़ में पहुँचाया जाता है इसी को बोदर (पूरब में) और नादा (पच्छिम में) कहा जाता है। पूरब में परोहे के बदले बाँस के छोटे काम में आते हैं। दो दो आदमी एक एक धरातल पर लगते हैं। छोटे छोटे खेतों की भराई ढेंकुली या ढेंकी से की जाती है इसके लिए कच्चे कुएँ भी पर्याप्त होते हैं। और फिर आज कल पम्पिंग सेट (उत्तोलनयन्त्र) हैं ट्यूबवैल (नलकूप) हैं, सरकार के भरोसे पर यन्त्र-तन्त्र के भरोसे पर।

जिस साल पानी नहीं बरसता, नदियाँ, ताल-तलैयाँ सब सूख जाते हैं उस साल वत्सला धरती के जैसे थन सूख जाते हैं और तब रहीम की उक्ति याद आती है।

रहिमन पानी राखिए पानी बिन सब सून।
पानी गये न ऊबरै मोती मानुष चून॥

● ●

3

छायातप

प्रकाश और अन्धकार दोनों के अलग अलग आकर्षण हैं। भारतीय चिन्तन दृष्टि प्रधान होने के कारण तम और ज्योति के खेल से बराबर आकृष्ट रहा है, भौगोलिक दृष्टि से भी उष्ण कटिबन्ध में होने कारण छाया और आतप का वैषम्य बड़ा गहरा रहता है और इन दोनों की छटाओं के स्तर भी अनेक हैं। प्रकाश ज्योति, द्युति दीप्ति प्रभा विभा, भासा कांति, आलोक, आभास, उजास आतप, चन्द्रिका ये शब्द प्रकाशवाची होते हुए भी अपनी अपनी अलग अर्थच्छटा रखते हैं इन के अलावा चमक चकाचौंध, चौंध, झिलमिलाहट, टिमटिमाहट, धूप, चांदनी, उजास, उजाला, लौ, झलक, दमक, जोत, रौनक, रोशनी, चिलचिलाहट जैसे शब्द भी नये और अलग अर्थ देते हैं। झलक प्रकाश की सबसे हलकी रेखा है और चुंध सबसे तेज।

चेहरे पर चमक होती है, आब होती है, पानी होता है आभा होती है, चेहरा चमकता है दिपता है दिव्य कल्पना का योग पाकर चेहरे के चारों ओर प्रभा मंडल होता है। आंखों में चमक होती है दीप्ति होती है, तेज होता है उसकी जोत कभी कभी मन्द हो जाती है कभी कभी गयी रोशनी वापिस आ जाती है। शरीर में कान्ति होती है द्युति होती है कुन्दन की दमक होती है। सूर्य की प्रभा प्रखर और उज्ज्वल होती है दिन का आलोक होता है, दोपहर की धूप चिलचिली होती है जेठ की दुपहरी बड़ी झलमल होती है, उस समय धूप चुंध मारती है। ऐसी धूप बिलइया लोटन या डाइन भी कही जाती है, इसी में रेत पानी सा दीखता है, इसी को मृगमरीचिका, औचक और पड़वारी कहते हैं। प्रभात और सायंकाल का विभा होती है, प्रभात के पूर्व एक उजास होती है, जिसके साथ

साथ लल्छौंही आभा के दर्शन होते ह। धूप थोडी ही देर में खिल जाती है जाड़ा में कुछ देर तक रोती रहती ह, सियराई और मलिन रहती ह, कुहासे के छँटते ही निखर आती ह। सूरज की किरनें पानी पर जब नाचती हैं तो आँखें उस पानी पर नही ठहरती, यह प्रत्यालोक आलोक से भी अधिक नेत्र प्रतिघाती होता है। जेठ की तेज़ घामी में धूप चिटकने लगती ह, तब बादल आ जायें तो वही धूप सँवरा जाती ह, कालिदास के शब्दों में तब दिवस अधश्यामल (अध सँवराया) दीखने लगता ह और धूप की प्रचण्डता भी यह स्निग्ध छाँह पा कर बदरौटी घाम की आभा बन कर सुखद हो जाती है, कालिदास ने इसीलिए मानवीय प्रेम को उपमा इस अधसँवराये दिन स दी ह— दिवस इवाधश्यामस्तात्ययं जीवलोकस्य। दिन ढलते ढलते धूप सिमटने लगती ह और सँझलौकी बन कर यकायक जाने कहा उड जाती ह। चन्द्रमा की चादनी या चन्द्रिका के भी अपने अलग ही नक्शे ह, वह चैत में टहकार, वैशाख जेठ में और चहकार, पावस में बादलों के बीच से झाँकती हुई कुछ मैली सी और बादलों के हटते ही उघरी सी, कुआर-कातिक में धुली और निखरी, फिर अगहन पूस में धूमिल और कुहका च्छन्न हो जाती ह। पानी के ऊपर चादनी झलझलाती ह चन्द्रमा की ज्योति बडी शीतल होती है अमृत होती ह, दृष्टिसेचक होती है तारों की ज्योति बडी तरल होती ह उनकी रोशनी बडी झिलमिली होती ह अमावस की रात में तारे जगमगाते लगते हैं पर चन्द्रमा के आगे टिमटिमाते ही रहते हैं बिजली कौंधती ह तो बडा ही चौंधियाता प्रकाश होता है, आखें अपने आप झँप जाती हैं, संस्कृत के कवियो ने बिजली की चमक को इसीलिए स्फुरित कहा ह। (विद्युद्दाम स्फुरितचकितैयत्र पौराङ्गनानां लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि) हिंदी के कवि भी दामिनी की दमक पर मुग्ध रहे ह। दीये की लौ प्रसिद्ध ही ह, हवा में यह लौ कापने लगती ह निवात निष्कम्प होने पर बडी स्थिर हो जाती है इसी दीपशिखा से हमारे साहित्य में देह प्रभा का उपमा बार-बार दी गयी ह। एक साथ अनेक दीयेएक माला या पंक्ति में जल उठे तो उनकी झलम लाती रोशनी बडी ही सुहावनी लगती ह पानी की सतह पर बाँस की कमाचियों पर तराया दीपपंक्तियाँ टलमल रोशनी की एक रगीन तस्वीर हैं। दीया बुझने को होता ह तो लौ टिमटिमाने लगती ह फिर लुकझुक करने लगती ह अन्त में यकायक भभक कर बुझ जाता ह या गुल हो जाती ह। दीपक हमारी परम्परा का प्रतीक ह एक प्रदीप से दूसरा प्रदीप प्रवर्तित होता ह इसलिए वह सन्तान वाही परम्परा की ज्योति बडी ह उसका बुझना अमगल ह लोग इसीलिए गुल होना या बाती बढ़ाना ही कहना मगलमय समझते हैं। मिट्टी तेल की मद्धिम और धुंधली रोशनी गरीब की झोपडी की एकमात्र आशा ह। शहरों में बिजली की रोशनी जगमगाने लगी ह और उसके तरह-तरह के [illegible] लगे हैं नियोन

सफेदों की फीलित रोशनी का उजास, मरकरी लाइट का नीलाउज्वल प्रकाश, लम्पशेड वाली अधमँकी रोशनी, जो बिजली का प्रकाश अपने तल को खर्चित नही करता, उसकी अपद्धाय रोशनी और लैम्प पोस्टा (प्रकाशस्तम्भों) की सच्छाय रोशनी धुंधिया रोशनी और तेज, तीखी, चुभने वाली, उनींदी रोशनी, नाइट लाइट की मायाभासी रोशनी और उत्सवों की सतरंगी रोशना, पथ-संकेता की लाल पीली हरी बत्ती आलोकित होती ह और कुछ ही दशा में बदल दी जाती है। कहीं कहीं यह स्वयचालित और कहीं नियन्त्रित रहती ह। रात में फोटो लेने के लिए जो फ्लशबल्ब प्रयोग में आते हैं उसकी उदभासित रोशनी सर्चलाइट (रोशनीमार) की आवतमान रोशनी से और टार्च की फेंकी हुई रोशना से अलग होती ह।

अधकार प्रकाश से गहरा ह। 'तम आसीतमसा गूढमग्रे' (ऋग्वेद नास दीय सूक्त) सृष्टि के आरम्भ में अधकार एक और बड़े अधकार से घिरा हुआ था। शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने श्रीकान्त उपन्यास में इस अधकार के श्यामल सौंदय पर अपना हृदय उडेल दिया ह। भारतीय दशना में मीमांसा दशन तो यह आग्रह किए हुए ह कि अधकार प्रकाश का अभाव नही यह भाव रूप स्वतन्त्र पदाथ ह। छाया अधकार की ही सहेली है, चाहे वह परछाईं हो, पेड की छाया हो, प्रतिबिम्ब हो किसी भी वस्तु के रोशनी हिस्से का उल्टा पहलू हो विलुप्त प्रकाश की झाइं हो रोशनी के पीछे की छायाकृति हो किसी का अक्स हो छायाचित्र हो छवि हो बादल की छाव हो, धूपछाप हो चेहरे पर कांति की कमी या स्याही हो पेडो के नीचे की फसल पर प्रकाश की कमी या छोही हो ह यह सब छाया की ही आँखमिचौनी।

अधकार का सबसे हल्का रूप ह सँझलौका (जो अधकार और प्रकाश की सधि ह), उससे कुछ गहरा ह ध्वान्त या धुध। यह धुध धूल से भी उठ सकती है कुहासे स भी छा सकती है, और धूल बठने ही कट सकती है कुहासा हटते ही छँट सकती हैं, परन्तु साँझ क बाद जो धुध बढन लगती ह वह और गहराती चली जाती ह। कानपर जसी औद्योगिक बस्तियो में यह धुध बडी धुइली और कडवी हो जाती ह, धुइली धुध या धूमिल अधकार में चेहर अस्पष्ट दीखते हैं पर आकृतियां प्रच्छादित दीखती हैं अधकार कुछ और अधिक गहरा हो जाता ह, तब हाथ को हाथ नही सूझता और तब निविड अधकार छा जाता है। यह अधकार दीठ पर लेप सा कर देता ह। घन जगलो में यह अधकार और दूना घना हो जाता ह। उस पर भी रात गिर जान पर बादल घिर आयें तो क्या कहना सूचीभद्य अधकार घेर लेता ह माना अधेरे की पत पडती गई हो सूई से चाहते तो कोई उसे छेद दे। मैन अधकार रात क पिछल पहर विभात

होने लगता है और धीरे धीरे पीछे सरकने लगता है। कभी-कभी दिन में ही बादलों के कारण, आँधी के कारण या ग्रहण लगने के कारण अँधेरा छा जाता है। वह अँधेरा प्रायः बिल्कुल अनालोक नहीं होता।

छाया अन्धकार का ही प्रकाश के साथ खिलवाड़ है कभी-कभी यह रोशनी की परिधि के बाहर जाते ही अनालोक रूप बन जाती है, कभी-कभी प्रतिच्छाया या परछाईं रूप बन जाती है, कभी कभी दो आलोकों के संयोग से बिम्ब, अनुबिम्ब, प्रतिबिम्ब बन जाती है और कभी-कभी अनुकृति बन जाती है। चित्र में छाया और आलोक का सामरस्य रखना बहुत ही आवश्यक है। अनालोक (सिलुएट) चित्र या छायाकार चित्र शुद्ध छाया के ही प्रभाव को तीव्र करने के लिए रचे या खींचे जाते हैं। फ़ोटो खींचते समय चेहरे पर छाया बचाई जाती है ताकि चेहरा बिल्कुल स्याह न उतरे। चेहरे पर से तेज रोशनी भी बचाई जाती है ताकि चेहरा एकदम घुल कर सपाट न हो जाये। आलोक आड़ा या तिरछा ही अनुकूल पड़ता है। आलोक और छाया की मिलावट बड़ी ही सूक्ष्म होती है। दोनों का तालमेल ही जिंदगी का चरम रहस्य है, जैसा कि कठोपनिषद् के ऋषि ने कहा है—

ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे।
छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः॥

● ●

सकेतों की कीलित रोशनी का उजास, मकरी लाइट का नीलोज्ज्वल प्रकाश लैम्पशेड वाली अधढँकी रोशनी जो बिजली का प्रकाश अपने तन को छायित नही करता, उसकी अच्छाय रोशनी और लैम्प पोस्टा (प्रकाशस्तम्भो) की सच्छाय रोशनी, धुँधिया रोशनी और तेज, तीखी, चुभने वाली, उनींदी रोशनी नाइट लाइट की माजाभासी रोशनी और उत्सवो की सतरगी रोशनी पथ सकेतो की लाल पीली हरी बत्ती आलोकित होती ह और कुछ ही क्षणों में बदल दी जाती ह। कही-कही यह स्वयचालित और कही नियन्त्रित रहती ह। रात में फोटो लेने के लिए जो फ्लैशबल्ब प्रयोग में आते हैं उसकी उदभासित रोशनी सचलाइट (रोशनीमार) की आवर्तमान रोशनी से और टार्च की फेंकी हुई रोशनी से अलग होती ह।

अधकार प्रकाश स गहरा ह। तम आसीत्तमसा गूढमग्रे' (ऋग्वेद नास दीय सूक्त) सृष्टि के आरम्भ में अधकार एक और बडे अधकार से घिरा हुआ था। शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने श्रीकान्त उपन्यास में इस अधकार के श्यामल सौन्दय पर अपना हृदय उडेल दिया ह। भारतीय दशना में मीमासा दशन तो यह आग्रह किए हुए ह कि अधकार प्रकाश का अभाव नही यह भाव रूप स्वतन्त्र पदाथ है। छाया अधकार की ही सहेली ह चाहे वह परछाइ हो पेड की छाया हो, प्रतिबिम्ब हो किसी भी वस्तु के रोशना हिस्से का उल्टा पहलू हो विलुप्त प्रकाश की छाइ हो रोशनी के पाछ की छायाकृति हो किसी का अक्स हो छायाचित्र हो छवि हो बादल की छाँव हो, पुपछाँप हो चेहरे पर कान्ति की कमी या स्याही हो, पडों क नीचे की फ़सल पर प्रकाश की कमी या छौहो हो ह यह सब छाया की ही आँखमिचौनी।

अधकार का सबस हल्का रूप ह सँझलोका (जा अधकार और प्रकाश की सधि ह) उसस कुछ गहरा ह ध्वान्त या धुन्ध। यह धुन्ध धूल से भी उठ सकती है कुहासे स भी छा सकती है और धूल बठा हा कट सकती है, कुहासा हटते ही छट सकती है, परन्तु सौंझ क बाद जो धुन्ध बढ़न लगती ह वह और गहराता चला जाता ह। कानपर जसा औद्योगिक बस्तियों में यह धुन्ध बडा धुएली और कडवी हो जाती ह धुईली धुन्ध या धूमिल अधकार में चेहरे अस्पष्ट दीखत हैं पर आकृतियाँ प्रच्छायित दीखती हैं अधकार कुछ और अधिक गहरा हो जाता ह, तब हाथ को हाथ नहीं सूझता और तब निबिड अधकार छा जाता ह। यह अधकार काठ पर रूप-सा कर देता ह। घन जगलों में यह अधकार और दूना घना हो जाता है। उस पर भी रात घिर जान पर बादल घिर आयें तो क्या कहना सूचीभद्य अधकार घेर लेता है मानों अधर का घन पड़ता गई हो सूई स भाद्र हा कोई उस छेद द। तीन अधकार रात क तिसर पहर विभाव

होने लगता है और धीरे धीरे पीछे सरकने लगता है। कभी-कभी दिन में ही बादलों के कारण आँधी के कारण या ग्रहण लगने के कारण अँधेरा छा जाता है। वह अँधेरा प्रायः बिल्कुल अनालोक नहीं होता।

छाया अंधकार का ही प्रकाश के साथ खिलवाड़ है कभी-कभी यह रोशनी की परिधि के बाहर जाते ही अनालोक रूप बन जाती है, कभी-कभी प्रतिच्छाया या परछाईं रूप बन जाती है कभी कभी दो आलोकों के संयोग से बिम्ब, अनुबिम्ब, प्रतिबिम्ब बन जाती है और कभी-कभी अनुकृति बन जाती है। चित्र में छाया और आलोक का सामरस्य रखना बहुत ही आवश्यक है। अनालोक (सिलुएट) चित्र या छायाकार चित्र शुद्ध छाया के ही प्रभाव को तीव्र करने के लिए रचे या खींचे जाते हैं। फोटो खींचते समय चेहरे पर छाया बचाई जाती है, ताकि चेहरा बिल्कुल स्याह न उतरे। चेहरे पर से तेज रोशनी भी बचाई जाती है ताकि चेहरा एकदम धुल कर सपाट न हो जाये। आलोक आड़ा या तिरछा ही अनुकूल पड़ता है। आलोक और छाया की सिलवट बड़ी ही सूक्ष्म होती है। दोनों का तालमेल ही जिन्दगी का चरम रहस्य है जैसा कि कठोपनिषद् के ऋषि ने कहा है–

ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे।
छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः॥

● ●

४

रग-विरग

हमारी जलवायु में रग खिलते ह इद्रधनुष के सात रग ही नही हर रग की अलग-अलग झाइयाँ और छटायें ये सब अपनी रगत रखते है आँख और बाल के रग अलग ह फूलों-फलों क अलग कपडों के अलग, चित्रों के अलग ।

आँख भूरी (पिगल) कजरी रतनारी, बिल्लौरी, तोताचश्मी चमकीली, काली, कजरारी और नीली होती हैं कजरारी और रतनारी आँखो का शोभा हमारे यहा विशेष ह क्रूर हिंस्र पशुओं की आखें टहकीली होती ह रोगी आँखें पीली भी होती ह, केश काले भूरे कापिश, पिंगल सफेद गगाजमुनी, धवल सुनहले, लाल प्रकृति और अवस्थाभेद से होते ह, सौन्दर्य क प्रतिमान कृष्णकेश ही ह । देह का रग गोरा (गौर) चपई कच्चे सोने सा गेहुआ, ताम्रई, सावला, पक्का पानी वाला, अजनास (अजनी) और पीताभ (पियराह) होता ह ।

वस्तुजगत म रगों के विशेषण लें । रग चोखा या चटक हो सकता ह वह चहा हो सकता ह शोख हो सकता ह हलका हो सकता ह फीका हो सकता ह, मटियाला होने पर अगरई या भकभूमरा हो सकता ह आभा या झाई मात्र हो सकता ह रगों के लिए—आह (आभ),—आर,—ई ये प्रत्यय अधिकतर आते हैं पहले सफेद या श्वेत को ही लें धार उजला, रुपहला शुभ्र, दूधिया, नार बता इनमें कुछ हलका पीलापन मिला तो मोतिया, माखनी कपूरी हल्का भूरा पन मिला तो बादामी, हलका गुलाबी मिला तो प्याजी रग बन जाता ह हल्का स्याह मिला तो सिलेटी और खजनी बन जाता ह ।

पीले रग में हम बसती से शुरू करते ह उसमें कुछ गहरा हुआ तो सरसई (सरसो फूल सा) और गहरा कनेरी (कनइली), चटकीला हुआ तो रामरजी और

गहरा हुआ तो हल्दी, पीले रग की छायामात्र हो तो पियराह् हल्व पीले में चमक हो तो चपई, और चमक हो और रग गहरा हो तो सुदन या सुनहला रग वनता ह, लाल को झलक भर हो तो सेविया रग तयार होता ह और कनेरी म हरे का झल्क रहती ह।

पोले और लाल के सयोग से नारगी के कई अवतार होते ह, लाल की तरफ गेरुई, उस से अधिक गहरा जोगिया, उससे भी अधिक मल्यागिरी, पीले का तरफ केसरिया, डडियान (हरसिंगार के फूलों के डठल के रग का) कॅसुआ (किंशुकी), कुसुभी (कसूमी) और पीक रग तयार होते हैं, बहुत हलका नारगी कपासी और बहुत गहरा कसूमी हो जाता ह, नारगी इन दोना छारो के बीच में ह।

लाल में फीक गुलाबी सबसे हल्का ह, फीक प्याजी और प्याजी को सफेद के समीप अधिक मानना चाहिए, उसके बाद गुलाबी, फिर चटक गुलाबी, उससे कुछ गहरा हुआ तो चोला, बिलकुल सुर्ख हुआ तो रक्तार, रक्त लाल और कदई, सुरखाबी, हलकी सी नारगी आभा मिली तो सिंदूरी और गहरी मिली तो इगुरी, गहरा सुर्ख रग हिरमिची कहलाता ह सबमे गहरा लाल होता है मजीठी। शुद्ध लाल रग सुरग या सोहा कहा जाता ह, कही कही यही पक्का भी कहा जाता ह लाल रग में करथई छाया से कई रग बनते ह कोकटी, तामई, कत्थई, कुछ हल्का स्याहपन लिये हो तो किसमिसी और गहरा स्याहपन लिये हो तो उन्नाबी और लाल कव झाई मात्र हो तो कक्रेजी, लाल रग बडा मांगलिक ह। शादी ब्याह में इस की बडी चलन ह मरुस्थल में यह बहुत प्रिय ह। विंध्याचल में इस का मजीठ रूप अधिक लोकप्रिय ह।

हरा रग बडा सुहावना माना जाता ह विशेष करके वर्षा ऋतु में, सब से हलका हरा अँगूरी, उससे अधिक गहरा धानी, उससे अधिक चटकीला सुगापखी, और गहरा होने पर काही, कुछ स्याहपन मिलने पर मूँगिया, अधिक स्याहपन मिलने पर सिवारी, हल्का नीलापन मिले तो फीरोजी, गहरा मिले तो जगाला या तूतिया।

नील रग का सबसे हल्का रूप ह समुदरी उससे अधिक खुला आसमानी हल्की लाल झांई लिये जामुनी, बगनी और अलसीफूल (तीसाफूल), स्याह नीला सुरमई, गहरा स्याह नीला नीलांजनी, नीलकठी कहा जाता ह काले या स्याह रग में धूम (धुईला) धूमिल, धुआह, सिलेटी, सुरमई, स्याह काला अजनी, कजरारा, कजला, (हल्की छाया हो तो कजराह) सोकन (सफेदी लिये हो) मल के कारण काला पडे तो चीकट, करइल, और चमकीला हल्का काला हो तो लोहई (लौह) और गहरा हो तो कौआपखी (काकपक्षी)।

संस्कृत में भी कुछ नाम हैं, भस्म के रंग का कर्बुर, सिनेटी, कपोतकंठी, मेचक, धूसर, धूम्र, अरुण, शोणित, पर वे साहित्य के लिए हैं।

रंगों के व्यापार भी अलग अलग हैं, कुछ रंग शरीर पर फबने या खुलते हैं, कुछ रंग बेमेल हो जाते हैं तो खलने लगते हैं और चुभते हैं, रंग हथेलियों में रचे जाते हैं, कपड़ों में रंग चिताये जाते हैं, चित्रकारी में रंग खोले जाते हैं, उभारे जाते हैं, दबाये जाते हैं, एक रंग की जमीन पर दूसरा रंग चढ़ाया जाता है, कुछ रंगों को धोया जाता है तो कुछ को पानी चढ़ाया जाता है, कुछ रंग चढ़ते नहीं तो बड़े रूखे और मटमैले लगते हैं और कभी तेज हो गये तो अफसोस होकर काटने लगते हैं। दो दो तीन तीन रंगों के मेल और घाल से धूपछाँह की कई छायाएँ उतरती हैं, दुरंगी, तिरंगी, चौरंगी, पचरंगी, और सतरंगी (इंद्रधनुषी) छवियाँ तैयार होती हैं, रंगाई की प्रक्रिया बड़ी सावधानी की प्रक्रिया है, डुबवा रंगाई तो समूचा डुबाने की सीधी सादी प्रक्रिया है, पर बंधनी रंगाई में जगह जगह बंद, गंडा या गाँठ बाँध दिये जाते हैं और चुनौटिया या चुनरी रंगाई एक साथ तीन तीन चार चार रंग लेता है। औटा कर पक्का रंग बनाने की प्रक्रिया को लाग या पाह देना कहते हैं, रंग को बराबर मिलाने को पछना कहते हैं और रंग उतारने को मचान्ना, रंगों में बुक्का (अभ्रकचूर्ण) मिला कर अतिरिक्त चमक लाया जाता है और सोने या चाँदी का पानी देकर सुनहली या रुपहली चमक दी जाती है।

होली का त्योहार ही रंगों का त्योहार है, रंगों का खेल हमारा राष्ट्रीय पर्व है और तबियत की मस्ती, इसीलिए हमारी भाषा में रंगीनी है और चेहरे की खुशी चेहरे की रंगत।

●●

५

आवाज़े

भारतीय न्यायशास्त्र में शब्द को नित्य कहा गया है और उसे आकाश का गुण बतलाया गया है, इसलिए शब्द का महत्व पूरे भारतीय चिन्तन में मात्र शाब्दिक नहीं है। शब्द ही परब्रह्म है—

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥

(भर्तृहरि वाक्यपदीय)

वाक की चार अवस्थाएँ हैं, परा, पश्यन्ती, मध्यमा और बैखरी। बैखरी वाक ही श्रवण-गोचर होती है। ध्वनि के उच्चारण में मुखविवर में बाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार के प्रयत्न होते हैं। प्राण की मात्रा की कमी-बेशी के आधार पर ध्वनियाँ अल्पप्राण और महाप्राण होती हैं, स्वर-तन्त्री के स्पन्दन के बीच गुजरने के कारण ध्वनि घोष कही जाती है और प्राण वायु के विभिन्न प्रकार के संस्कारों के कारण स्पर्श, ऊष्म और अन्तःस्थ कही जाती है। स्वरों के उच्चारण में स्वरतन्त्री के स्पन्दन की तीव्रता से ऊँचा सुर उठता है, स्वर के सहारे से ही व्यंजन ध्वनित होते हैं और स्वर के उच्चारण में सम्बद्ध मांस-पेशियों के तनाव से बलाघात उत्पन्न होता है, स्वर स्वतन्त्र रूप से और उसके सहारे व्यंजन अक्षर बनता है। भाषा में सार्थक ध्वनि वर्ण हो जाती है, मानवेतर भाषा में ध्वनि आवाज बनी रहती है। हर हालत में अभिव्यक्ति का, परस्पर सम्प्रेषण का साधन वर्णराशि है या आवाज है। यह आवाज बाहर ही नहीं होती, भीतर भी होती है, भीतर वाली आवाज ही अनहद नाद है।

प्राणि जगत् से ही आवाजों की गूँज लेकर संगीत के सात स्वरों की कल्पना

हुई। हाथी की चिंघाड़, शेर की दहाड़, घोड़े का हिन हिनाहट, गधे की रेंक, *गाय-बैल की हुंकार और रंभाहट, बकरी की मिमियाहट, कोयल की कूक*, मोर की केका, छोटी चिड़िया की चहचह, पपीहे की पी कहां, सारस के फेंकार, कौए का कांव कांव, टिटिहरी का नाद, उल्लू की घुत्कार या हुए हुए, चकई के विराव, कुररी के विलाप, सियार के फेंकार या हुआ हुआ, कुत्ते की भूक, बिल्ली की *म्याऊँ, मेंढक की टर्र-टर्र, झिल्ली की झंकार, सांप की सुसकार, मच्छरों की भन* भन, भौंरों की गुंजार, ये आवाजें बहुत ही परिचित हैं। हिंदुस्तान का किसान पक्षियों की बोली में तरह-तरह के संकेत ग्रहण करता है। ठाकुर चिरइया (श्यामा) बड़े तड़के ठाकुरजी-ठाकुरजी कहती है कुआर कातिक में प्रव्रजित पक्षियों का एक झुंड *टिकरी बोआ बोता कहता है ग्वालिन या महरी चिड़िया दही-दही* कहती है, तेलिया मैना चीस-चीस कहता है और औरतें समझती हैं, वह रही है उठ बहू पौस, उठ बहू पौस, एक जाति का उल्लू, घुग्घू मुआ मुआ कहता है काफल पाको कहती है काफल पाको (काफल पक गया)। प्राणियों में रति की *प्रकार सबसे अधिक आकर्षक होती है। मानवीय सुरत की सीत्कार को रणित* कहा गया है। बादलों के गर्जन के भी कई स्तर हैं रसित, स्तनित और गर्जित। वर्षा का झरझर, आग की तिरतिर, नदी का कलकल, झरने का निनाद, आंधी की तड़तड़ाहट, धान की सुरसुराहट, पत्तियों का मर्मर और खड़खड़, समुद्र की दहाड़ और हवा का सरसर ध्वनि प्रसिद्ध है। यहाँ तक कि जहाँ कोई आवाज न हो, वहाँ भी सांय-सांय या झांय झांय सुनाई पड़ती है।

सुर की तीव्रता के कारण आवाज सुरीली और सुर में वैषम्य के कारण बेसुरी कही जाती है। मानवी भाषा में पूरे उक्ति खंड में सुर के चढ़ाव उतार के ढंग को काकु कहते हैं और काकु का संस्कार भाषा के अर्जन में पहला संस्कार होता है और सबसे स्थायी टिकाऊ होता है। इसीलिए दूसरी भाषा के उच्चारण में ध्वनि आ भी जाय तो उस भाषा की काकु अपनी पकड़ में नहीं होती पहला काकु संस्कार ही प्रबल रहता है। बिहारी हिन्दी में पेपाट्ट छिप नहीं पाता उसी तरह पश्चिमी हिंदी का अतिरिक्त बलाघात भी दुराव नहीं दुरता। उच्चारण की भिन्नता के कारण जब आदमी सरपट बोलता चला जाता है तो ध्वनियाँ तीव्रता के कारण द्रुत और अस्पष्ट हो जाती हैं। एक-एक अक्षर का कृत्रिम ढंग से अलग-अलग करके हकलाहटों ढंग से उच्चारण करने से ध्वनि दीर्घायित और विलम्बित हो जाती है [illegible] उच्चारण करने से प्रलम्बित और ओठ के भीतर बुदबुदाने से अस्थिर कहा जाता है। [illegible] गरारा आ जाने से [illegible] आ जाती है [illegible] और [illegible] होता है। बलपूर्वक ऊपर आवाज में घुरघुराहट का प्रतीति

होनो ह और सोते समय अध-चेतन आवाज में बडबडाहट का आभास होता ह। मानसिक दुबलता के कारण रुक रुक कर उच्चारण करना हकलाना ह, जोर स आर्त्तस्वर में पुकारना चीखना ह, आवेश में ऊँचे स्वर में बोलना चिल्लाना है, गदगद् कठ से बोलना गलगलाना हैं याचना के स्वर म कहना गिडगिडाना ह, दद की आवाज कराहना ह, असन्तोष में मुँह क भोतर दवी आवाज में अपना आक्रोश प्रकट करना भुनभुनाना या मरमराना ह ।

प्राणि जगत में अग भो मुखर हो उठते ह दाँत बजता ह, हड्डी चिटकती और भडभडाती ह कान पटपटाते हैं उँगलिया चटकती या पुटकती हैं, हाथा से ताली बजती है उँगलिया स चुटकी, पद चाप ता प्रसिद्ध हा ह पेट गुडगुडाता ह हृदय धडकता ह नाक घरघर बजती ह कान सनसनाता ह, । अचेतन जगत विशेष करके यान्त्रिक जगत में ता आवाजें हो आवाजें ह। रलगाडी का सोटी, उसक पहिया को घडघड, मोटर का भोपू, साइकिल को घटी, नाव की छपछप, चारपाई का चरमराहट, जूते का मचमच, टाप का खमखम, बमूले को ठुकठुक, घडी की टिकटिक घटे को घनघन, छाटे पहियों की किरकिर घटी का टुनटुन, इजन को गडगडाहट, माया का भायें भायें, हथगोले या पटाखे का धडाका, बम का विस्फोट, लाठी की तडतड, धनुष की टकार, तलवार को छपछप, कोडे का सडाक-सडाक, किवाडा को भडभडाहट, खौलते द्रव की कडकड, उठते भाप की सनसनाहट, आग में लकडो का चडचडाहट और राँधे जाते अनाज को खुदबुद, आने और कितनी आवाजें हैं ।

मानुषी वाक क भो कम रूपातर नहीं है, नवजात बच्चे की किलकारी या काकली, शिशु का तुतलाहट या तुतली, वय सन्धि का कषाय और फटा स्वर, नारी का कोमल और महीन स्वर रोने की भर्राई आवाज, हँसी की खिल-खिलाहट, पुरुष का मेघ गम्भीर स्वर बुढापे की कापती या फूटी आवाज, सगीत का सधा कठ, दया के लिए रिरियाया स्वर क्रोध के लिए चढा स्वर, विषाद में उतरा स्वर करुणा में विगलित और रुँधा स्वर, गर्व में मोटी आवाज, अभिनय में बनाई आवाज चमत्कारी की उखडी आवाज और प्रेम में भावभीना स्वर। मनुष्य वाणी को अनेक प्रकार स सस्कार दता ह और उसकी मनोदशा की पह चान चाहे उसकी वाणी न कराये, पर उसके सस्कार को पहचान जरूर करा दती ह । मानवी वाक इसी माने में अन्य प्राणियों की वाक से पृथक ह कि वह व्याकृत ह, सघटित ह—अव्याकृत और असघटित नहो।

६

हवा का झोका

एयरकंडीशन सभ्यता का विस्तार अभी हिन्दुस्तान में ज्यादा नहीं हो पाया है। इसलिए हवा का संसार अभी भी कुछ अपरंगता है। यों तो उनचास पवन बाहर और पाँच प्राण अपान उदान समान व्यान वायु शरीर के भीतर संचार करने वाले कहे गये हैं पर प्रतिदिन में यह मौसम और दिशा के आधार पर ही वायु के नाम चलते हैं।

यों में सब से धीमा है भोरहरिया सुबह की मन्द समीरण। उससे और की स्थिति तो उमस और घमस की होती है जड़-जगत में जब हवा गुम हो जाती है तो एक हल्की साँस भी सुगन्ध मालूम होती है। उसमें चंचल पीपल का पत्ता डोलता है। उससे जरा ऊपर वेग हुआ तो बतास और हवा उठी तो बयार और तेज हुई तो पवन धूलि उड़ाती चली तो बगोला या बगूला फिर आँधी। धूलि छा गयी तो अंधड़ और बवंडर (या बौंडर) और यदि धूलि के बाद कुछ मेंह भी ला दे तो अरबाऊ कहलाती है। गाँवों में इसी या चक्रवात (साइक्लोन) या तूफान को बुढ़िया आँधी भी कहते हैं। हलका चक्रवात घमरी या चकरी है।

जेठ-बैसाख में लू चलती है उसकी झोंक तेज हो गयी तो झोंक झाँय या झाँके लू हो जाती है। उसमें जोर का तपन आ गयी तो वह तपा या लूक कहलाती है। जेठ में रेतीली आँधी आती है तो भूतरा या भभूका कही जाती है। सावन भादों में बड़े जोर से चलने वाली हवा बहरा, फागुन चैत में फगुनहट कुआर और पूस में तेजी से दिशा बदलने वाली हवा चौवाई और हिरनबाइ कही जाती है। बरसाती हवा जो सावन भादों में तेज झकोरों के कारण झपटी कही जाती है। तपन के बाद शाम की ठंडी हवा सिरवाई (शीत वायु) कही जाती है।

पूरब से चलने वाली हवा पुरवाई, पुरवा, पुरवया कही जाती ह। सूखी पुरवया राड और बरसाने वाली सुहागिल या सुहागिन कही जाती ह। भादो में घम्घा लगाने वाली ठडी पुरवैया लहकारती ह और शुभ्र कुआर में झब्बरा पुरवया हहकारती ह और तब वर्षा की फुहार से सारा घर (खुला रहने पर) भीग जाता ह। पच्छिम से आने वाली बयार पछुआ या पछइया कही जाती ह। कभी कभी तो यह पतसोखा बन कर प्रकोप करती ह तो डाठ के डाँठ झुरा जाते हैं। अगहनी के पानी से तर खेत भी फरेरे या अफार हो जाते ह। फसल अधपकी हो और पछुआ चले तो झोला कही जाती ह, यह दोनो को मार देती ह। जाडे में पछुआ जब धीरे धीरे चलती ह, रमकती ह तो निश्चय ही अच्छी वर्षा लगती ह। दक्खिन स चलने वाली बयार दखिना या दखिनया और उत्तर से बहने वाली उत्तरा या उत्तरया, दक्खिन पच्छिम (नऋतु) कोने स चलने वाली तेज बयार दखिन पछाहीं या हडेहरा और हडहोडा कही जाती ह। यह गर्मी में लपट लिये झकझोरती चलती ह। इसको मेरती भी कहा जाता ह, इसमें जुलाई तक के काम बन्द हो जाते हैं। दक्खिन-पूव (आग्नेय) कोण से चलने वाली बयार दखिन पुरवाई और साथ-साथ सूखा के लिए कारण होने के कारण जमराजी कही जाती ह। उत्तर-पच्छिम (वायव्य) कोण स चलने वाली बयार सूअरा या सुअरी या घडौसा (षडयत्रक) कहा जाती ह। उत्तर पूव (ईशान कोण) से चलने वाली हवा ईसान कही जाती ह।

ताल या नदी की तरफ स आने वाली वायु सस्कृत में वीचीवात (वीचीवात शीकरक्षोदशीत —भवभूति), बर्फीली गिरि शृखलाओ स आने वाली हवा हिमवात, ऐसी ही एक हवा हरिद्वार की तरफ ढाढू कही जाती ह। समुन्दरी हवा का नमकीन स्पर्श प्रसिद्ध ही ह। हर हवा की अपनी अलग तासीर ह, पुरवा गाँठ-गाठ के सोये हुए दद को जगा देती ह पछुआ ऊपर से प्रखर पर भीतर से ठडी होती ह दखिनया हुलसाती ह।

हवा जहाँ से आती ह, वहाँ से ताप और शीत के असर ले आती ह। फूलों की गध ढो ले आती है, परिमलवाही बनती है बफ पानी और धूलि के कण से लदी चलती ह और यह सब बगराती, बिखेरती, नये गध-स्पश बटोरती, लुटाती चली जाती ह।

हवा के चलने की भी जाने कितनी विधाएँ ह डोलती ह चलती ह, बहती ह, सुरसुराती ह बाँसों में मरमराती हैं, बजती ह सनसनाती ह उठती ह गिरती ह, थम्हती हैं, फिर एकदम से फुफकार उठती ह हहकारती ह, हू हू करती ह। उसके सस्पश भी नानाविध हैं। कभी वह सुखाती ह और कभी भिगोती ह और कभी सिहराती हैं कँपाती हैं, हाड तक हिला देती है सालती ह चुभती हैं,

७

काल-चक्र

—'पुन सवेरा एक बार फेरा है जी का'

काल मृत्यु है, पर काल चक्र जीवन है। हमारे चिन्तन में ठहरे हुए काल की इसीलिए बड़ी उपेक्षा है पर गतिशील काल-चक्र की बड़ी महिमा है। संवत्सर को यज्ञरूप कहा गया है जीवन को संवत्सर के रूप में देखा गया है वसन्त को यौवन के रूप में और शिशिर को बुढ़ापे के रूप में देखा गया है। हमारा ऐतिहासिक बोध जितना ही सपाट है प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक ये विभाजन जितने ही कुंठित हैं उतने ही काल चक्र के सूक्ष्म विभाजन धारदार।

भारतीय काल गणना ब्रह्मा के परार्द्ध से शुरू होती है, क्योंकि सृष्टि का चक्र ब्रह्मा का अहोरात्र माना जाता है फिर कल्प आता है, १४ मन्वन्तर का एक कल्प होता है। एक मन्वन्तर ७१ चौकड़ी (युग चतुष्टयी) का होता है और उसमें इन्द्र, मनु, सप्तर्षि ये सभी क्रम से बदलते रहते हैं। एक चौकड़ी का अर्थ है पूरा कृतयुग (सत्ययुग, सतयुग), त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग का चक्कर, हर युग के चार चरण होते हैं। वर्ष-गणना भी ६० वर्षों के चक्कर के आधार पर होती है प्रत्येक संवत्सर के प्रवेश का दिन होता है। वैसे सन् संवत् भी चलते हैं, विक्रम संवत्, शक या शाके (जिसे राष्ट्रीय संवत् भी माना गया है), ईसवी सन् हिजरी और फसली प्रचलित हैं हिन्दुओं के धार्मिक कार्यों में विक्रम और शक का ही व्यवहार है। मास-गणना भी चान्द्रमास और सौरमास दो आधारों पर होती है, चन्द्रमास कृष्ण पक्ष (बदि) की प्रतिपदा (पड़िवा) से शुरू होती है और शुक्लपक्ष (सुदि<शुक्ल दिन, बदि<बहुल दिन) की पूर्णिमा (पूनो) तक गिना जाता है पहले यह मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर

कृष्ण पक्ष की अमावस्या (अमावस मावस) तक गिना जाता था। इसीलिए पूर्णिमा को १५वीं तिथि और अमावस्या को ३०वीं तिथि कहा जाता है। चन्द्रमा के ही संचार के अनुसार तिथि-गणना होती है। एक दिन एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक होता है, जो तिथि सूर्योदय के समय रहती है, उसे उदया तिथि कहते हैं जो तिथि एक सूर्योदय के बाद शुरू होकर दूसरे सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो जाती है उसे क्षय तिथि कहते हैं और जो तिथि सन्ध्याकाल में रहती है उसे प्रदोषा या प्रदोषव्यापिनी जो निशीथकाल में रहती है उसे निशीथ व्यापिनी कहा जाता है। तिथि का महत्त्व व्रत उपवास के लिए है। व्रत की महत्त्वपूर्ण तिथियाँ एकादशी, त्रयोदशी (प्रदोषव्रत, तेरस) चतुर्थी (चौथ), तृतीया (तीज), पंचमी (पचई) षष्ठी (छठ) और पूर्णिमा (पूनो) है। कुछ एकादशियाँ प्रसिद्ध हैं देवोत्थान (डिठवन कातिक सुदि की एकादशी), भीमसेनी (जेठ सुदि की) हरिशयनी (असाढ़ सुदि की), कुछ चौथ प्रसिद्ध है गणेशचतुर्थी (भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी) कुछ पंचमी भी जैसे वसन्त पंचमी, और नागपंचमी (सावन सुदि ५) पूर्णिमा कातिक पूस और बैसाख की, अमावस माघ की स्नान के पर्व के रूप में प्रसिद्ध है।

सौरमास सूर्य के राशि-संक्रमण के आधार पर है। मेषसंक्रान्ति से वर्ष शुरू होता है, उस दिन सतुआनि का पर्व पूरब में होता है वर्षारम्भ पंजाब और और बंगाल में मनाया जाता है। मकर की संक्रान्ति से उत्तरायण शुरू होता है। उस दिन पोंगल और खिचड़ी के पर्व होते हैं। सौरमास के साथ मेल के लिए ३५ चान्द्रमासों के बाद लगभग एक अधिकमास (मलमास लौंद आता है उस वर्ष को अधिकवर्ष या लौंद का साल कहते हैं)।

दिन चौबीस घंटा या ६० घड़ियों का होता है। ३ घंटे या साढ़े सात घड़ियों का (साधारण व्यवहार में ८ घड़ी का) एक प्रहर—पहर होता है उस समय गजर बजता था इस लिए उतने समय को गजर भी कहते हैं घंटे का हिसाब अंग्रेजी है अर्थात् १२ बजे रात से पर घड़ी का सूर्योदय से है। गाँवों में समय का विभाजन बड़ा बारीक है। सूर्योदय के लगभग एक डेढ़ घंटे पहले से आकाश की गतिविधि देख कर समय का विभाजन किया गया है सबसे पहले सुकवा (शुक्र तारा) उगता है, वह समय सुकवाउगानी कहा जाता है, उसके बाद भिनसार हो जाता है अभी मुँह-अँधेरा बना रहता है चिड़ियाँ बोलने लगती हैं फिर पूरब की ओर कुछ उजास दिखने लगती है और तब भोर हो जाती है प्रभात या उजेला हो जाता है, इसके बाद लाली लगती है (लाली की आभा दीखती है) सबेरा हुआ, प्रत्यूषवेला आ गयी, तब पौ फटती है, सुबह हो जाती है सूर्योदय हो जाता है सबेरे से पहले तड़के सुबह कहा जाता है और सूर्योदय के

पूव की वेला को ब्रह्मवेला या उष काल कहा जाता ह । सूर्योदय (दिन उगने) के बाद जब सूय ऊपर चढ जाता ह तो दिनचढ़ानी वेला कहते हैं और एक पहर बीतने पर दुपहरी लग जाती ह। बारह बजते बजते या जब सूय ठीक ऊपर आ जाता ह तो दुपहरी खडी हो जाती है मध्याह्न पूर्वाह्न और अपराह्न ये शब्द अब ए० एम० और पी० एम० के कारण बहुत प्रचलित होने लगे हैं पर ६ बजे अपराह्न कहना उपहासास्पद लगता ह । ६ बजे शाम ही कहना हिंदी में उचित मालूम होता ह । दुपहरी ढलते ही तिजहरी (तिपहरी, तिपहरी) शुरू हो जाती ह । दिन का चौथा पहर दिनढलानी वेला ह और साँझ या सझा या सन्ध्या की भी प्रक्रिया कम लम्बी नही है। गोधूलि लगती ह, फिर साँझ की गेरुई लाली छा जाती ह, बेला डूबने का समय आ जाता ह बेला झुकमुक करते-करते डूब जाती ह सूय छिप जाता ह और झुटपुटा होने लगता ह, धीरे धीरे ध्वान्त या धुन्ध फलने लगती ह और दीयाबाती की जून आ जाती ह इसके बाद एकाध तारा दीखता ह और एक घडी रात हो जाती ह। रात क्रमश गहराती चली जाती ह, दूसरे शब्दों में रात भीगने लगती ह । पहले पहर के बाद अमूमन गाँवों में सोता पड जाता है चूतापडानी जून के बाद दीये गुल होने लगते है रात साँयसाय करने लगती है एकाध लोग चौपाल पर अलाव तापने जमे रहते ह या प्रधानजी के दरवाजे पर लालटेन भुकभुकाती रहती ह । आधी रात या निशीथ बेला का बोध तन्त्रमन्त्र और चारा जगाने वालों को ही अधिक होता ह । हाँ, चन्द्रोदय का समय व्रत-उपवास वालों के लिए महत्त्वपूण ह समुद्र के किनारे के मछुओं के लिए भी । पर सामान्य जीवन में लगभग ९ बजे रात के बाद रात गिर जाती ह या लोगों के व्यापार समाप्त हो जाते हैं ।

घटे का विभाजन मिनट सकेंड में और घडी या दण्ड का पल विपल में वैसे सूक्ष्म समय विभाजन का मूत्त सज्ञाएँ भी कम नही हैं। पलक भाजते, चुटकी बजाते लहमे भर में, क्षण भर में ये सभी निमिष, पल के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होते ह । चार घडी का मुहूत्त चौघडिया कहा जाता ह । अच्छा दिन सुदिन कहा जाता ह विवाह आदि उत्सव के दिन शुभ दिन या सुदिन ही कहे जाते ह मृत्यु या निधन की तिथि पुण्यतिथि कही जाती ह । अच्छा मुहूत्त हो तो साइत का दिन और यदि यात्रा ठीक न उतरी या काय सफल न हुआ तो वह दिन कुसाइत हो जाता ह ।

ऋतुचक्र का महत्त्व भी कम नहीं ह। बडे वष का पहला चौमासा गर्मी दूसरा चौमासा वर्षा या पावस कहा जाता ह, उसी को कभी-कभी चौमासा या चातुर्मास भी कहा जाता ह, अंतिम चौमासा जाडा या शीतकाल कहा जाता ह, पर वसन्त, ग्रीष्म वर्षा शरद, हेमन्त और शिशिर ये छह ऋतुनाम भी प्रच

लित हैं। खेती के काम में इससे भी अधिक प्रचलित हैं सूर्यनक्षत्रों के नाम। जेठ में सूर्य का रोहिणी नक्षत्र में संचार होता है। तभी से खेती का काम शुरू हो जाता है। रोहिणी की वर्षा का महत्त्व आम और ज्वार दोनों के लिए विशेष है। इसके बाद मृग में सूर्य का तपना मनाया जाता है पर आर्द्रा में वर्षा अत्यावश्यक मानी जाती है। एक नक्षत्र की अवधि १३ या १४ दिन होती है। आर्द्रा के बाद पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वा, उत्तरा हस्त चित्रा और स्वाती के सभी कृषि के विभिन्न कार्यों के लिए महत्त्व रखते हैं और इसलिए ये नाम कृषि-जीवन में कुछ विकार के साथ प्रचलित हैं जैसे आर्द्रा पुनरबसु पुख असलेखा मघा, पुरवा और हथिया। महीनों में (धानी फसल कटने के कारण) जेठ असाढ़ी (रबी की तैयारी और बाग के लिए) भदवारी (वर्षा के लिए) कुआरी और कतिकी (नयी फसल की तैयारी के लिए) प्रसिद्ध हैं। जाड़े और तपन के सापेक्ष बोध भी प्रचुर हैं। फागुन का जाड़ा गुलाबी जाड़ा है गर्मी सुहावनी है चैत में चिनचिनाहट शुरू होती है, बैसाख में तपन बढ़ जाती है और लपट पड़ने लगती है जेठ में सूर्य धूप के हो जाते हैं सब ताप चरम सीमा को पहुँच जाता है रातें भी तपने लगती हैं और आसाढ़ से बारिश के बाद उमस होने लगती है। मेह पड़ने के पहले बताव के शुरू होने पर यह उमस दुस्सह हो जाती है। कुआर में घाम बड़ा तीखा और चिपचिपा हो जाता है कातिक से रात सिहराने लगती है, पूस और माघ में चिल्ला जाड़ा पड़ता है और ठिठुरन होने लगती है पानी जमता सा लगता है और नदी का जल भी काटता-सा लगता है। हवा छेदने लगती है। रातें बड़ी हो जाती हैं। दिन रात बराबर वसन्त और शरद सम्पात के दिन होते हैं। रात का उत्कर्ष दक्षिणायन के अन्त तक और दिन का उत्तरायण के अन्त तक होता है।

काल चक्र निरन्तर घूम रहा है और हमारा मनुष्य इस काल चक्र की यात्रा से अपने को समंजस रख के चल रहा है। वह इस चक्र को निरन्तर जी रहा है वह अँधेरी रात से भय नहीं खाता क्योंकि उसके भीतर एक विश्वास है— पुन सवेरा एक बार फेरा है जी का (निराला की अन्तिम काव्य-पंक्ति)।

८

आम में बौर आ गये

फागुन चढ़ा नहीं और इस साल फगुनहट (होली) हहकारने लगी । फागुन के साथ आम का बड़ा पुराना रिश्ता है । वैसे तो फागुन में ही सेमल में ढेंढी (फूल) लगती है, पलाश (ढिउला) जंगल में आग दहका देता है, महुए में कूचे लगते हैं, मौलश्री में भुमके और पीपल में ठुस्से और नीम पतहरने (पत्ते झड़ने) लगता है, कॅंवल-दह विहँसने लगता है, पान पकने लगता है, परन्तु आम वसन्त का अपना सगा है क्योंकि उसके बौर की पराग धूलि से वसन्त की कोकिला का कलकंठ कषायित होकर और मादक हो जाता है, क्योंकि आम की बौर आम के नये पल्लव और आम के नये कल्ले और अँखुए ये सभी कामदेव के बाण बन जाते हैं । आम के विकास की अवस्थाएँ यौवन और सौन्दर्य के विकास के प्रतीक के रूप में हमारी काव्य परम्परा में प्रेमादृत हैं ।

तो इस साल आम में फिर बौर गहगहा गये । बड़ा बेहया है—फसलें सूखीं, पर आम के इक्के-दुक्के पेड़ भले ही अमोले (नये पौधे) और कलम गड़ सूख गये या कुछ पुराने पेड़ भी नमी की कमी से ठकठ गये और कुछ पाले से झुलस भी गये, लेकिन अधिकांश फिर आम पर आ गये—और बौरसने लगे । आम वसंत का मीत जो है । जिन पेड़ों के फलने की बारी इस साल नहीं है उनमें नयी कोपल (किसलय) निकलने लगीं पुराने पाले पण तुड़-तुड़ कर सारी अमियारी (आमों की वाटिका) में सड़न लगे ये किसलय ही पल्लव बनेंगे और तब बनेंगे पत्ते। इन से पेड़ झपस जायेगा । जहाँ बौर है वहाँ पत्ते ढँक गये हैं । नया पेड़ पहली बार बौरा होगा तो उसकी मोजर (बौर) मींज दी जायगी, नहीं तो पेड़ की बढ़ती रुक जायेगी । वैसे बौरों पर पच्चीस आफ़तें हैं पुरवा ने झकझोरा तो ये खसिया

कर गिर जायँगे, कहीं आँधी के साथ ओले गिरे, तब तो सत्यानाश ही हो जायेगा। बचे तो सरमई (सरसों के बराबर फल) के गुच्छों से फुलुई (सिरा) तक टहनी टहनी लद जायगी और डालें भार से लचने लगेंगी। अडार (टूटने वाली) डालें तो टूट ही जायँगी, नयी डालों में इसीलिए खम्भा भी लगाना पड़ता है। सरसई सब नहीं बचता। कुछ झर जाती है कुछ कुम्हला जाती है। तब टिकोरे लगते हैं, तोते के चोंच और लड़कों की ढेलेबाजी शुरू हो जाती है। टिकोरों की कच्ची गंध कच्ची उम्र की लड़कियों को बहुत भाता है और चोरी चोरी उन्हें कुतरने में बड़ा मजा आता है। करही (अधपकी) इमली और टिकोरों से न जाने क्यों इतनी प्रीति इन किशोरावस्था में होती है। इनका अम्लोन स्वाद इस उम्र को इतना प्रिय है कि अपभ्रंश काव्य में इस उम्र के प्यार का ही अम्बण लगाना कहा गया। टिकोरे बड़े हुए तो अमिया बने और घरनियों का अचार का धंधा जागा। इनके छिलके सुतुहियों (बीच में कटी हुई सीपियों) से उतारे जाने लगे, ढेंपा पहले बड़ी सफाई से काट कर अलग कर गया और चूँकि अभी इन में गुठली या अठली (अस्थि) नहीं पड़ी है, बड़ी आसानी से इनकी फाँक हो जाती है। अमचूर (सूखी चूर्णरूप खटाई) बनाने के लिए तो टुकड़े धूप में सूखने के लिए डाल दिये जाते हैं पर अमकली अचार के लिए मसाले में लपेट कर फाँकें सरसों के तेल में भिगो दी जाती है।

सतुआनि (मेष संक्रान्ति या बंगाली और पंजाबी नव वर्ष) के पहले आम खाना वर्जित है। मेषसंक्रान्ति के ही दिन आम का साइत होता है। इसके बाद तो आम की बारियों का बड़ा बड़ी रखवाला करनी पड़ती है। लू चलती रहती है पर लोग कहते हैं कि लू के साथ साथ आम इसीलिए पैदा हुआ कि वह उसकी दवा है। आम की छाँह में लू असर नहीं करता और जिसे लू मार भी दे उसके तलवों पर (कच्चे आम को उबाल कर) आम के पना का लेप किया जाये तो ताप का शमन हो जाता है। आम के फल बैसाख में गुरम्हाने (गुठली भरने लगते हैं) किसी किसी फल के ऊपर आले पड़े तो वह कोइलासी (एक बार काला) हो जाता है। उसके लिए लड़के पागल हो जाते हैं, क्योंकि वह बहुत मीठा होता है। कोई कोई आम कच्चे भी खट्टे नहीं होते हैं। ऐसे चौरार आम पकने के लिए बच नहीं पाते, कुछ ऐसे होते हैं जो सुग्गों से नहीं बचने पाते और ऐसे सुगाकटारी आम पकने के लिए बचे तो स्पृहणीय हो जाते हैं। कुछ लू से मार जाकर लुहा जाते हैं और ऐसे चिचुरे आमों के फल बच्चों के लिए पके आम का ही प्रतीति देते हैं। जेठ में रोहिन नखत चढ़ते-चढ़ते रोहिनिया आम तयार हो जाते हैं, कई डँसर (अपक्व) तो दूसर भी होने लगते हैं, पर मगना (पहले आने वाले) तो एकदम भदरा जाते हैं। जो लोग पाल डालना चाहते हैं डाल पर पका और

टपका पर भरोसा नहीं करना चाहते, वे जाल लगाकर उसमें लोप कर या लकुची (लग्गी) लगा कर या हाथ से तुड़वा कर (ताकि नीचे गिर कर फल घूसने न पाये) आम के तयार फल भूसे के भीतर रख देते हैं या फिर सूखी जमीन पर टाट के नीचे रख देते हैं। ज्यों ज्यों पकता जाता है, त्यों-त्यों ढेंपी पियराने लगती है और खाने के लिए आम तैयार हो जाता है सावधानी से देखभाल न करें तो फल उतर जा सकते हैं दागी फल सड़कर दूसरों को भी दागी बना सकते हैं। पर कुछ लोग डाल का आम पसन्द करते हैं, डाल के आम कपा पाते ही भदभदा उठते हैं और टपकना (चूना) शुरू हो जाता है। कुछ डाल पर ही किड़ा जाते हैं कुछ भीतर से झावर हो जाते हैं और टपके हुए आम पर विश्वास करने का फल सियार पंडित को मिला, जिन्हें झाँवर आम में छिपे हुए बिच्छू ने डंक मारा तो उन्होंने संकल्प किया—अब जो जिऊँगा तो बाग न जाऊँगा बाग भी गया तो आम न खाऊँगा आम भी खाऊँगा तो झावर-पड़या आम न खाऊँगा खाऊँगा केवल लोकलोक्या।

पके आम खाने की भी विधि होती है, उसकी ढेंपी में चोप होती है, वह लग जाये तो होंठ पक जाते हैं, इसलिए चोप निकाल देना होता है। कलमी आम की गुठली छोटी होती है और गूदा ही गूदा होता है, रेशे या खुज्जे नहीं होते, खाने में बड़ी आसानी है, पर बीजू आम ही रस के लिए असली आम है उसका खाइए जी नहीं भरता। यही है कि बीजू आम कुछ बने सुरतहराम होते हैं ऊपर से सिन्दूरी भीतर से बड़े अम्मत (खट्टे), कुछ तो इतने चुक्क होते हैं कि मुर्दे के मुंह पर रखें मुर्दा जी उठे। बाजे बाजे ऊपर से मन लुभावने न होते हुए भी अपूर्व स्वाद वाले होते हैं। पकने पर बाजू आमों की डाल झहरा दी जाये गाही (पांच) की गाही आम बटोर लें और जरा इन्हें पानी में भिगो कर खायें, ताकि इनकी गर्मी उतर जाये। कहाँ तक खायेंगे, इनका अमरस निकाल कर अमावट (आमपपड़ा) डालें, बाद में काम आयेगा। आम की गुठली भी न फेंकिए अकाल में इनका आटा भी गुजर चला देता है बसवाड़ की तो गर्वोक्ति ही है चार मास अमिया खाइ चार मास अंठुला खाइ चारि मासि रहित ससुरारि के पसारा मा। वाति मा न बट्टा और दुपट्टा मा न दागि राखी करित मा ठट्ठा रहित बइसवारा मा।

आम का पेड़ झखाड़ हो तो चढ़ने में आसानी होती है तना मोटा और उसकी छाल पपड़ीदार होती है तो चढ़ जाइए पर झरका (पतली डाल) पर न जाइए और माटा (लाल चींटा) की चीँटियों से बचिए। हाँ, यदि पेड़ सरग पाताली हुआ तो फिर लग्गी का ही उपाय रह जाता है। लोग बेरहमी से ईंधन के लिए नीचे की डालें छिनगा डालते हैं छँटते छँटते सिर्फ ऊपर जाने वाली डाल

ये छन में उठते हैं, जम कर जमन या घटा (कादम्बिनी) या जमेले बन जाते हैं, फिर नीचे लरज कर या उने कर उनइयां बन जाते हैं, ये ही वर्षोन्मुख होते हैं बरसौंले और बरस कर (निवृष्ट होकर) छितरा जाते हैं, तब कभी यका यक फटते हैं, फिर जुडते हैं फिर छिटक जाते हैं कभी लुकते छिपते भागते हैं। कभी बदरचल करते हुए क्षितिज के पार चले जाते हैं कभी कभी इनके निर्घोष हैं, पुरुष गम्भीर स्वर के ये ही प्रतिमान हैं, मन्द मन्द गुड़गुड़ाहट से गडगडाहट (रसित) में, गडगडाहट से (मुरज या मृदंग की हलकी थाप से) गरज तक आवाज की बुलंदी जाती है। यह गर्जन कभी तड़तड़ाहट (स्तनित) में परिणत होता है कभी तड़प में और तब निश्चित रूप से बाद में बिजली कौंधती है। ये ही बादल डरावने हो जाते हैं, कुछ बादल केवल गरजते हैं, पर बरसते नहीं क्योंकि उनमें सार कुछ नहीं होता केवल एक रोलेरन की दूसरे रोलेरन से टक्कर भर होती है। वैदिक ऋषियों ने बादलों की उपमा अग्नमखडों से दी है और इन की टकराहट से उत्पन्न शक्ति को इसी लिए उन्होंने अशनि कहा है अपातपात (जल का धवता) कहा है (जल से मेघ मेघ से विद्युत)। बरसने वाला बादल संस्कृत में पर्जन्य कहा गया है घनानन्द ने इसी को दूसरा काव्यात्मक अर्थ दिया पर कारज देह को धार फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ'। संस्कृत में सफेद बादल को बलाहक जल से भरे हुए को जलधर, धारावर्षी को धाराधर और धुईंले को धूमयोनि कहा गया है। विद्युत के भी पर्याय अपनी अलग अलग सार्थकता रखते हैं। क्षण भर स्फुरित होने वाली चंचला या चपला, मालाकार में चमकने वाली सौदामनी (दामिनी) सौ-सौ लकीरों का जीवन वाली शत हृदा या ह्लादिनी बराबर कौंधने वाली तड़ित् और प्रकाश फेंकने वाली विद्युत् या शम्पा। लोक भाषाओं में बिजली के चमकने के कई प्रकार आख्यात हैं, पतली रेखा के रूप में चमकने को लहकना कहते हैं अधिक प्रकाश के साथ चमकने को कौंधना और धुक धुक बार बार चमकने को दुकना या चौंकना कहते हैं। बिजली गिरने को गिर्द्ई पड़ना कहते हैं।

दिशा के आधार पर बादलों के कुछ नाम हैं। पुरवया चल रही हो और पश्चिम से बादल उठे तो उसे उलटा परवा या पुरवा कहते हैं और पूरब से हवा के रुख के साथ उठे तो उसे सीधा परवा या पुरवा कहते हैं। पछुआ में अनुकूल बादल पछायें या पछुवा कहे जाते हैं। वर्षा के तो अनगिनत रूप हैं। झीनी-झीनी बूंदें पड़ती हैं जो दिखाई भी नहीं पड़तीं, उसे फुही या फुहार कहते हैं यह फुही लघु बाष्प में स्वप्न प्रणय या स्वप्न की तरह ही पूर्व प्रणय की प्रतीक है फूहा से तब होती है बूंदों की झिनक, झिनक से कुछ बढ़ बूंदा-बांदी (जब बूंदें टप-टप रुक रुक कर पड़ती रहती हैं) जब छिटा-छोटी बूंदें लगातार कुछ देर

तक गिरती रहें, तब रिमझिम, मेहासिन या झिनमिन वर्षा होती ह, ये ही नन्ही बूँदें हवा के साथ लहराती हुई पडती हैं, तो वर्षा लहरुआ कही जाती ह । भारी बूँदो का पडना बौछार और तज हवा के साथ बौछार पडे, तो झपटी या झनकार और घोर वृष्टि मूसलाधार वर्षा कही जाती ह। इस मूसलाधार, मूसरधार वर्षा को सस्कृत में धारासार कहते ह । जब दो-तीन दिन तक लगातार वर्षा होती रहे, तो उसे झडी लगना कहते हैं । सावन भादों की झडी मशहूर है । जब मह बरस कर यकायक ब द हो जाये ता उसे झला या झलवरा कहते है । यदि वे छाय रहें पर बरसें न ता उस वातावरण को उनमनापन या घुमडन या घुटन कहते हैं, बादल बरसते रहें और धूप निकल आये, तो उसे कोढ़िया मेह या सियारबियाही मेह कहते हैं ।

मात्रा परिणाम के आधार पर भी वर्षा के नाम प्रचलित ह । पनियाढार (जब पनाले बह चलें) रेलापेल, गहगडडा या धहधडड (जब बडे जोर की वर्षा हो बीच में मदान में पानी उतरा आये बिचकिल्ले भर जायें) जगमन्न (जब आस पास कई कोस तक खेत भर जायें) मेडतोड (मेंड़ तोडकर पानी बह निकले), तालतोड (ताल के किनारे उपट जायें), कूडभराऊ (जब गडढे भर जायें) ओरीचुआन (जब छत से ओरी चूने लगे) धूरिबझाव (धूलि का उठना रोकने वाली), छिडकाव और ओसचटाव (बहुत ही मामूली वर्षा)। चौमासे का पहली वर्षा डौंगरा या दौंगरा कही जाती ह । मघा नक्षत्र की वर्षा घिग्घी बँधाने वाली और भूमि को अघा देने वाली, पूर्वा नक्षत्र की वर्षा मपटी के कारण फूस के घर क चारो ओर टट्टी लगाने वाली और हस्त नक्षत्र की वर्षा गलगल करने वाला या सभि मिलाने वाली कही जाती ह । माघ की वर्षा महावट या मौहासी कही जाती ह, फागुन की वर्षा अहितकर होती ह उसमें पशु मरते हं उसे चमरबन्हा कहते हैं । वर्षा के परिणाम भेद से खेत सिंचते ह, ऊभचूभ हो जाते ह किचकिच या गोहच हो जाते ह (कीचकांदा हो जाते ह) और धूप न निकले तो कीचड से बुस्सायंध और सडायंध ग ध निकलने लगती ह पवट जाते ह (पानी से एकदम भर जाते हं) या डूब जाते ह । जब तपी हुई जमीन पर हलकी वर्षा होती ह तब उसे छौंका कहा जाता ह । जब इतनी वर्षा हो कि खत की फसल गलने लगे तो उसे गलकी या गरहिया कहते ह । जब तेज हवा (झाय) के साथ मोटी बारिश होने लगे, उसे झाऔट कहते हैं । झाऔट में पौधे जमीन पर पिटकर बिछ जाते हैं ।

पानी क अलावा बादल विशेष रूप से माघ-फागुन या चत बसाख में ओले बरसाते हैं । छोटे ओले कँकरी या बनौरी भी कहे जाते हैं ओला पडने को कहीं कहीं पत्थर पडना भी कहते हैं, जाडो में तुहिन-पात भी होता ह । उसे ठारी

या पानी पड़ते हैं। पाला पड़ता है या कुहासा छा जाता है। सामान्य अवस्था में पत्तों पर पड़ी हुई बुंदकियाँ ओस (शबनम) कही जाती है। जब ओलों का लगातार गिरना निरन्तर कहा जाता है। ओले आते पड़कर कुछ ही देर में बन्द हो जायें तो उसे झाला पड़ना कहते हैं।

काली घटा बन बादल घिर रहे हों तो दिन दुर्दिन कहा जाता है। भादों में रातों को अंधियारा भी कहते हैं। दुर्दिन के बाद बादल छट जायें तो उसे उघार, खुलना, या उघरना कहा जाता है। बादल बिलकुल न रहें तो उस स्थिति को निथावर कहते हैं। वर्षा खुल जाय तो उस शान्ति में शीत के बादल बड़े सुहावन होते हैं और जब कई दिनों की तपन के बादल घुमड़ते हैं, तो वे बड़े सलोने और स्निग्ध दिखते हैं। ये ही बादल निरन्तर बरसे चले जायें तो दिन बड़े मटमैले हो जाते हैं रात में उठने वाली घटा बड़ी डरावनी हो जाती है खासकर जब बिजली भी रह रह कर तड़प उठती हो। पर सुकुमार और पावन ये दोनों पक्ष बादल के पौरुष के प्रतीक हैं। वही धरती का कामरूप पुरुष है। उसके लिए धरती की पुकार प्रोषित पति के लिए प्रियतमा की पुकार है। 'आना जी बादल जरूर'।

१०

शस्यश्यामलां मातरम्

धान सबसे महत्त्वपूर्ण धान्य जरूर है, पर हिन्दुस्तान का काम उससे चलता नहीं दूसरी फसलें भी उगायी जाती हैं। कुआरी या उन्हारी या भदई फ़सल के रूप में मक्का [मकई, जोन्हरी–पूर्वी उत्तर प्रदेश] ज्वार, [टेंगुहइया बजड़ी (पूर्वी उत्तरप्रदेश)] जोंडरी (ब्रज), जनेरा मसुरिया जनेर, जोन्हरी (सारन) गेहुँमा बाजरा बजड़ा, बजड़ी, लहर (ब्रज)—कोदों, सावा (<श्यामाक) टौगुन (फेंगुनी मड़ुवा बोये जाते हैं, इनके साथ ही कुछ दाल वाली फसलें (जिन्हें मसीना <माषीन कहते हैं), उड़द, मूँग, मोठ (भिनगी–पूर्वी उत्तर प्रदेश), अरहर (रहर–पूर्वी उत्तरप्रदेश) भी बो दी जाती है। मसीना तो अगहन में कटती है, पर अरहर चैत में। चैती फसलें दो प्रकार की होती हैं बालवाली (शलिहन) और फलीवाली (छिमिहन)। बालवाली फ़सलों में गेहूँ, जौ, जई आते हैं और फलीवाली फसलों में मटर (केराव), चना (रहिला, बूट बेदाम), मसूर, कुलथी ,लतरी (खेसारी) आते हैं। इनके अलावा असाढ में ही नगदी फ़सल के रूप में कपास या बन और तिल (तेल्हन फ़सल के रूप में) बोये जाते हैं, कातिक में सरसों अलसी (तीसी) और कुसुम बोये जाते हैं। नगदी फ़सलों की चर्चा अलग करेंगे। उसी के साथ गन्ने (ईख) की भी चर्चा होगी। अभी अनाज वाली फसलों का ही ब्यौरा प्रस्तुत है। पहले इन फसलों की किस्मों की चर्चा हो जाये। बढ़िया गेहूँ की दो किस्में मुख्य हैं मुँडिया (मुड़िया मुँडिला), जिसमें टूँड या दाढ़ा नहीं होती। इसी की एक सफेद दाने वाली किस्म है दाउदी दौदिया, दूसरी किस्म है तीकुरिया (टूँड़वाली) जिसकी सफेद दाने वाली उपजाति दूधी या दूधिया और लाल दाने वाली लाल ([illegible]

पचहरी) कही जाती है। इसके अलावा ऐसी किस्में भी हैं जिनके दाने बहुत छोटे होते हैं। उन्हें देसी, हड़हड़ा, बचलरा, सिलगा जैसे नामों से पुकारते हैं। ज्वार की मुख्य किस्में हैं, लाल ज्वार (रतसा, जोंवरा, सिमुआ, महुअ) सफेद ज्वार (दुधिया, लरकटिया नारकटिया) और सौकन (सोंकला) ज्वार शलरिया। अरहर की दो किस्में होती हैं, देसी (छोटा दाना) और रमरहरा (बड़ा दाना)। उड़द की कई किस्में होती हैं डोमा (पूस माघ में कटने वाली) लरही या असनी (कुआर में कटने वाली), तपसी या कतिका, अगहनुआ, रंग के हिसाब से काला या सियाह उड़द, हरा या बुलबुल्ली या सबुजा उड़द। मटर की किस्में हैं कबली या कबिली, घेंवली या बड़ी सफेद मटर मुगिया (छोटी हरी मटर) बजरी (और छोटी मटर) बटुरी या कुमही (छोटी काली मटर), बेल की तरह चढ़ने वाली मिठगरा। इन किस्मों के अलावा नये संख्या वाचक और देशवाचक नाम भी प्रचलित हो गये हैं मैक्सिकन गेहूँ, फारम गेहूँ।

अब इन फसलों की जीवनयात्रा के इतिहास पर आयें। गेहूँ का बीज पुत्ती कहा जाता है और दूसरे बीज दाना या बीया कहे जाते हैं। जब पहला उभाव होता है तो उसे सुई या सुआ या अखुवा, कुल्ला, अंकुर, कनी, डफ कहते हैं, और इस अवस्था को सुइयाना, अँखुआना, कनियाना या डफ निकालना कहते हैं। इसके बाद जब बीज जड़ पकड़ लेता है तो पौधा पुतरा कनखी, डाभ कहा जाता है और जब पौधा दुपतिया जाता है तो डाभा, कभी गजुर कहा जाता है। गेहूँ जौ के पौधे छः इंच बड़े हो जायें तो वह बन्ती कौआझँपाउ या कौआलुकान नाम से पुकारी जाती है। मटर आदि पसरने या फैलने वाली फसलों में जब छीमी या फली के लिए फूल का ढंग लगने शुरू हो जाये तो कहते हैं कि फसल में पटा लगा है, फसल पटरा या पटा गया है। उस समय मटर, चना, मसूर का साग खोंटने, चौंटने या कुतरने के लायक हो जाता है। खोंटने से पौधा और कनखियाँ (शाखाएँ) फेंकता है। इसी को व्रज में सिरा फुल्कना भी कहते हैं। जब जौ-गेहूँ में बाली लगने को होती है तो कहा जाता है गेहूँ रेंडा या गभा, गम्हड़ा या खूद (व्रज) या गदरा या दुधिया गया। मटर चना में छीमी लगता है तो उसे ढेंढियाना या कचराना कहते हैं। गदराया चना पटकी या खटकोहा भी (शाहाबाद में) कहा जाता है। दाना भर जाने को गदाना कहते हैं। यदि दाने नहीं पड़ते तो कहा जाता है फसल मारी गयी, ठगिया गयी, उकठा गयी, पतलपुआ रह गया। गेहूँ का दाना जब बड़ा होने लगता है तो उसे हुबसाना, कलाना या गातानर या दरार पड़ना (अंडा पड़ना, कोंथ फूलना) कहते हैं। मक्का में जब दाने पड़ने को होते हैं तो वह मँजा जाता है ज्वार बाजरा में दाने पड़ते हैं तो वह ललहा जाता है या रेंडा जाता है या हल्हला जाता है। ज्वार

बाजरा मक्का के तने डाठ डटठा, ठठेरा या फटेरा (ब्रज) कहे जाते ह । गेहूँ की बाली (बाल, सीसा, सीस) में से आगे निकला हिस्सा टूड या मूँग कहा जाता ह । दाने को खोल झकौआ, झकौआ समेत दाना दोरई कहा जाता ह । ज्वार, बाजरा या मक्का की अधपकी बाल दुद्धा, दोधा, दुधरमुठिया कही जाती ह, बाजरे की बाल जहाँ स निकलती ह उस कोय कहते हैं और बाल क नीचे का नली नरक्ष कही जाती ह, मक्के की गाँठों से रेशे या सूत निकलते हैं, सूत क नीचे हर पत्तुलो या खोइया या बोकला मे गडेली या द्युपकी पडती ह, इसी में दाने पड जाते हैं तो इसे भुट्टा कहते हैं। ज्वार और बाजरे की वाढ दराती से एक बार काट ली जाती ह (कुतर या कतर ली जाती ह) जिससे पौधा चौड़ा हो जाता है। दाना में जब दूध भरा रहता ह तो वे दुधभोरी या दँतकभरा या दुधघोटदू कहे जात ह पक जाने पर उन्हें कूकरी अडिया या पक्ठा कहते हैं। दाने निकालने की प्रक्रिया को नुकाना कहते हैं। पत्तुल अलग करने की प्रक्रिया सोठना ह । छूँछी गडेली भोराह, भुडडी या भुल्ली या लेंड़ री या मेढ़ा कही जाती ह । ज्वार का दानाविरहित भुट्टा बबूला या भोडरा कहा जाता ह। मक्का के कटे पौधे करव या करवी, बाल रहित ज्वार-बाजरा के पौधे बझड, ठटठा, मुडिया या दटठा कहे जाते हैं। इन्ही का टाल बनाकर पशुओं के सूने चार के रूप में उपयोग म लाने के लिए रख देते हैं।

मक्का की नाक को फूल या नाक कहते हैं और इसमे फूल जब दाने पकने की दशा में टूटने लगते हैं तो उस कूआ कहते ह। इसके रेशे का भूआ, मूछ या सन कहते हैं। बडी बाल को धनबाल या धनहरा कहते है। बाजरे की बाल में से एक लम्बी पतली डंडी सी निकलती ह उसे डूडरी, खूधरी या बगुची कहते हैं।

उडद मूँग आदि का तना जालिन, उसकी फूली हुई गोठ करया कही जाती ह । मटर की लतर जब फैलती ह तो एक सूत आगे फेंकता जाती ह, इसे तुर्रा या नारकहते ह मटर के पौधे का ऊपरी भाग छत्ताकहा जाता ह । मटर की पोपली फली धपना कहा जाती ह । चना अरहर, मटर का भुस छिमउर कहा जाता ह। अरहर का सूखा तना रहेठा कहा जाता ह और इधन के काम में आता ह । बाल काटकर ज्वार-बाजरा खेत में चारे के लिए छाड दिया जाये तो उस गेंधॅल कहते हैं। जो-गेहूँ की बालो उम्मी भी कही जाती ह । नवान्न के समान उम्मी का होला या होरहा भूना जाता ह ।

इस प्रकार बीज से लेकर फली तक ये फसलें जीविषम का निर्वाह करती हैं और इनकी जीवन-यात्रा की दख रेख बडे जतन से की जाती ह । तभी तो इस प्रक्रिया को लेकर इतना समृद्ध शब्द भाडार हमारी लोक भाषाओं में मौजूद है।

● ●

११

खेती उपजे अपने कर्म

बैसाख की अखतिजिया (अक्षयतृतीया) से खेती की तयारी शुरू हो जाती है। बैसाख में खेत बाहे जाते हैं। जिनमें खर-पात, घास या दूसरी घास है उन की गुड़ाई (तमिया) होती है जिनमें अरहर की फसल रही एक खुटार (खूटी वाले) खेत का पलिहर या चौमस छोड़ दिया जाता है केवल खूटियाँ निकाल दी जाती है। उनकी तयारी चौमासे में रबी के लिए होती है और जिन खेतों में रबी की बालवाली (बलिहन) फसल थी, उनमें उन्हारी (आसिनी भदई) की तयारी शुरू हो जाती है। प्राय अखतिजिया को हल की साइत (हरयत) होती है। हल के फार लुहार के यहाँ पीटे जाते हैं। हरिस (<हलीषा), हथिया (पनिहारी) परिहथ (<प्रतिहस्त = मूठ), जुआ (पालो) सुहागी (हेंगा पटेला) बढ़ई के यहाँ सुधारने के लिए दिए जाते हैं। बढ़ई बाँस का किल्ला (बरन), हरिस की काँटी (सेला) फार के पाट में पचरी ठोक-ठाक कर हल कस देता है। चमड़े की दुआली पुरानी पड़ गई है तो बदल दी जाती है। रस्सी के नये जोते (योक्त्र), बरही (पटला में बाँधी जाने वाली रस्सी) पगहा (हरपघा <प्रग्रह) और नाथ बँटे जाते हैं खुरपी कुदाली के बेंटो और फरुही की मरम्मत होती है। जो खेत दुसाई (दुफसली) या तिसाई (तिफसली) होते हैं उनमें बैशाख में भी तयारी की जाती है।

किसान का खेत बिना नाम का नहीं रहता। गाँव के समीप का गोयड़ा (किरा, बारा) सीमान्त के सिवान (हार, पाली) और बीच के माँझा (मेझा या मझार) कहे जाते हैं। आकार के हिसाब से खेतों के तिकोनिया, पटिया (चौकोर), घेल्ला या गोल (गोलाकार), टेढ़वा (टेढरा = टेढ़ा मेढ़ा) नारी

(पतला और लम्बा) या फाँस, सिपारिया (बीच में मुड़ा) और तीनकोनी (कई कोनों वाला) नाम होते हैं। धरातल के विचार से खेत गड़हा (गढ़ा) टीलिया (डूह, धूस, ढूहा), ढलवाँ (लुढ़कइयाँ), मटाह (ऊँचा-नीचा ढर कना (जिसमें से पानी ढरक जाये) या निरपटाह, दहर या ताल (नीचा) सनाओं से पुकारे जाते हैं। बीच में ऊँचा खेत डाँगर या डाँग कहा जाता है। दहर या ताल खेत में पानी बराबर भरा रहे तो उसे गरत कहते हैं और जिस में पानी की नाली बह जाये उसे भाखड कहते हैं और जिसमें पानी सूख जाये उसे झाँसा (या झझवा), जिसमें पानी आये तो पर ऊपर न मालूम हो, उसे बाल सुदरी (बलसुनरी) और पानी बिना चढ़ाये चढ़ता रहे उसे लर कहते हैं। जिस खेत की मिट्टी में खाद अधिक मिला रहता है उसे सिरायर, सनैला, घोड ही, घोठ कहते हैं और वह बहुत दार (उपजाऊ) होता है। उस में खाद दे देन से फसल (हीन) धमाने या बबरने का डर रहता है, उसकी कमाई इतने से ही काफी हो जाती है कि जात कर उस में पानी भर दिया जाय (खेत की कलई किया जाये), मिट्टी सड़ कर अपने आप खाद बन जाती है। रेहार (रेहयुक्त) खोजर या ककरैठा (ककड़िया मिला) खेत ऊसरार या भटपर होता है उसम बीज डाँड हो जाता है। ऊसर पड़ा खेत निसोखिया (पानी न सोखने वाला) होता है। जिस खेत की मिट्टी चिकनी होती है, उसे गाड और दलार या निमान कहते हैं, उसमें जोतन पर बड़े-बड़े चीपे या ढोल उखड़ जाते हैं बारिश से ये गल कर बराबर होते हैं या फिर पटेले से फोड़कर बराबर किये जाते हैं। ये खेत भी बड़ उपजाऊ होते हैं। खेतो की जुताई जब बहुत घनी होती है तो वह कुड़मिल्लीनी या ऐंनी, दूर-दूर होती है तो मोटी कहा जाती है। माघ की जुताई को मघाड़ गर्मी बरसात वाली को उहारी या असाढ़ा कहते हैं। एक बार की जुताई चास या बाह दुबारा जुताई दुबही या दोमरा (दोखम्बा), तिबारा तिबही या तिखरा चौबारा चार चास या चौबही या चौखरा कही जाती है। पहले दौंगरे के बाद की जुताई खुरँट और गहगहु मेंह बरसने पर की गई जुताई उपार कही जाती है। पानी सूखने पर खेत उठ आता है, अगर कुछ गीला या ओद रहता है तो वह खेत तोता कहाता है। अगर खेत में से पानी बिल्कुल निकल जाय तो वह खेत उकठ जाता है। जुताई करने के पहले उसे पटकना (पानी में हल्का सींचना) पड़ता है। अगर नमी ज्यादा रही तो खेत की जुताई कच्ची रहती है। हल से जो गहरी रेखा खिंचती जाती है उसे हराई और रेखाओं के बीच छूटी हुई जमीन आंतर कही जाती है। हल के एक चक्कर को भी आंतर कहते हैं। छूटी हुई जगह में हल चलाने को आंतर मारना कहते हैं। अंतिम आंतर मारना औंइला कहा जाता है। जुताई के बाद जो ढर (ऊँची जगह) अनजुती रह

जाये उसे मारना होता है कुम्हाली से किनारे किनारे की मेड़ या डँडेर झारी जाती है और जहाँ जहाँ मेंड टूट रही हो वहाँ और बनाई जाती है। सबसे अधिक कमाई बियाड़ (जिस में रोपने के लिए बीज या बीया डाला जाता है) में होती है। धान के बीज भार के या जरई कर के (राख और नमक पाना से अँखुआ करके) तयार किये जाते हैं। बियाड की आखिरी जुताई करके उसे पटेले से हेंगर दिया जाता है (बराबर कर दिया जाता है), फिर सेव या सेल्ह (हलकं) हल से बीया मलौनी करके, हलके हेंग से खेत ढका जाता है। डेढ़ बित्ते का बीया आ जाये तब वह मूठों [गाँवों या बाघो] में काटा जाता है और रोपन के लिये तयार किये गए खेत में लाया जाता है। फिर गाता की टेक के साथ रोपनी होती है।

बुवाई या बावग या बोवनी तीन प्रकार की होती है सूखे खेत में बो करके उसे ढक दिया जाये तो उसे धुरिया बावग कहते हैं। यह शुद्ध राम आसरे है। पानी खेत में भर के (खेत को गजाड करके) उसकी मिट्टी को कनई (कीच) करके जो बुवाई होती है उसे लेव या लेवही बावग कहते हैं और अगर बीया गिरा के छोड दिया जाये उसे मिलौनी बावग कहते हैं। बीज खेत में अगर दायें बायें छोट जायें तो परा बावग और अगर हराई में एक धार में गिराया जाये तो धारी बावग किया जाता है। बोने के बाद पौध ऊपर आ जाने पर खेत में पानी डाल कर जो जुताई की जाती है उसे पनदाहना या बिदाहना कहते हैं। पनदहनी की प्रक्रिया से खेतों में मोथे जैसे खरों की निराई अपने आप हो जाती है। पानी की सुविधा न हुई तो फिर घास-पात काफी उग आते हैं और फ़सल दब जाती है तब फिर निराई या सोहनी खुरपी से करनी पड़ती है।

खत्ती, बखारी या कुठला से बीज निकालने की प्रक्रिया को बुलार उतारना कहते हैं। बीज लेने के मुहूर्त को मूठ लेना कहते हैं। नये अंकुर का डीभी या अँखुआ, उसके बाद पौधा दुपतिया और उसके बाद कुल्हा या कर्ला कहा जाता है नुकीले अंकुर सुई और मक्का ज्वार और बाजरे के तने फटेरा कहलाते हैं। भादों-कुआर में कटने वाला धान भदई, साठ दिन में कटने वाला साठी और अगहन में कटने वाला अगहनी या जड़हन (शालि, कलमशालि) कहा जाता है। इन फसलों के अलावा उड़द, मोठ मूंग अरहर (दाल वाला फ़सलें या मसीन) तथा सावाँ, कोदो टाँगुन मडुवा भिनजो ये खरीफ की फ़सलें हैं, जिनके लिए तैयारी का समय असाढ़ है। किसानी तो शुद्ध कर्मयोग है, किसान भाग्य के भरोसे नहीं रह सकता, क्योंकि धरती तो कर्म की भूखी है।

• •

१२

धान पकेंगे हमारे खेत मे

भदई या कुआरी फ़सल तो कट चुकी, अब अगहनी के कटने की बारी है। अगहनी या जड़हन या चहोरा या सौंदी धान बोआ और रोपा दोनों क़िस्म का होता है। अगहनी धान को ही संस्कृत में शालि और रोपा अगहन को कलमशालि कहते है। जिस खेत में धान पैदा होता है, उसे धनहर, धनखर धनक्यारी कहते हैं। धान बड़ा मेहनत और कमाई माँगता है, जून जून पर पानी, खेत से खरों और लमेरा (अपने से उपजे) धानों की निराई या सोहनी, ज्यादा पानी हो जाने पर मेंड़ काट कर पानी की निकासी और धान में बालियाँ आ जायें और दूध लेने लगें तो उनकी रखवाली, ख़ास तौर से सुग्गों से।

धान की क़िस्में अनगिनत हैं। महीन या बारीक धान की कुछ मशहूर क़िस्मों के नाम इस प्रकार हैं—बासमती, कनकजीर, पनियाँ, तुलसीफूल, महाजोगिन, रूचीं, गोरिया, जूही बगाल धर्मामुसी, लालकेसर, रामजीरा, श्यामजीरा, काला ममक बहरनी, राम अजवाइन, गोपालभोग रामभोग, ठाकुरभोग, सुगापंखी, बतासफेनी, दूधगिलास, कमोदी, दौनाफूल, हंसराज, भाटाफूल, धांसफूल, कमोच, कनकचूर, गोकुलसार, धीमजरी, मालदेही, लौंगचूरा, जलहोर। मोटे धानों की किस्मों के कुछ नाम ये हैं—करंगा, जगरनथिया, दूधराज मेघनाद, साठिन रूल देइया, गहुमा, गड़ेर, मुट्ठरी, नरहिया, मनसरो, रमुनी सरिहन, सिलहट, पतरनी, भेड़रायर, मुट्ठनी, ढोलेंगी, मुड़रा, गजपत्ता, सेल्हा, जागा, कजरधर, दलगंजन, सौंदी। पकेना के नाम आने वाले धान है बनकी और देवसार। नया **बेसाबरी** क़िस्में तो नम्बरों से अधिकतर जानी जाती हैं। धान का नया **पौधा**

का रोपा जाने वाला पौधा बान, धान की जड़ नेरआ

कच्चा धान गबरा या गदरा, गम्रा पर तयार धान गुरद अथवा उबाले का उसिना या भुजिया (जिसे गुर म तयार की जाती है) भुना धान खोल या लावा (लावा) का बाहरी छिलका भूसी, भीतरी छिलका कोराई टूटा वाला चावल टूटन खुदिगर और बिना चावल थोटा कह

धान की कटनी या कटिया या लवनी कार्तिक मे शुरू हो जाती है प्राय कटनी की मजदूरी (बिनौरा, गुवारा या १२ या १६ बोझ पाछे एक की दर म दी जाती है जगहा मे भी मजूर कटिया की ज्यादा मजूरी क लोभ म कटिया की प्रक्रिया जड़कट्टा या जरखोरा बिलकुल ऊपर क प्रक्रिया यलवट लगो कटुई कमाई महरटनी या सिला कमा-कभी लोग धान तैयार न होने पर भी घराई या टूट कचरा या गवरा ही काट लेते है। नवान क लिए समझा जाता है मुहूर्त या शान्त क दर में। कटनी समाप्त हो जा का काम शुरू होता है यह प्राय कम खेतो वाले किसान क लिए हँसुआ, पहरिया अथवा मधरिया दाब, सगियर ि होते है) या हँसुली या कत्ता (छोटे) काम में आते है। दातें या कचिया कहा जाता है। हसिया की धार वाला ि वाला हिस्सा मूठ कहा जाता है।

धान काट कर खत में मूठो पूलो या गुट्ठो में बटोर क दिय जाते है। फिर कुछ सूख जाने पर इन्हें गलार या रसा चार पुटठ का पाजा होता है जिसे जगह जगह जोल्हा, अढ़ाँर और पसही कहते है चार पाजा का एक बोझा होता है साल इक्कीस को इक्सी, १६ सोरही का सोरहा। बोझ एक के ऊर (सहुज कर) खलिहान में रख जाते है। इसी को डाँठ, गाँ कहते है। खलिहान छीला जाता है, बराबर किया जाता है उसमें डाँठ रखा जाता है। खलिहान में अनाज अलग करन क पर या लाक कहलाती है। इसके बीच में एक मेह होता है। चारा ओर पर के हिसाब से चार पाँच या इससे अधिक भी बैल है। मेह के पास वाला (अर्थात जिसे सब से कम दूरी घमना कहा जाता है और सबसे बाहर वाला अगदाई या पागडा आगिल कहा जाता है। इन बला के गले में पडी रस्सी गर्दी रस्सी दावरी या दौंरी कही जाती है। एक बार का घूमना दाँ

कहते है। ऊपर अच्छा तरह दूट जाने पर नीचे वाले पैर या लाक उल्टी जाती है या उखाड़ी जाती है इसी को तरपरी करना कहते हैं। दाव घूमते समय बैल जो डाठ इधर उधर कर देते है उसको किसान सोकी से बलों के पैरों के नीचे डालता चलता है, यह प्रक्रिया पलड मारना है। जब दायें चलाना बन्द करना होता है, तो दौरी ढील दी जाती है, बैल खोल दिये जाते है, बैल अधिक नया अनाज खाकर अनपच न कर लें तो कभी कभी बैलों के मुँह पर जाबी (जाली) लगा दी जाती है। अच्छी तरह रूदा हुआ डाँठ खुरदाया हुआ डाँठ कहा जाता है। खुरदाये डाठ को फिर से गाहते है तो अनाज की रास अलग हो जाती है पयाल अलग। कभी कभी कम बोझे हुए तो पीट कर, झार कर या झोट कर अनाज निकाल लिया जाता है। कभी-कभी थोड़ा सी बाला को मींज कर अनाज निकाल लिया जाता है।

अनाज की इकट्ठा रास को सिलो, टाल पल्ला, ढेरी या खम्हार भी कहते हैं इसमें अभी कुछ-न कुछ पयाल मिला होता है इसकी ओसौनी शुरू होती है। ओसौनी हवा का रुख देख कर की जाती है। जो हलका निर्जीव अनाज या भुसा उड कर पहले निकलता है उसे पम्मी, भौंटा, पाकी कहते हैं इसके बाद अधभरी या पइया अनाज निकलता है। ऐसा बहुत सा अनाज दूर बिखर जाता है भारी अनाज बीच में राशि के रूप में इकट्ठा होता जाता है, दूर बिखर जाने वाला अनाज अगवार या पछुआ कहा जाता है और वह हलवाहा का हिस्सा होता है। रास बटोरने के लिए फरई या अखइन काम में लाये जाते हैं। रास के ढेर से मिट्टी तिनका, ककड आदि का निकाल कर रास सँवारने की क्रिया रास लगाना कही जाती है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत रास इकट्ठा की जाती है सोहनी या झाड़ू से एक स्थान पर सकेली जाती है और फिर रोली या रोरी जाता है। मिट्टी के ढेले वगैरह हाथ से अलग किये जाते है। लगी हुई रास का और साफ़ सुथरी बनाने के लिए किसान उस पर झाड़ू फिर फेरता (सुनती या सरेती फेरता) है। फिर सँभाल सभाल कर ढेरी लगायी जाती है (धवडा की जाती है)। इसके बाद रास चद्दर जाजिम पाल आदि से ढक दी जाती है और रास दबा दी जाती है, रास में बरक्कत के लिए लाग गोबर की सूखी कडी रखते हैं। रास कभी तौल कर कभी अनकूनी ही घर ढोकर लायी जाती है। और कहीं कहीं, खलिहान कहीं-कहीं घर पर ही नवागत अनाज की राशि का पूजन होता है। प्राय हर खेत की अलग रास होना है और रास के साथ उस खेत की मिट्टी का एक ढेला (स्यावड<सीतावक्त) भी आता है। उस रास में से कुछ अनाज दान के लिए अलग रखा जाता है। उसको भी स्यावडी कहते हैं इसीमें से नाई पुरोहित [illegible]

है। हर किस्म के धान की मोजर (मजरी) इकट्ठी करके उसकी चन्दनवार आँगन में चारों ओर ताना जाता है। इसका दाना तो पंछी चट कर जाते हैं, पर इसका वितान काफी दिनों तक बना रहता है।

किसान का आँगन नये अगहनी धान के कणों के बिखरने से महक उठा है, नवेली बहुओं की मूसल से कूटते समय चूड़ियों की झनकार उसे चहका रही है।

• •

१३

नगदी फ़सलें

मुख्य नगदी फसलें ईख (गन्ना), कपास (बन), सन-पाट (रस्सी के काम में आने वाली) तेलहन (तिल, सरसो, असली या तीसी, कुसुम) और आलू। गन्ना, तिल और कपास की फसलें अगहन में तयार होती हैं। सन-पाट, खरीफ़ की फ़सल है और सरसो आदि रबी के साथ तैयार होती है।

गन्ने (ईख या ऊख) की कई उपजातियाँ हैं, कुसिहार (बौनी और कड़ी नस्ल), केतार या केतारा, केवाली या केवाही, रौंदा (ये सभी पतली और लम्बी नस्ल की हैं) चिनिया या पनसाही या पौंडी (चूसने में बड़ी मीठी और मुलायम), नरगोरी या बरौंखी (लाल डंठल वाली), भुरली (मोटी और रसभरी), मनगो, रेवड़ा, साही, हथुनी (सिर्फ़ पेरने के लिए उपयुक्त)। गन्ने के खेत का उखाव, उखारी भी कहते हैं। गन्ने की खेती दो प्रकार से होती है, एक तो नये सिरे से बावग, दूसरी ऊपर से काटकर जड़ छोड़ दी जाती है। इसको पेंडी या खुटिया कहते हैं। नये सिरे से बावग में कहीं-कहीं बीज के लिए ईख काटकर एक गहरे गड्ढे (बिझरे) में डाल दिये जाते हैं फिर माघ-पूस में ये ईख के गाँडे या गँडे निकाल दिये जाते हैं। कहीं-कहीं सीधे खेत से ही गँड (टोना, गुल्ली, पौंडा, बेहन) लाये जाते हैं। इनके ऊपर पताई या पतहर, पतौरा की पत्त रहती है उसे छीलते हैं फिर गन्ने का सिरा (अँगोला, फुनगी, बधिया, अँगेर या अगारी) काटकर अलग रख देते हैं। खेत अच्छी तरह जोत कर तयार किया जाता है और मोहों या घोहों के बीच में खाता, गाड़ा, गड़सार, बलसार, टोनखावा, गूल, सला या पनारी बनाते हैं, उसी में गँड़े गाड़े जाते हैं। गँड़ का टुकड़ा पड़ा कहा जाता है। दो गाँठों या पोरा के बीच का हिस्सा

होता है। इसकी मुख्य क़िस्में हैं देसी या बड़ी, जेठुआ, धमाकुल (चौड़े पत्ते वाली) या मोरहन, छेउआया, पनडठिया या खँगड़ीवा (पतले पत्ते वाली)। तम्बाकू का तना डंडी या डाँठ, सूखे पत्ते और डंठल, झाला या खरसान कहे जाते हैं। जब पत्ते पक जाते हैं तो उन पर चित्तियाँ पड़ जाती हैं, तब इसे चढ़ना या चितियाना या गुलठियाना कहते हैं। तम्बाकू की पत्ती तोड़ लेते हैं तब उसमें से दोजी फसल फिर निकलती है। नये अँखुओं को पछुला, कनोजर, कोली, कनई, फनल भी कहते हैं। पहली बार की फसल मोरहन और दूसरी बार की दाजी या खुदिया। तम्बाकू के रोपे जाने वाले पौधे पोआ, तम्बाकू का बीज, धूनी या बिच्ची कहलाता है।

आलू की खेती की चर्चा दूसरी साग सब्जियों की काश्त के साथ होगी। नगदी काश्त से किसान भोजन के अलावा अपनी दूसरी जरूरतें पूरी करता है।

● ●

१४

साग-सब्जी और फूल

साग-सब्जी की काश्त कोइडार, पालेज या बारी कही जाती है। इसी के साथ हम पान की काश्त जोड़ लें, जिसे बरेज कहते हैं। फूल-पत्ती की खेती बाग़बानी है। पान से शुरू करें क्यों कि यह पत्तियों का राजा है। पान की मुख्य क़िस्में हैं मगही या मगधी (मुलायम और स्वादु) काकेर (बड़ी पत्ती वाला), बँगला या देसी बँगला (छोटी पत्ती वाला) (इस को लखनऊ में बेगमाती भी कहते हैं) बेलहरी ,साँची, कलकतिया, जगन्नाथी, कपूरी (काफ़ी तिक्त), मलेहरा, सोहागपुरी, महुई। पान की लतर भीटों, बरेठों या पाढ़ों (ऊँची जगहों) पर लगायी जाती है। पाती-दर पाती (पाती को सपुरा, सापुर, पास भी कहते हैं) पान की लतर चढ़ायी जाती है। दो पातियों के बीच में जो अंतर या अन्तराल रहता है, उसे दोंगर, दोंग या पाहे कहते हैं। यह लतर जिस ढाँचे पर चढ़ायी जाती है उसे कोरई, कोरो, इकरी कहते हैं। एक साँचे और दूसरे साँचे के बीच के अन्तर को कोरवास कहते हैं। ढाँचे को थाम्हने वाले डंडे सरई या ईकर सरकंडा या सरही कहे जाते हैं। पौधे ढेपी (मिट्टी की लौंद) में रोपे जाते हैं। बरज की छत मांडो, मड़वा, छानी या ठठरा कही जाती है और दीवालें टाट, या ठाट। पान की क़लम या बेल भटकों (छोटे मटोर) से इस तरह सींची जाती है कि पानी पड़े पर ढरक जाये। पान की बेल को धूप छन कर लगनी चाहिए इसी लिए इस पर मांडों की छाजन इस प्रकार की जाती है कि धूप लगे पर तेज और सीधी न लगे। पान के पत्ते से इसी लिए नवेली बहू की उपमा बड़ी सटीक है। बड़ी मेहनत और जतन से पान को पालना होता है उसका मिज़ाज नयी बहू की तरह बड़ा नाज़ुक होता है। पान में जो छरके जेब में निकलते हैं, उन्हें [illegible]

कहते हैं और उनके पत्ते नये होते हैं जो भादो कुआर में निकलते हैं, उन्हें कन कहते हैं ये पत्ते पके होते है। सबसे पके पक (जो बालू में दबा कर बल के साथ रख दिये जाते हैं) माघ में निकाले जाते हैं। ये पत्ते मुँह में डालते ही घुल जाते हैं। बीस पत्ते की एक कोरी, ५० पत्ते की चौथया १०० पत्ते का आधा ढोली, २०० का ढोली, ७ ढोली पान का कनवाँ १४ ढोली पान अथवा, २८ ढोली पान पौआ, ४ पौआ का लेसो। पान के पत्ते ढाका या ढाकी में भिगोये कपड़ या टाट के भीतर रख जाते हैं। कत्था चूना सुपारी के साथ पान लगा कर जब तहिया दिया जाता है तो बीड़ा या गिलौरी या खोली या सिघाड़ा बन जाता है लगे पान बिलहरा या बिलहरी (खस या बाँस की डिबिया) या पनडब्बे में लपेट कर रखे जाते हैं। पान की काश्त करने वाली जाति बरई कही जाती है।

अब पान के बाद व पत्तियाँ जिनका साग के रूप में उपयोग होता है। साग सब्जी की काश्त प्राय कोइरी खटिक, कुनबी जसी जातियाँ करती हैं। इनकी काश्त म पालक (दो जातियाँ बट्टई और खडी) सोया (जो इसका अभिन्न मित्र है) कुचिला कुलफा (गुलफा गोलावा कुछ अमलान और चिकनी पत्ती वाला) मरसा (मरसा ठडिया, या टढ़िया) पितरसेली चौलाई (चौराई, लालभाजी), अजवाइन (अजमोदा जवाइन) पोई, मेथी, कलमा साग (एक तरह की पालक) काहू (एक तरह का लेटूस) धनियाँ, पोदीना, चनचुर (तीनो चटनी के काम म आते हैं) मूला विलायती पटुआ मख्य हैं। इनके अलावा बथुआ, चना मटर मसूर, सरसो लतरी, कुम्हड की नयी पत्ती आदि का भी साग रूप के म उपयोग होता है। और सस्ते साग के रूप म गदहपूरना, गुम्म आदि का भी उपयोग होता है। मेथी धनिया के साथ ही सौंफ और राम दाना बोये जात हैं, जिनके बीज मसालो के रूप म या स्वतन्त्र खाद्य के रूप में उपयोग म आते हैं।

दूसर प्रकार की सब्जियो को प्राय तरकारी (पर वष्णवजन उन्हें भी तीमन या साग ही कहगा तरकारी में हिंसा की गन्ध है) कहते हैं तरकारी फूल फल और मूल (कन्द) तीन प्रकार की ही होती है। कन्द वाली तरकारी का राजा है आलू। आलू के लिए खेत की बहुत बारीक तयारी होती है। मिट्टी बहुत भुर भुरी कर दी जाती है और गन्ने की फसल की ही तरह इसके खेत में बीच बीच में मेंड (डौरा या घोहा) बना कर उनके बीच में छोटी-सी नाली बनाते हैं इसीको गूल भी कहते हैं। आलू का घाहा पर ही प्राय बोते हैं। पर कुछ लोग नाली या कूड में भी बोते हैं। कूड में बोये जाने वाले आलू फाड़आ कहे जाते हैं। आलू के पौन का आल कहते हैं आलू के ऊपर एक हरा गोल फल आता है इसे टमना कहते हैं। आलू की जड म छोटे-छोटे रस रूप रहते हैं, इन्हें जरौंदे

एक नगदी काश्त है। तालाबों में सिंघाड़े, नेउसा, कमल (कँवलगट्टा, कमलफूल या कमलककड़ी या भसेंड) भी व्यवस्थित रूप में उगते हैं। इनमें बहुत सी सब्जियाँ घर घर उगायी जाती हैं। कुछ अपने आप भी उगती हैं जैसे सूरन (जमींकन्द) सहजन, वन अजवाइन, वन करेला।

कन्द जाति की सब्जियों को छोड़ कर दूसरी सब्जी साधारणतः लोग निजी उपयोग के लिए उगाते हैं। पर पेशेवर कोइरी या माली इन्हें व्यावसायिक पैमाने पर उगाते हैं। साधारण किसान तो सब्जी के और भी विकल्प ढूँढ लेता है। जंगलों में और भी जड़ी-बूटियाँ हैं जिनका उपयोग भोज्य रूप में हो जाता है पर सम्पन्न किसान सब्जी खरीद कर भी खाता है, इसलिए सब्जी की काश्त का महत्त्व धीरे धीरे बढ़ रहा है।

१५

खेती का धुरन्धर · बैल

छोटे जोत की खेती के लिए बैल अपरिहार्य है और बैल का चुनाव किसान बहुत देख भाल कर करता है। उसके अंग प्रत्यंग को परखने का बड़ा विस्तृत शास्त्र है। गाय का नवजात बछड़ा चुखेटा या दूधपीऊ, ढाई वर्ष तक बछड़ा या लवारा या जेंगरा (वत्स) और उसके बाद तब तक बाछा है जब तक कि वह हल में जोतने या निकालने लायक या हिलावर नहीं हो जाता। जब तक दूध के दाँत नहीं गिरते, तब तक वह अदन्त या उदन्त, दाँतने पर क्रमशः दुदन्ता, चौदन्ता, छदन्ता (या छहर), सहर (सतदन्ता), अठदन्ता और नहर (नवदन्ता) कहा जाता है। चौदन्ता ही संस्कृत में वत्सतर या दम्यतर है। छदन्ता पूरा जवान माना जाता है यही जानोंग है तब वह हिलावर हो जाता है और उसे बधिया किया जाता है या कूटा जाता है। जिस जातोंग का साँड बनाना होता है, उसे छुट्टा या छुट्टल छोड़ दिया जाता है और प्रजनन-कार्य मात्र के लिए उसका उपयोग होता है उसको डिगार या महोख भी कहते हैं। यदि हिलावर हो जाने के बाद बैल (बलीवर्द) बाँधा नहीं जाता, वह मट्ठर (सुस्त) हो जाता है।

बैल के जिन अंगों की परीक्षा होती है उनमें सींग, आँख, कान, दाँत, बासा या ककुद (ढाड) पुट्ठा, खुर, पूँछ, टाँग और पसमी (रोयाँ) मुख्य हैं। बड़े सींग वाला बड़सिंगा और मोटे सींग वाला मुगसिंगा, खड़े नुकीले सींग वाला खड़सिंगा या सरइया बिना सींग का मुड़ा या मुड़वा, टेढ़े और आगे की ओर मुड़े सींग वाला झोंगा या पोंचाह ऊपर-नीचे दो दिशाओं में जाने वाले सींगों वाला मरगपनाल्ही, ऊपर जाकर मिले सींगों वाला मौरा और उल्टा मौरिया, कानों के नीचे लटके सींगों वाला मैना और गुन्थिया, मेढ़ों की तरह मुड़े सींग

वाला मेढ़ासिंगी, टूटे सींग वाला डूंडा, सिरों पर गिरे सींग वाला चिर्रा और जमीन के समानान्तर सींग वाला पातर या फरका कहा जाता है। गहरे काजल से भरी-भरी आँखों वाला कजला और तिरछी निगाह वाला तक्की या ताकी कहा जाता है। लम्बे कानों वाला लमकना, काले कानों वाला कोइल या कनरसौंहा कहा जाता है। लम्बी पूँछ वाला लहगयार या धरतीभार, छोटी पूँछ वाला पुछटेंगा या टगपुच्छा और बिना पूँछ वाला लँडूरा या बाँडा (बड) कहा जाता है। लम्बी टाँग वाला लमटेंगा या टँगड़यार, छोटी टाँग वाला गुजर गोड़ा, घोड़े की तरह टाँग वाला असोना, खुर घिसते चलने वाला खुरघिसा, गधे जैसे खुर वाला खरखुरा, बहुत फटे खुर वाला खुरफटा और चलते समय खुर रगड़ने वाला नवरा कहा जाता है।

उभरे माँस वाला थाँसिया, गुलदार पीठ वाला कुबड़ा या कोठियारकूबड़ और मांसल पीठ वाला बरारी कहा जाता है। सफ़ेद रोए और नीली खाल वाला धौरा, सफ़ेद खाल और नीलाभ रोएँ वाला सीला, पीत रंग वाला पीरौंवा या पियरा, पक्के लाल रंग वाला गोला, भूरे लाल रंग वाला धरिया, गहरे लाल (कालापन लिए) रंग वाला महुअर, काले और सफ़ेद रंग की धारियों वाला कबरा या चितकबरा, कई रंग के धब्बों और छींटों वाला छर्रा और सिलेटी रंग वाला सोंकन, सर्वांगश्वेत करा, कत्थई रंग वाला खैरा या लाखा, काले रंग वाला करिया, देह पर सफ़ेद फूलों वाला फुलवा, काले शरीर पर सफ़ेद मुँह वाला मुँहधोवा और माथे पर गोल सफ़ेदी वाला चहुआ या टिकरा कहा जाता है।

हल या गाड़ी में जुतने पर गिर कर लेट जाने वाला गिर्रा या पड़वा और कामचोर या अड़ियल बैल गरिया (<गलि) या गरियार कहा जाता है। स्वभाव का तेज और चंचल बैल सत्ता, बिर्रा, चमकना या कड़आ कहा जाता है, खूब खाकर भी काम न करने वाला खहड़ या मच्चर, लात फेंकने वाला लतखना या लतहा, सींग मारने वाला मरखना या मुड़सेंटना और झोरार (झारने वाला) कहा जाता है। हाँफने वाला हफना, दमहा या तमल, बाहर जीभ निकाल कर लपलपाने वाला साँपिया या साँपिन, खूंटे पर हिलने वाला झुमना या हल्लना या खूंटाडोल, चाक़िल टाँगों वाला सिझला, चारों टाँगों में चाव वाला चौरंगा, अपाहिज बैल कजाहन, खराब और असगुनी बैल बोदा, अनठा (अनिष्ट) या असना (<असहन) या बज्जर (वज्र = निन्द्य) अच्छा बैल सगुनी धुय, कसीला, जोरावर, गठीला और सजीला कहा जाता है।

स्थान और नस्ल के आधार पर बैलों के कई भेद हैं खरीगढ़िया, थापरी, हरियानी हिसारी पुरबिया, पछइया, काकरेजी नागौरी पुष्करी, देसी, मालवी,

मेवाती किनवारिया (केन नदी)। छोटा और कुत्सित नस्ल वाला टिरिया कहा जाता है।

बैलों के कुछ प्रसिद्ध रोग ये हैं पका या तरवा जाना (पैरों का पकना) भूज फूटना या जल्तोरना (टाँगों में से खून निकलना), जिलना (गले में फोड़ा) वहँगवा या मड़ुरी (गुदाभाग पर मधुमक्खी-सा उठना) मुचकना या टमा (नस उतरना) अफरा (पेट फूलना), छपका (देह पर चकत्ते पड़ना) बँधा (पेशाब-गोबर बन्द होना), गुम्मर (गाँठ हो जाना) अकड़ा (देह का अकड़ जाना), कुम्हेड़ो (नथुने से पानी गिरना) मकोय (सींग का खोखला होकर गिरना) अमेड़ी (कनपटी का सूजना) कन्धा सरकना (कन्धे पर सूजन), जहरबाद (जहरीला फोड़ा) गड़्रा (पेट का फूलना), रोहार (जीभ पर काँटे हो जाना), ढोढ़ा (पतला गोबर करना) और मरोड़ (आँव)। नियन्त्रित करने के लिए बैल को नाथ से नाथा जाता है और पगहे (सोंटे) से वश में रखा जाता है। बैल के गले में पड़ने वाला रस्सा जेवर या रास या पगहा (<प्रग्रह) और दम्य बछड़े के गले में डाला गया डंडा लटलटा, बैल के गले में बाँधी जाने वाली घंटी या टुनटुनी, बैल की पीठ पर डाला गया टुकड़ा झूल या पेटी या ओढ़ना कहा जाता है।

बैल को खूँटे में बाँधते समय जो सरकने वाला फन्दा दिया जाता है उसे खूँटा-फन्दा कहते हैं बहुत कड़ी और दुहरी गाँठ गुरगाँठ, एक और मोड़ देने पर मोटा और पतली रस्सी को हाथ की पाँचों उँगलियों में डाल कर लगाई जाने वाली फन्देदार गाँठ मोरपंजा साँकल की तरह फंदेदार साँकरी सबसे लम्बी और सुन्दर गाँठ ब्रह्मगाँठ, पाली गाँठ मुल्ला और पेंचदार गाँठ गोरखफन्दा कही जाती है। बैल का हरा चारा (चार) हरियरी या हरियाई सूखा चारा भूसा या भुस या पुआल की छाँटी मक्का या ज्वार की करबी या कुट्टी, पानी के साथ मिला कर यह चारा सानी कहा जाता है, इसीमें खली चून, भूसी कोराई (धान का भीतरी छिल्का) चोकर या खोद(खुद्दा) ये सब उपस्कर वस्तुएँ डाली जाती हैं। बैल जिस मिट्टी के बड़े बर्तन में खाता है उसे नाद कहते हैं, बाँस की बड़ी डलिया भी इस काम में बलगाड़िया के सफ़र में लाई जाती है, उसे ओडइसा कहते हैं। बैलों के खिलाने की जगह चरन या खोर या माता कही जाती है। बैल को जोतने वाला हलवाहा बैल चराने वाला चरवाहा या बघवार और बैल खिलाने वाला छाटीकट्टा या चरकट्टा कहा जाता है। बैल के रहने की जगह गोठ या घारी कही जाती है।

खेतिहर बैल को प्राण की तरह सँजोता है, बैल की चोरी करने वाला बड़ा

पापी समझा जाता है, परन्तु पनहा (प्रतिकर) वसूलने के लिए बैल चुराए और कातिक में खोल लिए जाते हैं और बिचवई लोगों के माध्यम से पनहे की रकम तै होती है। लोगों के दाब के कारण परेशान किसान हार मान कर रकम दे देता है और कानून की शरण नहीं लेता क्योंकि उसमें बड़ा बखेड़ा है। वह चोर लगा कर बिचवई के माध्यम से किस तरह अपना माल घर वापस लाता है।

ये खेतिहर के जीवन के वास्तविक पूरक हैं।

१६

खेती के साधन-रस्सी-टोकरी

कई तरह की रस्सी किसानों के काम में लगती हैं। पशुओं को बाँधने के लिए अलग तरह से मज़बूत बटाई होती है। बोझ बाँधने के लिए मामूली बटी या अनबटी, चारपाई आदि के लिए महीन बटी रस्सी उपयोग में आती है।

पशुओं को बाँधने वाली रस्सी पगहा, जोर, गेंठा, तगनी कही जाती है। रस्सी की गाँठ जोर या ठेका कही जाती है। पशुओं के पैरों में बाँधने वाली रस्सी छान, भूड़ा, गाडाव, गोडार, गोडावन, ढेढ़ौरा, जोर या मलौ कही जाती है। यह सरकश पशुओं की दुहरी बँधाई के काम आती है। गले का फंदा गिराँव या गराव, गरौंधन, गरदाव या गदम कहा जाता है। बिगड़ैल पशुओं को बाँधने के लिए दोहरी रस्सी काम में लायी जाती है उसे दोवगो, दोगाहा, दोवगली, कहते हैं। बछने को गाय के थन से खींच कर सेली या सेल से बाँध रखते हैं। पशुओं के नथुनों को बाँधने वाली रस्सी नाथ (<नस्त) कही जाती है। घोड़े आगे और पीछे दोनों ओर बाँधे जाते हैं। अगली रस्सी अगाड़ी, अगारी या गल छोर, पीछे वाली पिछाड़ी या पछाड़ कही जाती है। घोड़े का बागडोर से सँभाल कर ले चलते हैं। लगाम या रास इस के अलावा लगती है। पेट को बाँधने वाली रस्सी तात या मोजम्मा या तनी कही जाती है। ऊँट की नाक में नकेल बाँधी जाती है। हाथी के पैरों में पकर या सीकड़ डाली जाती है। पानी भरने के लिए जो रस्सी काम में आती है उसे उबहन या जोर कहते हैं। लोटा भरने के लिए लोग डोरी काम में लाते हैं। उबहन या डोरी में बर्तन का मुँह फँसाने के लिए जो फंदा रहता है उसे अरवन, रौना, कनड़ी, फँदनी, फांस, फमरगाली कहते हैं। कभी-कभी एक फंदा स्वतन्त्र रूप में बर्तन में फँसा रहता है और वह

उपहन में जोड़ दिया जाता है इसे पनछोर छोरी कहते हैं। इसका फन्दा मुद्धी कहा जाता है। नाव बाँधने के लिए मोटा रस्सा सहारी काम में आता है। नाव खींचने वाली रस्सी गोन या गता कही जाती है। दोनों के काम में आने वाले मोटे रस्से बरहा कहे जाते हैं। गाय बछड़ों की रक्षा के लिए उनके चारा और मोहर या मोजरी या मेदना या बहुना या जाबँधना या मुड़ी बाँध दी जाती है।

बोझ बाँधने के लिए सरपत या पटार या कटेरे को ऐंठ कर जुन्ना जुना, जोरी, पतहर या मोरा (ब्रज) या गतारबना लेते हैं। ईख बाँधने वाला ग्वार उसबँधना या गतोरा या पगार या जोही कहा जाता है—हरे पाट का कचरा या ओदार या गुरही भी बना कर सरीफ की फसलें बाँधी जाती हैं। मूँज की एक बटी रस्सी सूड़ा या लूड़ी कही जाती है। अरहर के तने से बनायी गयी रस्सी बेंती बंधेरी जुनेरी या बाती कही जाती है और डाब की रस्सी चोप या परास। हल्की चीजों को बाँधने के लिए सुतरी या सुतली (दोबटी) काम में आती है। ऐंठा सूत डर्रा, या बँटा या बरा कहा जाता है। खाट बुनने के लिए बाँधा काम में आती है। खाट के पैताने की मोटी रस्सियों को बघेल उड़चन या अदवान (पश्चिम) कही जाती है। पशुओं के मुँह पर जो जाली खलिहान में लगायी जाती है उसे जाब या जाबा या मोहरी कहते हैं।

टोकरा अरहर बाँस बेंत या बन पाती या काँठर या मूज की सींक से बनती है। बोने के काम में टोकरी ओड़ा ओड़िया दौरी, छबी घट्टा छींटा या उड़ना कही जाती है। पशुओं को खिलाने के लिए ओड़सा पथिया या दौरी काम में लाते हैं। अनाज रखने के लिए चंगेली, चंगेरी (इनका मुँह बहुत चौड़ा होता है पेंदा सँकरी होती है) बटरी डाल डाइन पटरी बनायी जाती है। बड़ा चंगेरा या मनौटा ज्यादा अनाज रखने के लिए और छोटी डलिया मौनी फुलुकी, घट्टा, छबड़ी थोड़ा सा कुछ रखने के लिए।

चौड़े मुँह वाले टोकरों का ढाबा, ओड़ धामा कहते हैं अरहर की पतली नरम बातियों (लौदा) से बने खाँखर टोकरे (भुस आदि ढोने के लिए) खचा, खाँचा, छबड़ा उससे छोटे खँचोली, पयन्नी नोनिहारी, दमहरिया कतना, अधोड़ी, उससे छोटी और कम गहरी टोकरी खाँची, डेला, मल्ली। राछ ओसाने के लिए छींटा काम में लाया जाता है।

ताड़ खजूर के पत्तों की डलिया, बोइया कुना, कुनिया टोकरी, ठवा चंगोर ठौवा कही जाती है। आकार में छोटी फूलडाली, डलिया, साजी, पान डलिया, मटोर भी [illegible] जाती है।

पतले वारी की सींक या बाँस की बड़ी डलिया डगरा डाला, धौया (पश्चिम) कही जाती है और सींक की बड़ी डलिया (चौड़ा मुँह और छोटी पेंदी वाली) सिकहुता, सिकौया सिकौची, कुरई या डौकी या टापरा कही जाती हैं। बन्द मुँहवाली गोल डलिया झापी या झाबा, पेटारी, पौतिया या पौती कही जाती है। इसमें स्त्रियाँ अपने साज सिंगार का सामान रखती हैं, इनका ढक्कन झाप या पेहानी कहा जाता है।

मछली पकड़ने के काम आनेवाली टोकरी टाप, टापा, टापी, गाजा, सरला, अटा परवे, थोका आरसी, पेरवा, सरा छोपा या छोपी कही जाती है। सुराहीदार गर्दन वाली लम्बा टोकरी को भौकी या पिदडू (पश्चिमी) कहते हैं खाद या गोबर फेंकने के लिए खाँची तरौना, भोगिया काम में आती है। बकरी के बच्चों, मुर्गाबिया को ढक कर रखने के लिए टापरो टापो खोपो या झापो को उपयोग में लाते हैं। टोकरी को पेंदी छितनी या छितरी कही जाती है। पोस्त की खेती में पोस्ता खोदने के लिए तरछा काम में लायी जाती है।

मछली पकड़ने के लिए कई किस्म के जाल बनते हैं। सबसे बड़ा जाल महा जाल कहा जाता है। एक आदमी की सँभाल में आने वाला जाल जिसमें छह डंडियाँ रहती हैं कुरल या सरल कहा जाता है। उससे छोटा बिसारी त्रिसार या बिसरी या सनसारी या थोया फिकने वाला जाल फेकज खेप घुमौआ जाल या खपियार या फँदा कहा जाता है। लोहे या मिट्टी की जो छोटी गोलियाँ बँधी रहती हैं उन्हें बटियन पौंडी बटवन या भोटिया कहते हैं। दो लग्गा पर टिके जाल को (जिसे दो मछुए सँभाले रहते हैं) डोडा कहते हैं। दूसरे छोटे किस्म के जाल घनली, पसरा और गिरगिरा कहे जाते हैं।

पशुओं को खिलाने के लिए जालीदार झोला जल्ला कपाई या जाला कहा जाता है। दही जैसा सामान ऊपर बत्ता समेत टाँगने के लिए सिकहर छींका, सींका या खाजों काम में लाते हैं। सिकहर को बँहिगा में लटका कर भारी समान भी ढोया जाता है। जलखरी में आम आदि फल रख कर ढोते हैं।

अन्त में अहिंसात्मक किसान के हिंसात्मक हथियार, जो उसके साथ बराबर रहते हैं खेत जोतने या हेंगाते समय उसके हाथ में पना या डंडा या साट रहता है। उसके कन्धे पर लाठी (सोर, गोजी, सबदा), जो कमजोर हुआ तो उसके हाथ में सिर्फ छड़ी या छकुनी या छाकन या पटकन, बुड्ढा के हाथ में ठेंगनी. ठेंगुनो लँगड़ा के हाथ में बसाखी। भारी लाठी बोंग या बजरबोंग कही जाती है। चिरे बाँस का डंडा फट्टा या फराठी कहा जाता है। बहुत पतला सोंट

१७

गाय-भैंस : धन-धरम

गाँवों में गाय भैंस ये ही दोनों दूध के मुख्य साधन हैं, पर महिमा सबसे अधिक गाय की है। वह हिन्दू जीवन में पूजा की वस्तु है, माता के तुल्य है। गाय रखना हर गृहस्थ धर्म समझता है। गाय का लक्षण बैल की ही तरह उसका गलकम्बल या सास्ना या कमली या ललरी है। उसकी पहचान मुख्यतः रूप रंग, सींग, आँख और थन या ऐन से की जाती है।

जिस गाय की रीढ़ की हड्डी ऊपर निकली सी दिखाई देती है, उसे बासडी या कुबड़ी कहते हैं। काली आँखों वाली कजली, लाल रंग की गोली या लल्लो (रोहितवर्णा), सफ़ेद रंग की धौरी, काले रंग की श्यामा या कृष्णा या काली, अत्यधिक काली श्यामकाली या मुसकाली, सफ़ेद और काले रंग की धारियों वाली कबरी या चितकबरी, कुछ सफ़ेदी लिये सिलेटी रंग की सोकनी, कई रंगों वाली छर्री, भूरे रंग की भूरी या कपिला, सफ़ेद पुतली वाली कडजी या कजो, केवल लिलार पर सफ़ेदी वाली टिकरी या टिकुली या चँहुली, स्यार जैसे रंग वाली पियरी या सिरकटी, कुल सफ़ेद खुर वाली चरनामिरती, सफ़ेद पूँछ वाली चँवरी, कटी पूँछ वाली बाँडी, और लम्बी पूँछ वाली तरवामारनी, टूटे सींग वाली ठूँडी, बड़े सींग वाली डूगी या बड़सिंगी, आँख के ऊपर झुके सींग वाली लखी, मैनी या भागवन्ती, छोटे सींग वाली मुड़ी या मुड़िला, छोटे और हिलते सींग वाली कपिला और कान के पीछे चिपके सींग वाली कनचिपकी कही जाती है।

छोटे क़द की नाटी या नटुली, ऊँची गाय बरधगाय, सींग मारने वाली मरखनी या मरकही, लात चलाने वाली ललही या लतखनी, धक्का देने वाली झारनी और फुंकारने वाली फुरकनी, हरे खेत पर टूटने वाली हरही या हरिया, लाल

१८

खेती के साधन : औजार

सब से मुख्य साधन है हल (हर लांगल), पुराना हल लिनौरी ठेंठो, ठेंठा, सुठहरा और नया हल नरठा, मोठा, मध्घर, कहा जाता है। हल का पूरा सर जाम साज या सांगह (<साज) भी कहाता है। हल के मुख्य अंग ये हैं, हल (बुड-ब्रज) हरिस, (हरस, ईस सांड़, हस ब्रज) मूठ (परिहथ, लागन, लगना हतकरी, या हलेठी या हतिया—ब्रज) फार और जुआ (पाली, जुआठ)। हल की मुठिया पर किसान का हाथ टिकता है और इसी के साथ वह हरपगहा या हरबागा को बाग भी सँभालता है। हल की मूठ चांदी और बेंतुली भी कही जाती है। हल या कुड के निचले हिस्से (डोरा या नासा) में एक भारी और नुकीली लकड़ी एक छेद में ठुकी रहती है उसे पनिहारी या कदभार या कढ़आरी या खूरा जोंका, चोभी या गासी कहते हैं। पनिहारी के ऊपर लोहे का एक नुकीली पटिया लगी रहती है जिसे फार, फरिया कुसी, या परिया (संस्कृत में फाल और स्तेग शब्द हैं) या फाला या लोहामा कहते हैं। पनिहारी का ऊपरी हिस्सा पाठ चूरा या पया, पय के ऊपर चली, पाचड, उपरपाटी या फाना या पचमासा—इसे कसा रखने के लिए और हरिस को सँभालने के लिए जो खूंटी ठोकी जाती है उसे बरनी बड्डर (ब्रज), मोल्हरू बरन, सतघरिया समघर या तरली या हुमना कहते हैं।

पचमासा ढीला हो जाने पर हल ढमिल जाता है, पनिहारी गिर जाती है। हरिस के ऊपरी सिरे की ओर लोहे की तान खूंटियां गड़ी रहती हैं। इन्हें गूल, डील सेढ़ा, खोढ़ा या लाडी कहते हैं। इसके नीचे जुआ रहता है, जुआ की निचली डंडी तरसया, जुआ के दो सिरे पर की खूटियां सला, समैल, पलल,

या कनकिल्ली और भीतरी खूँटियो को समैया या सिझ समैल कहते हैं। जुए के बीच चमडे का पटार का बना एक फदा पडा रहता है, जिसे नरा, नारा, नडा (पश्चिम में) नारन, लरनी, नाधा, नरली, हरनाधा, दुआली, डाडा या लेधर (पूव में) कहते हैं। ये फदे हरिस की तीन खूटियो में फँसा दिये जाते हैं। पीछे की ओर फँसाये जायँ तो हल खडा हो जाता ह (खेहा हो जाता है) और आगे को ओर फँसायें तो हल करारा या कर्रा (कडा) हो जाता ह और आगे बाँधे तो हल और गहरा और कडा चलता ह। इसी को तरख लगार, औगार, आरा, ठाढा या गरारा भी कहते हैं और हल्की जुताई को सेव भी सेहा कहते हैं। जुए का पाट पत्ता, वल्ला या पलई या पाता भी कहा जाता ह, जुए का हरिस से बाधने वाली रस्सी महादेवी या मॅझवार पर रहती ह, जुए का सिरा खाडी, सिमल, कनौसी नकटी कहा जाता है। बछो को जुए से जोडने वाली रस्सी जोता (<योक्त्र) कहा जाती ह।

कभी-कभी हल में एक टार डाडी या टरसुई लगा दी जाती है और एक पोला बाँस बासा (पूरब), वाला, हरचाडी या नजारा लगा दिया जाता ह, और मुँह (मल्या माला, पला, पइला माली, अवरी, उवरी) में अनाज डाल्ते रहते ह, बुआई और जुताई (सीता बनने का काम) एक साथ चलता रहता ह। फार पर सान चढाने को धार पिटाना, धार फरगाना, धार असराना, धार पजा बना धार बनाना भी कहते ह।

हल के बाद फावडा (फौरा, फमरा, वस्सा पुदरा, फहोडा फड़्हा कुदार दाम, झामा,), कडी खुदाई के लिए ओभी, खुसी या खुदनी, पतली धार वाली कुदाली ठेंठी कुदाली वसिया कुदरिया और छोटे बेंट वाला खुरपी या खुरपा काम में आते ह। फावडे का लोहे वाला हिस्सा फार छुद्दा कुरदा या फरी कहा जाता ह, पीछे का ऊपरी हिस्सा कठी या मुँद, मुँद में ही छेद होता ह, जिसम बेंट (लकडी का) ठुका रहता ह। बेंट लोहे क पार के भीतर वाले छेद (पासा) में ठोका जाता ह। छेद के बाहर निकला बेंट का हिस्सा हूरा मुठा, एडा या अडानी कहा जाता जाता ह, फार का अगला हिस्सा धार या फरी। खुरपा की धार पासग या अगेल और पासग में लगी लोहे की मुदरी साम चुरिया, स्याम या स्यान कही जाती ह। फार का जो हिस्सा बेंट के अन्दर घुसा रहता ह, उसे पेंचौदा चका या चचुआ नार डडी या डाडी कहते है मुडी धार वाली खुरपी पसना या बेंकुआ कही जाती ह।

जुते खेत जो चौरस करने के लिए बाँस या लकडी का पाटा काम में लाया जाता ह, इसे हगा, चौकी पटका लगावरो (पूव में), सुहागा पटेला, य

साहिल (पश्चिम में) कहते हैं। दो बैलों द्वारा सँभलने वाला पाटा ड्गोरी, एकहरा, दोबरधा, चार बैलों द्वारा सँभलने वाला चरगोडी, चौबरधा दोहरा कहा जाता है, खूँटियों (सड़सा, गुल्लिया खील्हो, अकोरी, कौड़ो-ब्रज) में फँसायी लम्बी रस्सी बरहो, हेंगहो सींकड़ चौक्नारल, काढ़ (ब्रज), जगडोरी कही जाती है। चमड़े की डोरी मझोतर, मारितर मेढ़न, मैरन बाँस के छग्गा की फसान कुडडो, बँसजोती, या अरोआ कहा जाती है।

फसल काटने के लिए दराँत (हँसुआ, पथरिया—भारी धारवाली, बघरा बर्घारया) काम में लायी जाती है। दाहा (दाब, डाब सागिया, चिल्लोही, कत्ता, बघाचा बाँक) से पेड़ों की शाखाएँ काटी जाती हैं और इसकी धार घण्टाकार न होकर सीधी होती है। गँडासी या गँडासा से चारा काटा जाता है। हँसुआ में लकड़ी का बेंट होता है और धार या माग होता है। धार को डाँडी, माव या भरिया या मरर या सार भी कहते हैं गँडासे का दस्तूना (लकड़ी वाला हिस्सा) मुँनरी जलिया या हत्था या जारा कहा जाता है। इसी में मूठ या बेंट लगा रहता है मूठ में लोहे की धार का जो हिस्सा लगा रहता है उसे खूक छुरा, छुरी, गोडा या घोमी कहते हैं। दस्तूना में ये ठुके रहते हैं। गँडासा लकड़ी के ठीहे (परिकठ) कुटकहना निसुहा पर रख कर चारा (छाँटी कुट्टी, करबा) काटते हैं।

लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी (गँता टाँगा टेंगुली गती) का प्रयोग होता है कभी-कभी खेत से घास-पात खसोटने के लिये कादो। खसोरला, पचफरिया या गेल्हनी जैसे औजार काम में लाये जाते हैं। खूँटा आदि गाड़ने के लिए जमीन में गहरा सूराख करने के लिए खन्ती काम में लायी जाती है कुआँ खोदने के लिए खनना तरद्दो छोटी, कठुली, पथिया या तगाड़ी काम में लायी जाती है। पानी का पता लगाने के लिए सूटा गजाड़ा, खोभना खोमना या लरहा (भाले की शक्ल का औजार) काम में लाते हैं। डाल पर से ही फल तोड़ने के लिए अँकुसीदार लग्गी या लोचीनार लग्गी काम में लाते हैं, इन्हें लगुसी और जलसारी भी कहते हैं।

गन्ना आलू आदि की खेती में क्यारी (कियारी गहारी) बनाने के लिए लकड़ी का फरुही या फरुहा या पँचली काम में लाया जाता है पानी उलीचने के लिए हत्था, थामा या कटोआ या छिट्टा काम में लाया जाता है।

१९

फसलों के दुश्मन

फ़सलों को क्षति कीड़ों मकोड़ों से जंगली जानवरों से जंगली घासों से तथा रोगों से पहुँचती है। जंगली पशुओं में नीलगाय, हिरन, लकड़बग्घा सुअर, स्यार (सिरकटा, गीदुआ, सियार), लोमड़ी (लुखटी, पयाउरी, लुखरी) प्रमुख हैं। स्यार और लोमड़ी कभी-कभी खेत में ही माँद या मान बना लेते हैं। खेतों में चूहे भी बिल बना लेते हैं और ये सबसे बड़े दुश्मन होते हैं।

कीड़ा मकोड़ों में टिड्डी सबसे प्रमुख है, जो बैठा तो खेत चट कर गयी। और कीड़ों का विवरण इस प्रकार है।

अखपुट्टा—टिड्डी की आकृति का कीड़ा जो एक पत्ती से दूसरे पत्ती पर फुदकता है और पत्ते चट कर जाता है। यह चौड़े पत्ते वाली फ़सलों पर लगता है।

कम्मा या थमुआ—एक भिडार (चिकनी-सी) जो तना पर चिपकी रहती है।

कपटा, कट्टा या कटठा—नये धान और बाजरा ज्वार को खाने वाला फुदकने वाला कीड़ा।

कटुई—एक क़िस्म का गुबरैला जो धान में लगता है।

कल्लरिया—अरहर में लगने वाला कीड़ा।

किरौना कीरी, गंधा काड़ा, गंधकी भमरा—हल्के हरे रंग की दुर्गंध देने वाली एक क़िस्म की मक्खी जो धान को बरबाद कर देती है। यह प्राय एकदम पौधे से चिपकी रहती है।

कुकुही—जाड़े की फ़सलों में लगने वाला कीड़ा।

घुघुरी या घुरघा एक गुलाबी रंग की गिडार जो कपास को काना (खराब) कर देती है।

घाइमा—एक काला कीड़ा जो बखार में रखे अनाज को खाता है, पोला कर देता है, घुनार देता है।

सफेदिया या गदरा—एक सफेद कीड़ा धान में लगता है।

गदही या गदहिया या गधेला—चना या मटर की फ़सल को बरबाद करने वाला कीड़ा।

गादुर या बड़ा चमगादड़ चना और मटर को बरबाद करते हैं। एक क़िस्म की आमना गिडार मकरा के तने नष्ट कर डालती है। गभरा भुट्टे वाली फसल में, ज्वार, मक्का, बाजरे में लगता है। गिडारों से नष्ट की गयी फ़सल गिडरियाई या खोखा कही जाती है। ज्वार के कटेरे में या गन्ने की पोर (पँगोली या पोई) में सरइया नाम की एक छोटा गिडार लगती है और इन्हें खाली कर देती है। गौंछी जाति का गुबरैला धान को बरबाद कर देता है। घँघरी, घोंघरी या घोघड़ी नाम का कीड़ा चना और बाजरा की फसलों का दुश्मन है। घुन बखार में रखे अनाज और काठ में लगने वाला कीड़ा है, जो भीतर ही भीतर खाता जाता है। चपा एक काला कीड़ा है। चपटना धान में लगने वाली एक क़िस्म की हरी मक्खी है। छपटा, पतकट्टा या पचकट्टा धान में लगने वाला कीड़ा है। तम्बाकू और कपास में छीरा या छीरी या छेंडी या कन्ही या कनाठा लगता है। झिल्ली या फुलभगा मटर, चना और अरहर के पौधे में जब लगता है तो पत्ते सिकुड़ जाते हैं। टीडा या टाड या पिटोई गहूँ और ईख की जड़ को नुकसान पहुँचाने वाला एक हरा कीड़ा है। तेला नामक कीड़ा कपास के फूलों और पत्तियों को चट कर जाता है। तुरकी कपास की पत्तियों को नुकसान पहुँचाने वाला दूसरा कीड़ा है। दीमक या दँवका, दायाँ या दियार तो प्रसिद्ध ही है। पकनी या पखिया सिगाड़े की फसल को बरबाद करता है। पिल्लू या पिलुआ (एक सफ़ेद कीड़ा) कपास को क्षति पहुँचाता है। बखार में रखे धान में पेटाढी, पटाढी या पटारी नामक कीड़ा लगता है तो धान पइया (खोखला) हो जाता है। पटरही नामक लाल कीड़ा चना, कपास और अंडा में लगता है और पत्तियों को कुतर कर जलनिया डालता है। बालियों वाली फ़सलों में पइया लगता है। ईख के पत्तों को फतिंगा और गहूँ, जौ और चना की जड़ों को फभगी बहुत खाता है—ये तोते की उपमानियाँ हैं। बखार में रखे अनाज में एक किस्म की गिडार लगती है उसे फाड़ा या फाँड़ी कहते हैं। धान में बकुला या बक्की या बुढ़िया या बरैया या भजरी नाम का एक काला कीड़ा लगता है, इसी की एक

बडी क़िस्म बाका ह। दलिहन, दाल वाली फसला की पत्तियाको सिकाडने वाला एक और कीडा ह जिसे बालू, बलुआ या बाला कहते ह। भरका धान में लगता ह। अडी और अरहर में भुआ, भुइली, भुरिला या भुरिली नाम की राएदार कीडी लगती ह जो आदमी का देह से छू जाये तो भयकर खुजली पैदा करती ह। सूखा पडने पर ज्वार बाजरा में भेंडा या भेंडवा या भँवरा लगता ह। ईख की जड को कुतरने वाला एक कीडा ह मॅगरा। सरसो में काफी पानी बरसने पर माहो या माऊँ लगती ह, चना अल्सी में लाहो लगती ह। गन्ने में सफेदा नामक कीडा लगता ह और पत्तिया को चलनी बना डालता ह। चना में लरका या लुखटा भी लगता ह। ईख, चना और मटर तीनो में सुरका या सिरका या फनिगा नामक कीडा लगता ह, ता पत्तियो का एकदम साफ कर जाता ह। सूँडा और सूँडी गिडार की क़िस्में ह। हथिया नामक कीडा धान में लगता ह।

एक कीडा विलक्षण ह। यह गुबरला जाति का ह, इसे लक्ष्मिनिया कहते हैं। अनाज की ढेरो में इसके रहने से गृहस्थ समझता ह कि अनाज का भडार हमेशा भरा रहेगा।

फसला के दूसरे दुश्मन रोग ह। मुख्य रोगा का विवरण इस प्रकार ह

सूखे पछुआ की कृपा से झँगरा या झरका या मुरका नामक रोग लग जाता ह और असमय में फसल को सुखा देता ह। धान में अरया या पुआरी लगती है। धान के पौधे में ही कतरी रोग लगता ह ता पौधा पनप नही पाता। रोपा हुआ धान जब कुश की तरह बढने लगता ह ता उसे कुसियाना या कुसवटना कहते हैं। धान में कोइली, कोढ़िया या कलिया रोग लगने पर पील धब्बे डठल पर पडते हैं और पौधा सूख जाता ह। धान के पौधे में लगने वाले कुछ दूसरे रोगो के नाम हैं चरका, टुनकी, फटहा या फटठा और भरकी। अधिक तेज पुरवा हवा के बहने पर धान में मजरी को बिखेरने वाला तडा राग लग जाता ह। मक्खियों से आक्रान्त धान का मखियाया या मछियाया कहते ह। अधिक वर्षा से जरगली रोग हो जाता ह। धान को बाली में फाटो, खरा या खरो रोग लगते हैं। खैरा के कारण बाली कत्थई रग की हो कर पकने से पहले ही सूख जाती ह।

धान ज्वार बाजरा और मक्का इन सबमें दक्खिनी बयार के अधिक बहने पर दखिनहा, नीमा, सिरोरा या पीरो रोग हो जाता ह जिसके कारण सफ़ेद-सफ़ेद दाग़ पड जाते हैं और फ़सल मारी जाती ह। हवा तेज बहन पर कभी-कभी फसला में छोटे छोटे कछे फूटते हैं और पौधों की बाढ मारी जाती ह इसे गोभी रोग कहते हैं। सारी फ़सल का एकदम झुलसा जाना झुलसा, मुआर, मरी, चतरा या गरहिला पडना कहा जाता ह।

धान की फ़सल के मुख्य रोग हैं, गुलगा या गुलड़ा या चिट्टिया या मुरिया (जिसमें नीचे से ही डंठल सूख जाता है) कनुआ (पौधा पाला और छोटा पड़ जाता है) गंडार या गेरुआ (जड़ में लगता है) पोंढ़ी (पौध से नया कल्ले का निकलना) कपास, गन्धी (मक्खियों का चिपकना) चित्ती (चित्तियाँ पड़ना) परिहल्ला (सड़ना) पका (अपने हिस्से का गूदा सड़ना), फटा, फूला, भौंरी रौंधा, छत्ता और सराई।

जौ-गेहूँ की फसल के मुख्य रोग ये हैं—पाला के कारण उकठा, लू के कारण उतरा या उपसा या उकड़ा, अधिक वर्षा के कारण हरदा (हल्दी की तरह पीला हो जाना) ऐंठा या बँधा या सकोरा (पत्तियों का सिकुड़ जाना), बहरा (पछुआ के आधिक्य के कारण जमीन पर गिर जाना) गरई (बरसात के बाद पुरवाई के चलने से पौधा गहरे रंग का हो जाता है और बाल काली पड़ जाती) सेंदू (दाने काले पड़ जाते हैं) समका (फूल मारा जाता है) ललकी (बालों में दाने नहीं पड़ते) और सँड़ा या नेड़ा (बालें पूरी नहीं गभराती और स्याह पड़ जाती हैं)।

तम्बाकू के रोग इस प्रकार हैं कचोहा (फसल अधपकी ही तैयार हो जाती है) हड़डा (एक सफ़ेद नया तना निकलने लगता है और मुख्य पौधा नष्ट हो जाता है)। मूँगफली में चितवा या हलदई रोग लगता है तो पत्तियों पर काले पीले धब्बे पड़ जाते हैं। बाजरे, मक्के और ज्वार में जब फूल झारने वाली बयार बहती है तो फुलझोंका रोग हो जाता है। ज्वार बाजरे में कडुआ रोग लगता है तो बाल मारी जाती है। मारा गया बाल का बर्रा कहलाता है। इसमें दाने नहीं पड़ते। मक्का में झुलसा रोग लगता है तो डंठल पर पीले धब्बे पड़ जाते हैं। गुड़ा रोग के कारण बाल वाली कलगी (कोष) टेढ़ी पड़ जाती है। कपास की फसल में चटका रोग लगता है तो फूली (पुरी) झड़ जाते हैं। मक्का ज्वार बाजरा में औरंग या गपतू या खमनी या ठठियारा रोग लगता है तो सफ़ेद दाग डंठल पर पड़ जाते हैं। अफीम या पोस्ता की पत्तियों में जाला या पचलन या खरुआ या मुरका लगता है। चने में उकसी रोग लगे तो फली नहीं पड़ती। गाजर में जब गाँठ पड़ने लगती है तो उसे गराव कहते हैं। लौकी, तुरई आदि बेलों में लटकी, बुकनी और बिरसा नामक रोग होते हैं। मिर्च में बोंकी रोग हो जाता है (पत्तियाँ ऐंठ जाती हैं)।

इस रोग के बाद क्रम आता है जंगली घासों का, जिन्हें निराया न जाय तो वे फ़सल को दबा दें। मुख्य घासों के नाम इस प्रकार हैं

अकरा या अकटा या अकरी—गेहूँ जौ के खेत में उगती है।
अगिया—धान कोदो को जला डालने वाली घास है।

उखड़ा या हुडढा या बुधिया एक फैलने वाली लतर ह।

उरकुसी या बिछौतिया या भडभांड या ठोकरा पोस्ते को खाने वाली घास है।

बकना या बनसारी फसल को जकड कर बांध लेती ह।

कठरेंगनी या रेंगनी या नरछिकनी एक क़िस्म की जगली पोस्ता ह जो अनजुते खेतो में फैली रहती है।

फाना, कना, कनवा या फेना धान के खेत में उगने वाली घास है।

कोसो, कनसन या कांस लम्बा खर है जो कुआर में फूलता ह और प्राय नदी या तालाब के किनारे लगता है।

गोरखुल, कोसी, कोइलखो या गोखुला धान के खेत में उगने वाली घास ह।

खरयुआ, बथुआ खरका या मोचट्टी रबी और पोस्ते की फसलों में उगता है। इसकी पत्तिया का साग भी बनाता ह। पोस्ते के खेत में सी खरका, मछता चमारी भी उगती ह। धान के खेत में गाडर गडार या गडहर या चमार गडार नामक की एक लम्बी घास उगती ह और सारे खेत पर छा जाती ह। गेडहरुआ या गढरी गेहू जो में उगता ह। चपडा, धुरप या धूरमा ऐसी परती में उगती ह जो पानी में कुछ समय तक डूबी रहे और बिना गहरा खोदे यह परती नही टूटती। चिचोर, चिचहोर या लेंडई तालों में होनी ह और धान की फसल को अधिकतर दबा देती ह। गेहू में उगने वाली एक घास ह, जिसे चौपट्टा, पिपरा, पपरा, तितिली या पुपरा कहते ह। दूसरी घास जो गेहू क खेत में अधिकतर उगती और गेहूँ की शक्ल से मिलती-जुलता ह वह गोहुँआ ह। जँगला झिरुआ या झीरा घास धान में होती ह। जम्हार, जाम्हर, डम्हरो या जिहार एक कडी जिस्म की घास ह जो खराब और बजर धरती में उगती ह। झरँग या झरँगा जगली किस्म का धान ह, जो फ़सल को दबा कर खुद फल जाता ह और पकते ही झड जाता ह। डर या औरा या मोथा (<मुस्ता) सबस अधिक जड पकडने वाली घास ह गुडाई करने पर भी वह नही जाती। इसकी जड बडी जालीदार होती ह और उसमें एक भीनी गध भी होती है। डाभी एक कडी क़िस्म की दूब ह, दूब स्वय बडी प्रचड बेहया घास ह। बँसौता या बसाढी एक क़िस्म का जगली बाँस ह जो खेतों में बहुत जल्दी फैलना शुरू कर देता ह। भंगरा या भँगरया धान गेहूँ में उगती ह, यह जमीन पर पसरती या फैलती ह। मकडा और राडी परता में उपजने वाली घासें ह।

जिस फ़सल की बाढ मारी जाता ह उस घटी, ह्रासिल, सिदुरियाई, ततुरियाई, सुतरियाई, ठिगुरियाई, भेंटयासी कहा जाता ह। पाल स मारी फ़सल

ठरियाई, बिरनियाई और सूखे से मारी फसल मरायल, कोइल, मुआर, मुरार, चुचुहिया या वाकठा कहा जाता है। रोग लगी फसल झबदा या भखियाई, दग दार, जरूरत से ज्यादा फला या बडी फसल घघाई कही जाती है। जब दाने न पडें तो फसल पइया, भोर या कौरायी, बायासार, दहाई, बासी, खुक्खा, अलगल या खोखडा कही जाती है। बाढ से मारी फसल दहियायी या दही या दहारी कही जाती है।

पशुओं से रूँदा फ़सल घुँगठी, घँगायी, लहनायी, लुरखुन, खोंची या निपेस, हवा से जमीन में लोटी गिरी या खसी, गरम हवा से झुलसी फ़सल झोलाई या झोकराई और ओलों से बरबाद हुई फसल चोटी कही जाती है। इन तमाम ईतियों भीतियों से बच कर कहीं फसल पूरी उतरती है।

● ●

१०

घर-द्वार

भारतीय किसान स्वभाव से घर द्वारी होता है उसका दरवाजा हमेशा खुला रहता है, उसका घर हमेशा भरा रहना चाहता है। घर के आगे सहन होती है, घर के बाजू में चौपाल या खुला छप्पर का चौबारा, द्वार के समीप का कोठा पौरा, घर के सामने कभी कभी चबूतरा और चबूतरे के ऊपर नीम की छाया, घर से जरा हट कर पशुओं के बाँधने की जगह घारी, घर के पछीत में पिछवारा, जहाँ एक छोटा सा घेरा या बेढ़ा या कोला या बगिया होती है, घर जमीन की सतह से कुछ ऊँचा होता है मिट्टी या मिट्टी की भराई करके कुर्सी बनायी जाती है, आगे निकला हुआ खुला हिस्सा गुलामगर्दी कहा जाता है और घर के मुख्य द्वार के आगे का खुला हिस्सा बरामदा या ओसारा या ओसारी कहा जाता है, बरामदे के दोनों ओर छोटी कोठरिया भी कभी कभी होती है। सम्पन्न किसान के बरामदे एक ओर तोरणयुक्त या मेहराबदार खम्भों या पायों और दूसरी ओर भीत पर टिके होते हैं, बरामदे के पीछे बैठक होती है, बारह दरवाजे वाली बारादरी होती है। द्वार पर चौखट जड़ा दरवाजा होता है, बड़ी बखरी में इस के भी पहले एक पौर द्वार या सदर दरवाजा होता है, चौखट के दायें-बायें बाजू कोरे (द्वारोपान्त), कोरे और चौखट के बीच में दीवार की किनारी धारी या झड़प चौखट की ऊपरी लकड़ी उतरंगा, नीचे की देहरी (देहली) या लतमरुआ, दाइं बाइं ओर की लकड़ियाँ बाजू या थान कही जाती हैं, कहीं-कहीं उतरंगे में गणेश या लक्ष्मी या दोनों काठ में खुदे मिलते हैं और बेल या कँवल-पाति या पुरइन आदि भी उत्कीर्ण किये जाते हैं चौखट के पीछे दो किवाड़ होते हैं जिसकी आड़ी या बेंड़ी पट्टियाँ बेनी और सीधी पतली पट्टियाँ चत्ता कही जाती हैं, किवाड़ों को

जोड़ी तिवेनिया या पॅचवेनिया होता है या फिर शाम होती है। इन बनिया को जोड़ने वाली या विभक्त करने वाला लकड़ियाँ पुत्तीमान, पुतोमाना के ऊपर मुहीन्दर किलौट जड़ जाते हैं समूचे निचाड़ को पल्ला कहते हैं। बरामदे के खंभे लकड़ी या ईंट या पत्थर के होते हैं इनके ऊपर भी काष्ठकार्य होता है खम्भे का ऊपरी हिस्सा बरगा, बीच का डाँड़ी (इसमें पहल या धारियाँ भी होता है) उस के नीचे मुटकी और सबसे नीचे ढाल या टाप होती है। खम्भो के ऊपर मेहराब या तोरण (प्राय मकराकृति कारबाब से युक्त) होती है, खम्भों के नीचे लकड़ी या पत्थर का पटिया का दासा होता है ऊपर भी खपरैल या छप्पर वाले घर में एक दासा होता है।

द्वार के पीछे का घर डवढ़ी, दुआरघर (द्वारगृह) या डोगहा या दुआरा या दुआरी, उसके बाद का हिस्सा घर का भीतर (अभ्यन्तर) का हिस्सा होता है किसी किसी सम्पन्न मकान में दो दो तीन तीन खंड होते हैं और तब दो दो तीन तीन डेवढ़ियाँ और दरवाजे होते हैं। घर के भीतर आंगन आंगन के चारों ओर ओसारी, एक ओर कभी कभी ओसारी के पीछे दालान या चौसरा या चौकड़ा (चतुःशाल) होता है, इसमें चार द्वार होते हैं, वहीं तीन द्वारों वाली तिदरी दालान भी होती है। आंगन के एक या दो बाजुओं में या चारों ओर कोठा या ऊपर का खंड भी होता है, जिसके लिए सीढ़ी बनायी जाती है। आंगन के दक्खिन पूरब कोने पर भनसा या रसोई या चूल्हाघर होता है पश्चिम की ओर कोठारघर या भंडार घर होता है जिसमें अनाज के कुठिले, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ रखी रहती हैं इसमें टाँड बना कर काफी सामान रखा जा सकता है इसमें अनाज के बखार (बाँस के बने), ठेक (चटाई का बनी), डेहरी (कच्ची मिट्टी की) या कुंडना (पकायी मिट्टी की) रखी रहती है। डेहरी का ढक्कन पिहान तला पेंदी और जिस छेद से नीचे अनाज निकाला जाता है वह आन कहा जाता है। बड़े घर में पूजा घर दही घर और कोहबर घर भी होते हैं।

घरों का छाजन छप्पर या खपरैल या छतनार होता है। छप्पर की छाजन का प्रक्रिया इस प्रकार है खम्भो या थुन्हियो पर पहले चिर बाँस की फाँतियों और बाँस की कड़ियों (कोरो) का ठाट बनता है यह ठाट बड़ा रहा तो धरन के ऊपर टिकाया जाता है छोटा रहा तो बड़ेरी या बड़ेर के ऊपर धरन के ऊपर एक छोटी सी मलग्गम नाम की छोटी लकड़ी जड़ी जाती है, उसके ऊपर आधार दड के रूप में सरही सरही के ऊपर बड़ेर बैठायी जाता है छप्पर की छाजन या छवाई काँस, मूज पतेल (सरकंडा) या सरपत या खर से की जाती है, सरपत को ढरी पूला या मरी कही जाती है पूला को बाँध कर जुट्टा बनाते हैं, छप्पर छाने वाला छवइया या घरामी कहा जाता है, छप्पर को रस्सी या

जोड से जगह जगह बाँधने वाला तँगइया। बाँस की ठाट के दायें बायें खुट्टे के साथ बाँस की पच्चटें बाँध दी जाती ह इन्हें मझोता कहते हैं। छाजन ओरी से शुरू होती ह खम्भो के ऊपर पँसडोर, उसके ऊपर ठाट, ठाट में कोरो और पाठी के ऊपर छरन (बाँस की कन) ठाट के ऊपर जब छाजन हो जाना है ता छाजन समेत पूरी ठाट चार कहा जाती ह, चार के दो लम्बे पक्ष दुचारा और चार के दो छोटे पक्ष डनी, चार के ऊपर वाला हिस्सा मागर कहा जाता है सबसे ऊपर की छाजन सरवतनी कही जाती ह। केवल दो पाखा वाले छप्पर (खुले मुँह वाले) दुपलिया या पलानी कही जाती ह।

खपरैल का छाजन में बडा सँभालने वाली दीवाल भीत और बँडेर सँभालने वाली पाखा कही जाती ह। बरामदे की छाजन में खम्भा के ऊपर दासा, दासे के ऊपर कोरो को ठाट, कोरो को पवित्र को बेडे सँभालने वाली सरदर और सरदर क नीचे सडक इस तरह से लकडिया जोडी जाती ह। कोरों या कडियो का आगे का मुँह बाधने वाली लकडी मोहब्बत और द्वार क अलावा तीन बार कडियो को टेकने वाली लकडी टोडिया या घोडमुहा कही जाती हैं। कडियो को बँडेर के ऊपर कील से ठोक कर जडा जाता ह। बडे कमरे के ऊपर बँडेर के नीचे धरन भी होती ह। इस ठाट के ऊपर या तो पटरे होते हं या बास की खप चियों की बिट्टन बिछायी जाती ह। उसके ऊपर खपडों पर नरिया बिछायी जायी ह। जहाँ दो पाखों का जोड होगा उसे कोनिया या कोनसिला कहते हैं। मकान के ऊपर के कोनो पर कलश या कँगूरा रखा जाता ह।

छतदार मकान में शहतीर के ऊपर जुडाई होती ह और ऊपर छत का किनारा मुडेर और बाहर निकली खिडकी या जगह छज्जा कहा जाती ह। पत्थर के काम का ब्योरा एक स्वतन्त्र विषय ह उसे यहाँ छोडना ही ठीक ह। कुछ छतें छप्पर के ऊपर ही मिट्टी रहेसने या लीपने स बनायी जाती हं, कुछ अरहर के ठाट या किरा के ऊपर कुछ नीम या बबूल की चिरी लकडियो किरचों क ऊपर और कुछ बास स पटी जो जाफरी कही जाती ह—और कुछ लोहे की छन के ऊपर भी।

मकान के पीछे का दरवाजा खिडकी और उसके पास का घर पछीत घर या खिडकी घर के पास भूसा रखने की जगह भुसौला (जो अरहर का एक बन्द गुम्बददार या बुर्जदार घेरा होता ह)। पुआल की ढेरो पुजवट, उपला के रखने की जगह गोठौला या बिटौरा कही जाती ह। रसोईघर से धुआँ निकलने की जगह धुआँक्स या तनुआ कही जाती ह। घर के आँगन से पानी के निकास का रास्ता मोरी या पडोह (इसके ऊपर प्राय पटरा पडा रहता ह), छडदार खिडकी जँगला, गोल सुराखों वाली ओट गौखा (<गवाक्ष), दीवाल में रखने

की जगह ताख, चौखट के ऊपर की खाली रखी जगह भारौठा, दीवाल में टाँगने के लिए खूँटियाँ, कपड़े सुखाने की जगह अरगनी, छत के ऊपर से पानी नीचे बहाने की प्रणाली पँवारा या पनारा और किवाड़ी अड़ाने के काम लगाये जाने के साधन सांकल, किल्ली और अड़गड़ा (< अगला) होते हैं। सांकल कुलावे, कुलफी या सटनी में लगती है। किल्ली या बेंड़ा बिलइया में और अड़गड़ा दरवाजा के दायें-बायें दो छेदों के भीतर लगाया जाता है।

इस प्रकार भारतीय किसान का घर ऊपर से बहुत सादा सादा होते हुए भी एक जटिल और सुगठित वास्तु विधान है।

• •

२१

घर के काम-काज

प्राकृत की एक गाथा है—कठकरेजी सास दिन भर एक काम में जोतती रहती है, संझा को एक छन जरा आराम मिले तो मिले। सास न भी हो तो काम ही जोतता रहता है। गाँव की लक्ष्मी की कल्पना ही है सवेरे हाथ में बुहारू (झाडू, कूँचा या बढ़नी) लिये और शाम को देहली पर दिया रख कर हाथ जोड़—यही गृह लक्ष्मी का वास्तविक स्वरूप है। सुबह उठते ही आँगन-ओसारा बुहारकर घरतिन (कुल-वधू) चौके में जाती है, जूठे बर्तन निकालती है अच्छी तरह-बुहारू कर के मिट्टी का घोल पोतना से चौके में लीपती है तीज-त्योहार हुआ तो गोबर से लीपती है फिर जूठे बासन माँजने बैठती है। कुछ बर्तनों की पेंदी लग गयी है। उन्हें झाँवा से घिसना (खाड़ना) पड़ता है। कुछ को उबसन (पत्ता या रस्सी) से माँजती है। किसी किसी को चिक्कनी कालिख छुड़ाने के लिए गरम राखी मलती है। किसी बर्तन की महज जल्वासी मिटानी होती है। किसी को खिकोरना (खुरचना) पड़ता है। फिर इन्हें धोनी है। एक बार और खँगारती है। तब वह गन्दे कपड़े बटोर कर साफ़ करती है। पटक पटक कर (कचारती) पछारती है और जिन्हें अरगनी पर, खपरैल पर छप्पर पर सूखने के लिए पसारती या फैला देती है। तब अधिक जलासू (जलने वाले) बर्तनों पर राख या गीली मिट्टी के लेव लगाती है और उन्हें औंधा कर रख देती है। दूसरे बर्तनों को भी उनका पानी मरक जाये इसलिए एक के ऊपर दूसरे को माँजकर ठढ़िया देती है (खड़ा कर देती है)।

इसके बाद घर में दूध हुआ तो दूध-दही का काम शुरू हो जाता है। भरुका या दोहनी (बाल्टी) में दूध दुह कर आया, वह दूध कड़ाही में औटाने के लिए

रखना, पाथन के लिए अनाज भिगोकर छानना, फिर उसे सुखाना, गोबर के उपले (कंडा, गोइठा) पाथना घर पर मर्दों के न रहने पर पशुओं को सानी पानी करना (खिलाना) और खेत से घास या चारा लाना, पशुओं को बथान पाना (बाँधना) खुलियाना उनको चरागाह पर जाने के लिए खोलना और दूसर सतो के प के करना बयन कभी खाली नहीं है, पर काम करते करते भी कामचोर होती रहती है। हाथ अपना काम करता है, जबान अपना।

नया बरतन प्रयोग में लाने से पहले उसे अँयासा (उडाहा) जाता है, जो बरतन कच्ची रसोई के काम आता है, वह सखरा जो महला भाव की रसोई में काम आता है वह निखरा हो जाता है। पूजा के स्थानों पर संझवाती दिया बालना शाम का पहला काम है रात में कठकरेजी सासों को मालिश करनी होती है, उनके पैर दाबने होते हैं, उनकी पीठ सहलानी होती है, तब जाकर सोने को मिलता है। गिरस्ती का जुआ है ही ऐसा कि जब तक इसे कंधे से बाहर डाल कर पडुआ बैल न बन कर बैठ जाये तक यह चढ़ा ही रहता है और थकान चलने से नहीं बैठे रहने से आता है।

१२

रामरसोई

भोजन के लिए रसोई, भानस, रोटी सामान्यतः प्रचलित है सबेरे का भोजन (या छाक) नाश्ता, पनपियाव, खरपिटाव, जलपान, जलखई, कलेऊ, कलेवा, जलघेराव, खाना, खाना दूनी कहा जाता है, खेत में काम करने वालों के लिए भी पनपियाव या लुकुम या छाक (पश्चिम में) या चबना लेकर उनकी स्त्रियाँ खेत में पहुँचती हैं दुपहर का भोजन खाय खाइक, खका, खया, कलौवा या कलेऊ भी कहा जाता है शाम का भोजन ब्यालू, बियारी, संझौआ, बेआलू या बेरहतिया कहा जाता है, रास्ते का पाथेय (सबल) पाहुर या टोसा कहा जाता है दाल, भात, रोटी आदि कच्चा या सखरा पूडी, साग आदि पक्का या निखरा कहा जाता है। एक बार मुँह में डाला जाने वाला निवाला, कौर, कवर, गस्सा कहा जाता है रोटी का टुकडा टूक, द्रव पदार्थों की इकाई घूट कही जाती है, मजे मजे में खाने को चुगना, चबा चबा कर खाने को कूच-कूच कर खाना, एकदम निगल जाने को घोट जाना, द्रव पदार्थ के पीने को सुडकना या सपकना, अधीर हो कर खाने को गटकना या लीलना, पीछे के दांतों (चौभरा) से खाने का चुभलाना जीभ से खाने को चाटना और बहुत ही भद्दे तरीके से खाने को हूरना कहते हैं। विभिन्न पदार्थों के मिलान को सानना और रोटी आदि के टुकडे करने को तोडना कहते हैं। छूटे भोजन को जूठ या ऊलुस या छोडन कहते हैं। रात या रात से ज्यादा देर रखे भोजन को बसिया, दुबसिया, तिबसिया (दो बेला या तीन बेला तक बासी रखा गया) कहते हैं। त्योहार या उत्सव की रसोई भोज भात, भोज है।

सामान्य रसोई में रोटी-दाल या भात दाल और एकाध सब्जी आती है।

चावल को पहले साफ करते हैं। बिना साफ किये चावल को अखरा, आदट या अँकरी कहते हैं। उसे बीनते हैं, छाँटते हैं और तब दो-तीन बार धोते हैं। जो पानी धोते समय गिराया जाता है उसे चाउरधोअन या धोअन कहते हैं। कभी कभी चावल (प्राय पुराना चावल) पानी समेत बटलोई में चढ़ा देते हैं। इसे बइठउआ कहते हैं और कभी कभी पहले पानी उबालने के लिए रख देते हैं। इसे अदहन या अधन कहते हैं। जब पानी उबलने या बदकने लगता है तो उसमें चावल या दाल (रँधन, राँधी जाने वाली वस्तु) डालते हैं। दाल जब उठती है तो उसे बदकना कहते हैं। तब उसमें हल्दी आदि डाल कर ढँक देते हैं। कभी कभी पानी ज्यादा होने पर चावल में से माँड़ पसाते हैं ताकि भात गीला न होने पाये। दाल लगभग तैयार हो जाने पर उसमें हींग या जीरे की बघार या छौंक या फोड़न देते हैं। दाल दनदना उठती है। सम्पन्न गृहस्थ भात में भी घी डालता है। दाल को भली भाँति चुराया या गलाया जाता है। भोजपुरी में मसल मशहूर है कि पट्टीदार और पहिती (दाल) जितना ही गले उतना ही अच्छा होता है। भात वही अच्छा होता है जो खिला या फरहर हो।

रोटी पकाने के लिए पहले आटा या पिसान सानते या माँड़ते, गूँधते हैं। गूँधने से आटे में लोच आती है। लोच आने पर फिर उसे तोड़ते और मिलाते हैं। इस प्रक्रिया का ईंधना कहते हैं। आटा जौ, गेहूँ, मक्का, बाजरा, बेसन किसी चीज का हो सकता है। गरीब पिसान गोठी या अमोंठी (आम की गुठली) कुसुला, गुम्मा अठुली का भी आटा तैयार कर लेते हैं। सस्ते और रूखे अनाज को घटिहन या कदन्न कहते हैं। गरीब आदमी चाकर या चूनी या कनिक की भी रोटी पाथ लेते हैं। महीन चाला हुआ आटा मैदा कहा जाता है। कूटे हुए जौ (इगुर) की रोटी इगुरी या गुरी, चावल के आटे की रोटी खिरौरा गेहूँ की मोटी रोटी सबौनी, हाथ से पाथी रोटी हथपई, भौरी या कंडों या उपलों की आग में पकाई रोटी फुटहरा, फुटहरी लिट्टी, बाटी, अंगरी या मधुकरी कही जाती है। घी या तेल में पकाया पूड़ी, पूरी, लचुई या सोहारी चावल के आटे की लचुई, चक्रपुरी बहुत मामूली घी में पकायी रोटी पराठा पराठा या पन्टा, घमुई या पोटुई, दाल की पीठी से युक्त पूड़ी, दलही, फूटपूरी बनिया, बरही और भीतर भराव वाली पूड़ी कचौड़ी या बेढ़ई, चाकर मिश्रित आटे की मोटी रोटी मकुनी या टिक्कड़ पानी लगे हाथ से बिना परोथन या सूखी के बनायी गयी रोटी पनपथा या चरिपा या पनकती कही जाता है। बेल कर तैयार की गयी पतली रोटी फुलका, बिना बेले तैयार की गयी पतली रोटी चपाती या रँधा, बहुत छोटी और पतली पूड़ी सोहारी, बाजरे के आटे की पूड़ी टिकिया पहले पानी और फिर घी में सिकी पूड़ी या कचौड़ी फर (भाग गोठा का मिला)

से बनी घी में सिकी रोटी अदरसा और दाल के साथ पकी रोटी ठेकुआ, ठकुआ या अगरोटा या दाल का दूल्हा कही जाती है। पकी रोटी को तोड़ कर उस घी में भून कर चूरमा बनाते हैं।

दाल दो प्रकार से बनती है। कुछ दालें हल्के भून कर दली जाती हैं उन्हें उलवा या उलावल (<उल्ह<ऊष्म) कहते हैं। ये जल्दी चुरती हैं और कुछ दालें अलग दली जाती हैं। फिर कुछ दालों का छिल्का एकदम निकाल देते हैं। उन्हें धोकर सुखा लेते हैं इन्हें धोई या धोआंच कहते हैं। कुछ का छिल्का नहीं निकालते, उन्हें छिलकेदार कहते हैं। कुछ दालें मसूर उड़द या मूँग साबुत भी बनती हैं। दालों में कोई सब्जी (अमूमन चने का साग, बथुए का साग) मिला कर पकाते हैं। उस दाल को दलसग्गा या सगपहिता कहते हैं। कई किस्म की दालों को एक साथ मिला कर पकाते हैं उसे केवटी कहते हैं।

तरकारी कई तरह से तैयार की जाती है। सबसे आसान तरीका आलू, बैगन अरुई जैसी तरकारियों को आग में भूनकर उनका भरता या चोखा या सना बनाना है। कुछ तरकारियाँ सूखी बनायी जाती हैं कुछ शोरबेदार या रसेदार या झोर या परेह के रूप में। कुछ तरकारियाँ घी या तेल में तली जाती हैं, कुछ बेसन या उड़द या चौरठ (भिगोए चावल की पीठी) में लपेटकर तली जाती हैं और फिर उन्हें रसे या झोल में डाल देते हैं। कुछ तरकारियाँ उड़द या मूँगों के साथ लपेट कर धूप में सुखा ली जाती हैं उन्हें अदौरी कोंहड़ौरी, दनौरी (पोस्ते के दाने के साथ) तिलौरी (तिल की पीठी के साथ), बड़ी कहते हैं। बिना तेल घी के केवल भाप से बफौरी बनायी जाती है। अरवी या अरुई के पत्ते लपेट कर तले जाते हैं। उन्हें रिकवच या अरकौंच (<अलीक मत्स्य) कहते हैं। तरकारी के झाल या दाल में आम की खटाई (आमिल) या इमली की पिंडिया पड़ती है। आम की खटाई दो प्रकार की होती है। टिकोरे या फरिया की खटाई दंडियों या कलो और गुठलीदार कच्चे आम की खटाई खोइया कही जाती है। आम की खटाई का चूर्ण अमचुर कहा जाता है। कभी कभी मठे का भी उपयोग खटास लाने के लिए होता है।

चावल के विभिन्न रूपों के नाम ये हैं केवल चीनी या गुड़ से मीठा और पतला चावल बखीर दूध में पकाया चावल खीर या तसमई और दूध-पानी दोनों में पकाया जाउर, सब्जी के साथ पकाया जावर हरी मटर के साथ भुना तहरी दाल के साथ खिचड़ी तीसी (अलसी) के साथ तिसियाउर या तिसजौरी, पोस्ते के दाने के साथ दनजाउर मठा के साथ मठजाउर या घोरजाउर, महियाउर सूखा भात खुश्का, केसरयुक्त केसरिया, घी में भुना पुलाव, मक्के के दड़े दाना का भात दर्रा या दररा और गेहूँ-जौ के दड़े दानों की दलिया तैयार की

२२

छप्पन कोटि के व्यंजन

पहले नमकीन और चरपरी चीज़ों से शुरू किया जाये। पापड़ या पपड़ी तो प्रसिद्ध ही है। कुछ सब्ज़ियों (कुम्हड़ा बथुआ या सफ़ेद कुम्हड़ा फूलगोभी मेथी का साग) को बेसन या उड़द या मूंग या मटर की पीठी में लपेट कर बड़ियाँ बनायी जाती हैं। इन्हें अदौरी कुम्हड़ौरी बड़ी फुलौरी दनौरी (पास्ता के दानों के साथ) तिलौरी (तिल की पीठी के साथ) मुंगौड़ी (मूंग की पीठी के साथ) कहते हैं। गेहूं के आटे की मठरी पड़ाका और टिकिया बनाते हैं चावल के आटे की कौरी, कचरिया और मोहनपकौड़ी बेसन की बरी, फुलौरी सेव बूंदी (बुनिया), पीठा या पीठी और उड़द से बड़ा या बरा (बजका चवका) चिल्ला या रामचक्कर चावल के आटे से सेंदरा तरल आदि और सत्तू से बगिया। महीन मैदा से नानखटाई बनती है। नमकीन घोल के रूप में काज़ी, रायता, तक्कर (मठे का घोल), इमली का झोर जीराजल आदि बनाये जाते हैं। अन्य नमकीन उपस्करों में सोंठ चटनी (नौरतन, हरी चटनी अमावट की चटनी) अचार (सूखा या तेल या नींबू में भिगाया) खटाई (नोनचा) की विविध क़िस्में हैं। अन्य नमकीन चीज़ों में समोसा चाट, पिठौरी, चूड़ामटर सभी जगह प्रसिद्ध है।

कोरी चीनी या शक्कर से बनने वाली चीज़ें ये हैं गट्टा, बताशा गुलदाना, इलायची दाना, सेव या लकठा (जिसमें कुछ आटा बीच में मिला रहता है)। तिल या चीनी और तिल के योग में गजक तिलकुट (तिलवा) कोरी खांड की टिकिया के रूप में साबौनी चादशाही, चनौरी रंगीन खांड की बनी लंबी मिठाई दनदान और कटोरीनुमा तिनगिनी, खांड के लड्डू ओरालड्वा खांड की टिकिय

गिदौरा खाँड की पहियेनुमा मिठाई इतौआ बनती है। खाँड का शीरा या सिरा दूसरी मिठाइयों (लड्डू आदि) को पागने के काम आता है। खाँड का उपयोग भाँति भाँति के मुरब्बों (पेठा बेल सेब, नींबू, आँवला, हर परवल आदि) में भी होता है।

गेहूँ के मैदे और आटे से कई तरह की मिठाइयाँ बनती हैं। गेहूँ के आटे को घी में भून कर शक्कर मिला कर कसार या पंजीरियाँ बनाते हैं। एकादशी किस्म का कसार जिसमें सुनी धनिया और शक्कर के अलावा कूटू का आटा या सिंघाड़े का आटा पड़ता है पंजीरी कहा जाता है। गेहूँ के आटे में शक्कर मिला कर से पुआ, मालपुआ गुलगुला, मकुदी दाना नारियल (एक आयताकार मिठाई) या हैसमा खीला सोरी मायनशार आटे से गोल गिंदियाँ के रूप में पुरमा मुट्ठी के रूप में मुठिया खजूर या खिलिया (खजूर की आकृति का), घींग (बड़ा पुआ) और खीरा बनता है। गेहूँ के बारीक मैदा से खाजा बनायी जाती है। इसी में जब शक्कर मिला देते हैं, तब उसे मठठा कहते हैं। इस मट्ठा से नकुला (जो बीच में पोला होता है) या खाजा, फेनी या बतासफेनी सक्करपारा, मिरजई बालूशाही आदि पकवान बनते हैं। घी में मैदा या बेसन भून कर बूरा मिला देते हैं उसे मगद कहते हैं। मैदे का पूड़ा बेल कर उसमें मगद भरा जाता है। कभी कभी उसमें खोया भी मिला दिया जाता है। इसको गाँठ कर फिर घी में छानते हैं तब गुझिया गोझा या पिराकिया (खोए की गुझिया) तैयार होती है। सूजी के आटे से हलुआ तथा आटे से ही घेवर या घुघुरी घियौड़ा या घेवर बनते हैं। उड़द की पिट्ठी से गोल छल्लेदार इमरती और जलेबी बनायी जाती है। उड़द की ही पिट्ठी से एक पीली जैसी मिठाई बनती है उसे गुलदाना कहते हैं। मूँग की दाल की पिट्ठी से सोरमोहन या मोहनभोग बनाते हैं। पके भुने बेसन को खाँड में मिला कर कतरियाँ काट लेते हैं उनको ढारमा कहते हैं। बेसन की ही बूँदा या नुकता बनता है, जिससे लड्डू या लड्डुआ भी बनाये जाते हैं। भुने बेसन से ही सोहनहलुआ (सोनहलुआ) कसारबाटी मगधबाटी और चबना (शीरा में पगे मीठे सेव) जैसी मिठाइयाँ बनती हैं। बेसन से ही साँस (बच्चों की एक प्रिय मिठाई) तैयार होती है। चावल के आटे से तासखानी या ताजखानी, खिरौरा और फेनी बनती है। चावल के आटे को शक्कर के साथ मिला कर लंबी लंबी कतरियाँ बनाते हैं उन्हें घी में सेक कर गिजा गोल गोल खजूर और गुलाब गजूर, छनहली तरबेजी, पहियेनुमा अकबरी, गोल टिकिया के आकार का अंदरसा मालपुए जैसी फूली फूली बाबरा या बाबरी और चावल के चूरे में बूरा और दूध मिला कर लड्डू बनाये जाते हैं जिन्हें पिन्नी कहते हैं। मैदा से बनी दो छोटी पूड़ियों का जो खाँड से पगा होता है चन्द्रकला कहते हैं।

मैदा के घोल से ही सूतदारी कचौड़ी बनती है जिसे सूतफेनी कहते हैं। बेसन और मैदा के मिश्रण से बीच में छेद वाली मिठाई बनती है, जिसे गालमसूरी, मसूरी या मैसूरी कहते हैं। मैदा को घी में भून कर उसे हलुआ के रूप में पकाते हैं। इसे मैदा का हलुआ कहते हैं।

गोला (नारियल), बादाम, पिस्ता, चिरौंजी, मूंगफली मिंगी (खरबूजे आदि की) इन्हें अलग अलग या मिला कर खांड की चाशनी में मिला कर जमा देते हैं उसे पाग कहते हैं। बबूल के गोंद को भून कर खांड में पागते हैं और उसमें खोया मिलाते हैं उसे गोदपाग (गुदपाग) कहते हैं। इसी तरह इलायची से इलायची पाग, बादाम से बादाम पाग जैसी मिठाइयां बनती हैं। खोये में मिलाने के लिए जो चीज तैयार की जाती है उसे लौंज कहते हैं जैसे लौकी चिरौंजी या गरी की लौंज। कहीं कहीं बर्फी को भी लौंज कहते हैं। लौकी के लंबे लंबे लच्छों को खांड की चाशनी में पाग कर घीयाकस या कपूरकंद के लच्छे बनाते हैं।

खोये की बनी मिठाइयों के दो प्रकार हैं। एक जो दूध जला कर खोया तैयार किया जाता है उससे मिठाइयां बनायी जाती हैं। दूसरा प्रकार है दूध को फाड़ कर उसका छेना या पनीर निकाल कर सुखा लेते हैं। उससे मिठाइयां बनती हैं। खोये की मिठाइयों में पेड़ा, भुने खोये का लाल पेड़ा, बर्फी (केसरिया, पिस्ता आदि) चाशनी के साथ पगे खोये का कलाकंद, रवड़ा (बासूंदा), मलाई, सूखी मलाई की पपड़ियों से खुरचन, गुलाबजामुन खीरमोहन, मलाई की पूड़ी, मलाई के लड्डू प्रसिद्ध हैं। खोया भूनने की क्रिया को कूदा करना कहते हैं। भुना हुआ खोया कूदा और कुछ-कुछ दूधिया खोया कच्चा खोया कहा जाता है। छेने से संदेस, रसगुल्ला चमचम, आम, कालाजाम, मक्खन बड़ा, छेनिया, दूध बरा, पीरवदव छेनावड़ी, छेना खीर जैसी मिठाइयों के अलावा नमकीन चीजें भी बनती हैं। छेने की टिकिया मटर के साथ पनीर आलू पनीर की टिकिया आदि।

कभी कभी बाहरी मदद की जरूरत पड़ती है। तब हलवाई बुलाया जाता है। रसोई के साधारण उपकरणों के अलावा उसका अपना तामझाम होता है। *पकाने के ही कई प्रकार होते हैं झरना, छनौटा मोना, पौनिया चटूरी झँझरा,* केओचा (बड़ा) छोल्नी (छोटी) खुरचने के लिए खुरपी, खुरचनी, मोडने के लिए दाबा दाबी, गुरदम, उपटन मुगरा मिठाई रखने के लिए काठ का गिरदा खोनचा उगरना खाचा, पीतल की थाल या परात। मिठाई रखने के लिए जो छोटी चौकी बनाते हैं उसे तरौनी, तरौना या टेवती कहते हैं। मुसल

मानों के भात भोज में नानबाई या नानपज की भी मदद लेनी पडती ह । नानबाई तदूर सँभालता ह । तदूर में सेंकने की जगह सींक या सीख, उसका आधार हिच्छा या कबाबदानी या चक्कस कहा जाता ह । पकाने का बतन डेगची या पतीली कहा जाता ह और परसन को प्याला रिकाबी, लकडी का चम्मच डोई, बडा चम्मच कफचा डोआ डोगा डाभा या कफगीर कहा जाता ह । नानबाई जिस गद्दी पर रख कर रोटी सेंकता ह उसे रफीदा कहते ह और लोह की छडें जो रोटी निकालने के काम आती ह हस्तगना और अर्रा कही जाती ह, इन दोनो को समवत रूप से कसी या जोडी भी कहते ह । नानबाई नान पर कभी कभी कुछ शक्लें उभारता ह, उस सांचे को चोका या चोकन या चोकनी कहते ह । मुसलमानो के जेवनारो में अमूमन कुछ खास चीजें और ह सेवई फालूदा पुलाव सिरनी सालन शोरबा कबाब ।

१३

'कॅगन बनवाइ देव सोने के'

स्त्रियो भूषणमिच्छन्ति' यह कलाशास्त्र का वचन है। शुद्ध सोने के गहनों पर रोक थी तब भी गहने गढाये जाते रहे स्वदेशी बैंक टूटा नहीं। सोना जिसे नहीं जुरता वह चांदी और गिल्ट से ही संतोष कर लेता है पर सहालग में गहने खरीदे और गढ़वाये जाते हैं। गांवों में नख शिख गहनों से लदी वधू ही सच्चे अर्थ में सुहागिन होती है।

सामने माथे पर साकरी में लटका हुआ घंटा या टीका या बना सिर की माँग के ऊपर शीशफूल (बौरिया या बोल्ला) और बन्दी, आगे से लटकने वाली झूमर (या झिलमिली या झुमझुमी) सिर पर दोनों ओर की पाटियों पर पाटी और अड़िया झूमर के ऊपर सहारा और उसके आस-पास कांटे और झेले जूड़े के ऊपर चक्राकार जूड़ा चोटी में गुही जानेवाली चोटी और केशों को अपनी जगह पर सजाये रखने के लिए कांटे, भाल में तिलक या टिकुली और पूरे लिलार पर खौर और सिंगारपट्टी इन सबसे समूचा मस्तक जगमगा उठता है चेहरे के नाक नक्श में कुछ नुक्स भी रहा तो वह दब जाता है। कान और नाक में तो गहने सुहागिन या सधवा के लिए अनिवार्य है। कान के बीच के भाग बिचकनी में बारी या बाली (बालिका बाणभट्ट) बाली के छेद में गुँज (एक टेढा सिरा) लगाकर कान में खोसी जाती है। बाली के साथ गुच्छी भी पहनी जाती है। कान के नीचे के हिस्से लौर में छेदकरके कई प्रकार के गहने लटकाये जाते हैं। दो मोतियोंवाली बाली (जिसे बीर भी कहते हैं) बुंदा कुण्डल, झूमक करनफूल, झाला, बिजली (बिजली में छोटी लटकनी सहेली कही जाती है) तरकी और तरयोना विभिन्न आकारों के गहने हैं। लौर के ऊपर के हिस्से गोखरू में भी बाला पहना जाता

कगन, गजरा, चूहेदती, कडा डार या दुआ, चूडियोंके बीच में बगली या ढँगुरी, चूडियों के पीछे पछेली, पछुआ, द्धनिया, हथेली क ऊपर पान-बतासा, हथफल हथसँकरी ये गहने पहने जाते हैं। हाथ की उगलियो में मुदरी या अँगूठी (सादी या नगदार)आरसी छल्ला थाक पोरुआ और वेढा पहने जाते ह।

पावा म साने के गहने वर्जित ह। चाँदी के तार से बने लच्छे या छडे (इमरिती, घुघुन और सूत के आकार के इमरितिया, घुघुरुआ और सुतिया), काडा (एक एक पहने जाने वाला इसा के प्रकार छल्चडी बेलचडी और चमक चूडी हैं घुँघुरदार अनोखा भी इसी का एक उपभेद ह) पायल पायजेब, गोड हरा, साकडा चौरासी घुघुर दागल, पजनी, झाझन खड आ पैरा में ही पहने जाते हैं। पैरा की उगलिया के पोरा में छल्ले साकरी (दोना का याग साकर छल्ली), पोर, जोट विछिया (बिछुआ सुहागिल) पहन जाते हैं। अँगूठा में पहना जानवाला अनवट या गूठा कहा जाता ह। घुघुरू या रवा कई प्रकार के होते ह बाजरे के आकार क बाजरिया, मटर के आकार के मटरुआ और बाजने या चौरासी (दो कटोरिया सी मिला कर जोड दी जाती हैं) नोकदार या चोचिया कछुवाये (दो पल्ले के चपटे और किनारीदार)।

गहना या जेवर का काम सुनारी नग जडने का काम जडियागिरी तार से नग की कटाई का चिराई या चीरना नग के नाका की घिसाई को कोरना गहनों पर वस्तुओं की आकृति बनाने को चीतना या चिताई, गहना पर रगसाजी मीनाकारी या मीनागरी सुनार की अँगीठी का राख में से सोन चाँदी क कणा को अलग करने का काम न्यारियागिरी कहा जाता ह। सोन में चमक पैदा करने का प्रक्रिया छिलाई शुद्ध करने की प्रक्रिया सोधना विशेष प्रकार स शुद्धीकरण को पक्की चासनी करना कहत ह।

● ●

२४

विवाह की तैयारी

भारतीय अनुष्ठानो में सबसे विशद और लम्बा अनुष्ठान विवाह का ही होता है। विवाह का पूरी प्रक्रिया बडी लम्बी होती है उसकी रस्में अनगिनत होती है और उसके लिए तयारी बडी जोरदार। प्रक्रिया को ही लें। ब्याह पक्का करने के पहले भावी वर देखन वरदेखुआ आते हैं। तब वर की कुडली या टीपन कन्या की टीपन से मिलायी जाती और विवाह की गणना सोधी जाती है। गणना उत्तम बनने पर कन्या पक्ष वाला वर छेंकने की रस्म अदा करता है इसे वरिच्छा सगाई पक्की या भेंट भी कहते है। कही कही विवाह की ठहरौनी हो जाने पर वर पक्ष की ओर से कन्या की गोद भराई भी की जाती है। अधिकतर दहेज की प्रथा है दहेज की रकम तय होने पर तिलक या टीका की साइत सोधी जाती है। इसी को पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सिकरा या जमा भी कहा जाता है। तिलक में थारा या परात में हल्दी रंग चावल नारियल और द्रव्य चढाया जाता है। तिलक लाने वाले पुरोहित को पचोतरी दक्षिणा मिलती है नाई को नेग मिलता है। तिलक के साथ लगन जाती है। विवाह के लिए हल्दी सोपारी आस पास बाँटने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है दूर न्योता या निमन्त्रण या पीली चिट्ठी भेजी जाती है। कन्या और वर को लगन धरायी जाती है उनको हल्दी उबटन लगना शुरू होता है गीतों की शुरूआत सगुन की साइत से ही जाती है। लडकी और लडके दोनों के घर कोहबर (कौतुकगृह) में भीत पर कोहबर रचने की प्रक्रिया सज धज से शुरू होती है। यह कोहबर दो तरह से रचा जाता है एक तो गोबर भीत पर लीप कर सुखा कर उस पर हल्दी (ऐपन) मिले चौरठ (चावल का आटा) से रचाई जिसे ऐपन का कोहबर कहते हैं। दूसरा गोबर के लेप के ऊपर चौरठ

छुहियाया (हल्के हाथ से फनाया) जाता ह और इस जमीन पर उडद भून कर बनाये गये आटा (पिसान, पिष्ट) से रेखाएँ खीचो जाती हैं और उनमें यथोचित रग भरे जाते ह। इसे मसी का कोहबर कहते ह। कोहबर लोक भित्ति चित्राकन को बहुत बडी सिद्धि ह, इसमें किनार हाशियों पर बेल (वल्लरी) या पटिया लिखी जाती ह। यह सादी हो सकता ह, बुदीदार हो सकती ह। बुदीदार बेल में बुदियाँ बना कर कई आकार की बेलें बनायी जाती हैं चौखूट या सिहोरी, अठमाचिया चिरईमगार (चिडिया और डाली) और बनजारा (मानवाकृति) आदि। इनके भीतर सबसे नीचे बास, बीच में दाना और मोर मुरला लिखे जाते हैं बास के ऊपर सुग्गा लिखा जाता ह। नवग्रह, सात सिहनी, पाच या सात हाथी, शख, चक्र, गदा, पद्मपुरइन देवी-देवता और जिउती जिउता (दम्पति) लिखे जाते हैं। मागलिक पूजा के लिए माडो या मंडवा (मडप) छाने का काय शुरू होता ह। माडो की छाजन छप्पर की होती ह उसकी छाजन सरपत और बाती (बाँस की पतली खपाची) से की जाती ह उसके ठाट के बीच में और चारो कोनो में पुरइन की आकृति बनायी जाती ह। माडो में आम और बास के खम्भे लगाये जाते हैं और चारो ओर आम के पल्लवों की तोरन या बदनवार (बदनमालिका) बाधी जाती ह। माडो में ही एक किनारे मिट्टी का हाथी रखा जाता ह, हाथी के पेट में धान भरा जाता ह उसके ऊपर एक सच्छिद्र कड़ाही, उसके ऊपर कलश उसके ऊपर झझरीदार गगरी म दिया रखा जाता ह, हाथी का भक्तिरचना सात रगो स होनी ह। माडो में बाच में जौ के दाना का खोंस कर गाठा हुआ कलसा (कलश) उसक ऊपर पचपल्लव (पाकड पीपल, गूलर बरगद और आम), पचपल्लव क ऊपर धान से भरा कोसा रखा जाता ह। माडों की जमीन पर चौक पूरा जाता ह विवाह म धुसवढाव चौक पूरा जाता ह यह गाठ जोड चौक होता ह, एक किनार खोल लावा (लाजा) भूनने के लिए चूल्हा रहता ह एक किनारे वेदी, बीच में कलसा के सामन पीढ़ा (काष्ठपीठिका) रहता ह जिसमें कमल की खुदाई की रहता ह। विवाह को पाँच दिन रह जाते ह तो शास्त्रविहान सस्कार और लोक के गात माडा में शुरू हो जाते हैं। विवाह के एक या दो दिन पहले वर या कन्या का तेल चढ़ाव होता ह। इसको हल्दी भा कहते हैं। बारात जाने के पहले वर की साजसज्जा होती ह, केसरिया जोडा-जामा, पगडी, फडवदा मौर कङ्कण (उन में राई नोन, हल्दी बधा रहता ह) गरुअट या रोली काजल से सुसज्जित वर की आरती उतारी जाती ह, उसका हल्दी रगे अक्षतों से चुमावन होता ह, उसे लेकर उसकी माँ बहनें रहकर घूमती हैं (ग्राम-देवताओं के स्थान की ओर कुएँ की परिक्रमा करती हैं) और तब गाजा-बाजा के साथ बारात प्रस्थान करती ह।

जाती है। इसे जरोला की चूड़ी कहते हैं। सुहाग की चूड़ी या सोने की चूड़ी पहनाने का नेग मनिहारिन लेती है। चूड़ियाँ पहनाते समय यदि कोई चूड़ी तड़क जाए तो उसे फूटना न कहकर मौलना कहते हैं। मौला हुई चूड़ी को तोड़कर प्यार की परीक्षा ली जाती है। यदि टुकड़े के सिर पर नोक निकल आये तो इसका संकेत है कि पति प्यार करेगा।

इसके बाद केशों का शृङ्गार शुरू होता है। वैसे सामान्य ढंग से इकचुटिया बँधाव होते पर शुभ अवसरों के लिए बेनी-बँधाव ही होता है, वह भी टेढ़ी या बाँकी माँग न होकर सुम्मी या सीधी माँग होता है और तिनचुटिया (कारपनी या कौवा बधाव) न होकर लोंपा बँधाव (धम्मिल्ल) या छल्ली-बँधाव होता है। विवाह के पहले कन्या का कणछेद (कनैया) होता है। उस समय दस चोटी वाला खजूरा बँधाव किया जाता है, परन्तु विवाह के अवसर पर बँधाव की प्रक्रिया इस प्रकार है पहले बालों को पेन्चौर या बकरियाये या सुलझाये जाते हैं इसके बाद उनमें कंघी की जाती है पहले बीच में एक सीधी माँग निकाली जाती है फिर तलुए (सिर के सामने वाले भाग) पर से कुछ बाल लेकर एक पान की-सी आकृति की बेनी गुह दी जाती है इसके बाद अगल बगल दोनों पक्खों (कनपटिया) के ऊपर दो दो के हिसाब से चार बनियाँ गुही जाती हैं। माथे के पीछे (पिछाड़ या लँवाड़ी) की ओर एक अलग बनी गुही जाती है। अगल बगल की बनिया को पटिया भी कहते हैं और इस प्रकार बाल सजाने को पटिया पारना या काढ़ना कहते हैं। इन पाँच बनियों को एक साथ जोड़ दिया जाता है। इसी को लोपा काढ़ना कहते हैं। बाल गुहने की प्रक्रिया में छोटे छोटे कनपटी के बाल छोहरे या आगे लिलार या ललाट की ओर के छोटे छोटे बाल भौंरे चोंटियाये जाते हैं इनकी बेना चोंटिया (छोटी बनी या छोटी पटिया) कही जाती है। लटों के तीन मट्ठे करके बेनी गुही जाती है। मुट्ठे को पखिया भी कहते हैं। लटें बाँकी या वक्र या कुटिल (अलक) होती हैं या सट कारी या सीधी होती हैं। टेढ़े घुँघराले बालों में जो मोड़ पड़ती है, उसे घूमर कहते हैं। संस्कृत साहित्य में चूर्णकुन्तल का प्रयोग टेढ़ी लटों में घूमर उभारने के अर्थ में किया गया है। इस प्रक्रिया में बालों के फैलाव को ऊँचा नीचा बना कर उन्हें लहरदार या घघरा बनाया जाता है और ऊपर फूले हुए बाल गुब्बारे उभार जाते हैं।

छल्ली बँधाव में लाल पीले सूत के धागा (कलावा) के फन्दा (छल्लो) में लोंपा-बँधाव की पाँच बेनियाँ बाँधी जाती हैं।

विवाह के पहले माँग में सिन्दूर नहीं भरी जाती पर माथे पर बिन्दी लगाई जाती है। भावी वधू या कन्या (लाडो या बन्नो) को काजल का विशेष

तरीके से आँका जाता है जो सदृश्य न हो, पर जो कारों का कोर उभारने वाला हो। उनके सिर के ऊपर मौरी रखी जाती है। विवाह के समय वह नया शिरा गहना से सजाई जाती है। विवाह की रस्में दश भेद से अलग अलग हैं पर अनुष्ठान की शास्त्रीय विधि प्राय: एक है। कन्यादान, पाणिग्रहण, पाणिग्रहण के समय ही गालोच्चार या बेल (जिसमें कन्या-वर के नाम तीन पूर्व पुरुषों के नामों के साथ लिये जाते हैं), ध्रुव दर्शन अश्मारोहण लाजाहोम अग्निप्रदक्षिणा और सप्तपदी यह क्रम सर्वमान्य है। सप्तपदी को ही भावर या फेरा भी कहते हैं। पूरब के लौकिक अनुष्ठानों में शास्त्रीय विधि पूरी हो जाने के बाद सिन्दूर-दान होता है। सिंदूर लाल भी होता है, पीला भी, पर शुभकाम में पीले सिन्दूर का ही व्यवहार होता है। विवाह के लिए एक पुड़िया में दमड़ी का सिंदूर रहता है विवाह विधि में उसी का उपयोग होता है। कन्या और वर दोनों की मातायें पाँच सुपारी सिंदूर में डुबाकर अलग रख देती हैं। कन्या की माँ वर की माँ को पाँच सुपारियाँ देती है, वर की माँ तीज के अवसर पर कन्या को भेजती है, इस प्रक्रिया को सिंदूर परोरना कहते हैं। सिंदूरदान करते समय दो उँगलियों से वर पाँच बार वधू की माँग में सिंदूर भरता है इसके बाद मेंथी पीसकर छाप देने के लिए प्रस्तुत केश पाश के ऊपर कागज काटकर बनाये गए पान फूल या बेल रचना पर सिंदूर छिड़का जाता है। कागज उठा लेते ही वह रचना सिंदूर में पूरे माथे पर उभर जाती है। सिंदूरदान के बाद वर वधू का अक्षतों से चुमावन होता है और वे कौतुकगृह (कोहबर) में ले जाये जाते हैं। वहाँ कोसा (म्यान) खोलने की विधि (कोसा-खोलाई), दिया बाती मिलाने की विधि (बाती मिलौनी), सिंदूर-बहोरने की विधि पूरी होती है। प्रत्येक विधि का एक एक नेग होता है। विवाह के दिन वर के पाँव भी पूजे जाते हैं। उस समय का नेग पाँव-पूजी कहा जाता है।

विवाह के दिन नाइन वर-वधू के ऊपर छत्र करने का (छाता करने का) नेग तथा दोनों की गाँठ हल्दी सुपारी से जोड़ने का नेग (गँठबन्धनी) पाती है। विवाह के दूसरे दिन मंडप में वर को भोजन कराया जाता है, उसे कुँअर-कलेऊ बसिया खिलाई या खिचड़ी खिलाई कहते हैं। वर को अधिकार होता है कि कुछ देर तक कोप करने का स्वाँग रचे (कोहनाये)। उसको मनाने के लिए कुछ उपहार दिये जाते हैं जिन्हें बसिया खिलाई या खिचड़ी खिलाई कहते हैं। जहाँ बारात तीन से अधिक दिन रहती है, वहाँ चौथे दिन चतुर्थी छूटती है और उसी दिन वर का पिता वधू का माथ ढाकने जाता है। उसी के साथ वर पक्ष का नाई कन्या पक्ष की नाइन का भी माथ ढाकता है। माथ ढाँकने वाली साड़ी को मथढकनी कहते हैं। बारात विदा होने के दिन कई रस्में पूरी की

में गहरे गड्ढों में पड़ कर बीज अलग हो जाता है, इस गड्ढे को बिनौ या गुन्ना कहते हैं तख्ते को स्थिर रखने के लिए उसके पीछे एक डंडा (मथा) रहता है जिसके ऊपर भारी पत्थर रख देते हैं चरखी में अलग की रुई को तूर या रुअ कहते हैं इसके बाद फिर से नई रुई को हाथ में गाला-दुनाई या तूमने की प्रक्रिया होती है।

अब रुई धुनियों का धोजन या धनकी या धुनेठी या धनुही के द्वारा की जाती है धनकी अर्धधनुषाकार होती है, जिसमें लकड़ी के फरेरे या फरोट में एक लम्बाला डांडी या डंडी लगा रहती है इसकी भौंगा या माथे के ऊपर एक चमड़े का तांत या रोदा मढ़ा जाता है यह तांत फरहे के गोल सिर पर खोंचा जाती है इस सिर को पुदेटा या पदौटा या चक्कर या कुण्डल कहते हैं धुनकी का हथहर या हथगर बायें हाथ में लिए रहते हैं जिससे यह स्थिर रहता है तांत रुई के बीच खींच कर झिटके के द्वारा छोड़ा जाती है रुई का धुनी हर को गोठी कहते हैं।

गोठी से छोटे गाले कातने के लिए बनाये जाते हैं जिन्हें पीनी पीउनी, पूनी या पौर कहते हैं अब चरखा चालू होगा चरखे को कहीं-कहीं रहठा या जरखा भी कहते हैं। महीन सूत कातने के लिए (मसलन जनेऊ या पूजा के लिए सूत) स्त्रियाँ चरखे के बजाय तकुली (<तकु) पर सूत कातती हैं, तकुली एक लट्टू की शक्ल की होती है जिसमें लोहे या लकड़ी की लंबी डंडी लगा रहता है चरखे का आधार एक चौकोर तख्ता होता है इसको भी फरई या पिढ़िया या पीढ़ा कहते हैं इसमें दो खूंटे गड़े रहते हैं इनके बीच धुरी के रूप में एक लंबा लकड़ी रहती है जिसे नरा या लाट या जाट या बेलना कहते हैं इसी में चरखा बैठाया जाता है, यह गोलाकार काठ होता है जिसे मदरा कहते हैं मदर के दोनों ओर चौड़ी चौड़ी पत्तियाँ या पखुड़िया कटा रहती है यह मदरा मकरी या डांडी या नार पर घूमता है इसके बीच की नाभि को मूड़ी या मुड़िया कहते हैं, मदरा या तागा और इस के अरों को कवरी या पुत्ती या पुता कहते हैं, इसकी पखुड़ियों के सिरों पर जो दो कटान होते हैं जिन्हें खाचा कहते हैं इनमें एक डोरी (अदवाइन या जदनी या अमाल या अवाल) लपेटा रहती है चलौना या लरना या भौंतो या हथिया के छेद में उंगली डाल कर नरा या लाट घुमाया जाता है जिससे सारा चरखा घूमने लगता है प्राय घूमने की प्रक्रिया को अधिक तीव्र और निर्बाध करने के लिए खूंटों और पखुड़ियों के बीच एक गोल चकई या फिरकी या चेंगी या चिरइया डाल दी जाती है पीढ़ या फरई के ऊपर एक तकुली होती है जिसके ऊपर दो ओर दो खूँटी और बीच में दो छोटी छोटी लकड़िया गड़ी रहती हैं इनके बीच में तकुआ जड़ा रहता है, जिसके

ऊपर काला डोरी (माल या माल्ह) घूमती ह इसके पूरे साँचे को पंचकठिया या खुँटपुत्ती कहते ह । दोनों सिरा वाली लकडियों को गूँटा उस के बाद की दोना ओर की दो लकडियो को गुडिया या मलकाठी कहत है, तकली और फरई को जडते वाली लकडी माझा कही जाती ह तकली की दोना मलकाठियो के छेदा म मूँज या चमडे की बनी चमरखें लगी रहती ह, इनके छेदा क बीच से हो कर तकुआ घूमता रहता ह तकुए के ऊपर सटे या अगनर की एक पोली गडेली चढी रहती है जिस छुच्छी या नरी या बोडी कहते है छुच्छी के आगे सूखे लोआ (तोमरा) की एक गोल चकई बना कर तकुए के ऊपर चढा दी जाती ह, उसे फिरकी या दिमिरका कहते हैं यह पसे के आकार का होता ह ।

माल को घूमन या राल और तेल से माँज कर मजबूत बना देते हैं, उस पर कोयला रगड कर सुखा दते ह, यह माल दा बार चरखे पर और अतर देकर मलकाठी के बीच मे घूमता ह, कातते समय पानी में रुई डाल कर तार या तागा निकाल कर तकुए पर लपेट देते हैं तब तकुआ फिरा कर पूनी में से तागा निकालने की या सूत कातने की प्रक्रिया शुरु हो जाती ह, तकुए पर तागा लपेटने को तागा पैसना कहते हैं ।

जब तागे से तकुए का सिरा-लपेटते लपेटते मर जाता ह तो उस पूरे लिपटे सूता के पिंड को कुकरी या कूकरी या कुकडी वहत ह छोटी कुकरी को पिंदिया कहत ह कूकरी का तब पानी में भिगाते ह (भोआ लगाते ह), इसके बाद उसे भूभर या गम राख पर रख दते है, तब उसे लकडी क एक अडड पर लपेटत है जिस ऐना या अटेरन या परता, या परेता या नटवा या नठाई कहते ह, इस प्रक्रिया को ऐनना या परेतना कहते ह परेते या ऐने सूत की आटें या पोले या पोलिया या नत्ती या करची (लच्छी) बना लेते है इन्हें वजन देन के लिए गुनगुने पानी में फिर समोते है ।

चरखा कातने वाली स्त्रियाँ कत्तिनें, कातने वाले पुरुष कत्तो कहे जाते हैं यह सूत वजन और बारीकी क हिसाब से बिकता ह मिथिला के मधुबनी इलाके में २०० नबर तक का बढिया महीन सूत काता जाता है सूत कातते समय कत्तिनें बहुत एकाग्र चित्त स इस पर ध्यान रखती ह कि 'चरखा मे टूटे न तार चरखवा चालू रहे" पूरी प्रक्रिया बडे मनोयोग की माँग करती हैं महात्मा गाँधी ने चरखे को स्वाधीनता का प्रतीक बनाया तो सिर्फ इसीलिए कि स्वाधीनता की साधना ऐश नही ह, आरामतलबी की साधना नही ह यह निरतर और निष्ठायुक्त प्रक्रिया ह ।

● ●

१७

करघा

मुसलमान जुलाहा (जोलहा या मोमिन) या हिन्दू ततवा या तांती या कोरी सिधाई का प्रतिमान ह। गावों म उसक सूबधा की तरह कोसिया किस्स मशहूर ह जस करघा छोड तमाशा जाय नाहक चोट जुलाहा खाय कौआ चला बास का जोलाहा चला घास को 'जोलाहा भूग तीसी क गन, वस्तुत जुलाहा अपन काम में बहुत मशगूल रहता है वह दुनियादारी की खबर नही रखता।

जुलाहा जमीन के ऊपर पहले ताना तानता ह, लगभग १७ माडो सर या सरकी दो पतिया में एक एक हाथ की दूरी पर बिछाता ह। दोनो पतियाँ लग भग दो हाथ का अतर द कर बिछायी जाती ह। दोना पतिया क सिरा पर एक एक बाँस की मजबूत खूटी गाडी जाती ह। प्रत्यक सरकी म सूत (जो कि ७ ८ दिना तक भिगो कर मजबूत बनाया जा चुका ह) लपटा जाता ह इस प्रक्रिया को ताना या तानी करना कहत ह। बाँस की खूटिया क सामन वाली सरकी छिउआ या छिपकी या डोरीक सर या छिउकी कही जाती ह। पर पलवार की भी ताना या ताना कहत है। एक तिकोनी घरखी में लपेटा हुआ सूत सरकिया पर ताना जाता ह। यह घरखी एक दगनो या डगी पर घूमता ह इस घरखी के ऊपरी सिर पर एक गोल कटोरानुमा थोडी या थोडरी या टाई होती ह जो घूमता ह। इस घरखी में १४ बाँस की बतियाँ होती ह जो चरखी क गोलाकार आधार घरखर क ऊपर बराबर दूरी पर घुमा कर ताना जाता ह। इस घरखी का मूठ बायें हाथ म लकर जुलाहा तान का दोना पतिया में सूडी या लाठी स सूत सरकिया में बरताना चलता ह। जब सूत इस प्रकार सार पर भरता दिया जाता है तब खूटियाँ उखाड ली जाती ह। इसक बाद खूटिया की गायघाना म [illegible]

कर उसकी जगह पर बाँस की ही सिरार या सिरारी पिन्हा दी जाती है, और वही धनुहा के आकार की दूसरी सरकी, जिसे यह्ला या सुतरी कहते हैं (और जिसमें बाँस की तानी की ही डारी लगी रहती है) और इस सुतरी के सिरा या सरकियों को जोडी से ऐसा मिलाते हैं कि जिस तरह सूत ताना गया था उसी रूप में इस पर उतर आये । सभी सुतरियाँ एक ओर मुँह करके ज़मीन पर समानांतर बिछायी जाती हैं और जितना चौडा कपड़ा बुनना हो उसी हिसाब से उतना जमीन घेर कर बिछायी जाती है ।

इस तरह बिछाये गये सूत को चावल के माँड में अच्छी तरह भिगोते हैं और इस सूत को और कडा करने के लिए चावल का माँड बनाते समय उसमें मेंढ़ुआ के दाने भी मिला देते हैं । अब यह सूत जमीन से दो हाथ ऊपर आडे फैला कर कूँचो से माँजा जाता है । यह कूँचो तेल और पानी में भिगोयी रहती है । इस कूँचा का मजना या माजा या माँजन भी कहते हैं । जिन तिखानी बातियों पर सूत रखा जाता है उन्हें माँझा और माझे के हर सिरे पर बाँस की खँभिया को ढेंपनी या लाठीडोर या गोडा या खसरया या ठठा या लाठी कहते हैं । माँजने वाले कूँचो के राशा को खसखस या कतरा की जड़ कहते हैं माँजने की प्रक्रिया को पाई करना या तासन करना भी कहते हैं । इस प्रक्रिया में काफी परिश्रम और समय लगता है । इसी लिए जब जुलाहा कहता है आज पाई कर रहा हूँ, इसका मतलब सहज रूप में यह होता है अभी बुनाई काम दूर है, मसल मशहूर है जोलाहा के आई पाई, चमरा के बिहान (कल)' ये कभी पूरे नहीं होते ।

सूत मँज कर करघे पर बुनने के लिए तैयार हो जाता है । करघा का बना वट इस प्रकार होती है । करघे को करिगह या करगह भी कहीं कहीं कहते हैं । बुनने के लिए जो औजार उपयोग में लाया जाता है उसे ढरकी या कपरविनी या कपरनी (संस्कृत नाम तुरी) कहते हैं । ढरकी में एक सूराख होती है जिसमें सूत निकल कर बुना जाता है उसे तिरि कहते हैं । यह सूराख अच्छी में जब सूत पूरा लपेट लिया जाता है । तो इसको लरी या नरी करते हैं । यह लरी ढरकी के के खाले हिस्से में नुकीले पर से थम्हा रहता है । इसको पसनरी या बिर या पसबिर या पतियारी कहते हैं । जुलाहे की बुनाई की नाप नरी है । कितनी नरी बुनी गयी इसी हिसाब से उसका काम एक नरी, दो नरी आदि संख्याओं से नापा जाता है । जुलाहा ढरकी को आगे चला कर ऊपर से लटकी हुइ लकड़ी की सचिया (<सचिका) या हत्था या कमहेंड या कमहडा या तनकर चलाकर सून अपनी ओर खींच कर उसे व्यवस्थित करता है ।

एक कंघानुमा बाँस की राछ होती है, जो ताने के सूतों को अलग किये रहती

हैं, जिससे सूत उलझ नही सकते । सत्ता को उठाने या गिरान के लिए ब या बए उपयोग म लाया जाता ह । बए के आग तीन हल्की लकडिया का अतरावन या तारावन होता ह जो ताना और बाना के सूतो को उलझने नहीं देता कभी कभी एक और अतिरिक्त अतरावन काम म लाया जाता ह जिसे भजनी या अतरावन भांज कहते हैं । बुने जाते कपड को तान रखने के लिए पनिक या पनि नाम की एक चीज जो एक लचीली धनही की शक्ल की होनो ह काम में लायी जाती ह ।

बुनकर के आगे एक लकडी का बल्न रहता ह जिसमें बुना कपडा बुनते ही लपेटा जाता ह । इसे लपेटन या चौपट कहते ह । यह लपेटन खूटो पर टिका रहता ह । दायें बाजू वाला खूटा जमेला या जिहला या जिहेला या गाली खूटा कहा जाता ह । यह बलन के आरपार जाता ह और बेलन को उलटन से रोकता ह बायें बाजू वाला खू टा बँधला या बँवारी या पछेला या कधला या थमैला कहा जाता ह । पाई या सूत का ताना बुन कर सामने वाल सिरे पर एक लकडी के खूँटे में जडी लकडी से थम्हा रहता ह इसको खरकौट या खरकोटी या सरकूटी कहते ह । खूँटी को कनली या धूम या धुम्मी या धुही या खरहो खूटी कहते हैं । पाई को ताने रखने के लिए करघे म सिर पर एक गोल खूटी में एक डोरी लगी रहती ह जो बुनकर के हाथ की पहुँच तक आती ह और एक दूसरी खूँटी में लपेटी रहती ह, वह जब चाहता ह तो पाई को ढीला कर देता ह जब चाहता ह तान दता ह । आगे वाली खूटी अगला या मरकौनी पिछली खूँटी डोरत्रपा की खूटी या कनलिल्ली कही जाती ह बुनकर जिस पर पर रख कर करघा चलाता ह उसे पौंसार धसार या पोसार कहते हैं । इस में एक मेख जडी रहता ह जिसे अगूठा के बीच में बुनकर दबाय रखता ह इसे पौतान कहते हैं ।

बए को ऊपर से गिरान या उठान वाली लकडो को कहो नचनी या लोचनी या लचनी कही जाती ह । इस नचनी को ऊपर को एक और कडो से बांध रखत हैं । उसे अमेर या भिनभेरा या धचाना या अकासी या उपरकर या करवार या कर कहत हैं । पाई का लटकन वाला हिस्सा सिरारा कहा जाता ह जो टेंगनी के ऊपर लपटा रहता ह और ऊपर लटकाया रहता ह । ताने क ऊपर जो दूसरा सूत बुना जाता ह उसे बाना कहत हैं ।

कपडा को किस्म के ऊपर अलग विस्तार से चर्चा होगी । पर इसी बुनाई के सदम में ऊन क कबल बुनन वाल गडरिया (भडिहार या गडर या गडरी) क काम की चर्चा प्रासगिक होगा । उनका करघा बहुत साधा-सादा होता ह । जिस बल्न पर कंबल लपटा जाता है, उस ओलार या सिमोय या मिजा या कमहर

कहते हैं। यह दो खूँटियों पर टिका रहता है जिसे खट्टी या सोंटी कहते हैं, कहीं कहीं इसे गाली या गलियारी भी कहते हैं। कहीं कहीं बायीं खूँटी को बरनी और दायीं को गाली अलग अलग नाम से पुकारते हैं। बुनकर के सामने वाले सिर पर जिस ऊपर की कनी में ताना बाँधा जाता है, उसे ओहारी कहते हैं। बैंव या हत्था नामक लकड़ी से तान का सूत कसा किया जाता है। सूतों को सुलझे रखने के लिए तगधरी या थल्ट या बरत नाम की लकड़ी बराबर चलायी जाती है। सूत को ऊपर उठाने और दूसरे को नीचे गिराने के लिए चपनी या फट्ठी काम में लाया जाती है सूत की गाँठ या सुर्री बराबर करने के लिए लकड़ी की एक कूँची काम में लाया जाता है। इसे निसोरनी या निगोरनी या निधोरनी कहते हैं। कपड़ा बुनने वाली लकड़ी सरंगा या सेरग कही जाती है। ताने के दो सूतों के बीच में कहीं-कहीं बाँस का एक पट्टा रखते हैं। इसे सौमन या धौंगा या सासर कहते हैं।

२८

बढईगिरी और लुहारगिरी

गाँव के कारीगरों में बढ़ई (<वड्ढकी <वर्धकी) बड़ी ऊँची हैसियत रखता है। वह खेती के औजार बनाता है। गाँव के मकानों का समूचा लकड़ी का काम करता है, बैलगाड़ी और नाव गढ़ता है और विवाह जैसे संस्कार में मंगल पीठिका (कमल बेल की खुदाई से युक्त पिढ़ई) बनाता है, उस का आनुष्ठानिक महत्व भी है। बढ़ई को मडधा, कमार और बढ़ही भी कहीं कहीं कहते हैं, और बढ़ई खाना को कमरसार भी कहते हैं।

बढ़ई के औजारों में सब से मुख्य है बसूला या बसूला या बासिला। इस से वह गढ़ने, छीलने, छेव लगाने का काम करता है। इसमें लकड़ी की छोटी बेंट में एक चौकोर धारदार लोहा ठुका रहता है। मोटी और बड़ी लकड़ी को काटने के लिए टाँगा या टाँगी या टगारा या कुल्हाड़ी और फरसा भी काम में लाया जाता है।

बड़ी लकड़ी चीरने के लिए आरा, छोटी लकड़ी चीरने के लिए आरी काम में लायी जाती है। बड़े आरे को चलाने का काम बढ़ई खुद न कर के आराकश या अरकसिया लगाते हैं। लकड़ी में छेद करने का काम बर्मा से लिया जाता है। बर्मा एक कमानी या कमानचे में लगा रहता है और बढ़ई उस की मूठ (मूठ) हाथ में रखता है और हथेली से बर्मा की टोपी या पला या दबनी या दबोटा दबा कर बर्मा चलाता जाता है। उस डोरी को दुआली या जोती या जेंवर भी कहते हैं जो बर्मा को खींचती रहती है। बढ़ई के पास ठोकने के लिए हथौड़ा या लिट्टावर रहता है। इसी का लघु संस्करण नारतोल या हथौड़ी कहा जाता है। कहीं कहीं इसे घन और मरिया भी कहते हैं।

छेद मारने के काम के लिए कई प्रकार के औजार काम में आते हैं। नुकीली छेनी, चच्चक या बटारी या बटाली या बज्जर कही जाती है। लंबे छेद के लिए और बड़े सुराख के लिए रुखा काम में लाते हैं। सकरे और चौड़े छेद के लिए चौरसा या बतासी काम में लाई जाती है। मोटे काम के लिए अमूमन रुखानी (जो बड़ी मोटा होती है) काम में लाते हैं। सिर्फ रुखा बनाने के लिए गिरदा या लोलिया या गोरदार रुदा या गोलक खुरजसाव काम में लाते हैं। गोल पेंदा बनाने के लिए गोलक या गोला रुखानी या गोरदार रुखानी या गौच (<अंग्रेजी गोज) या गिरमिट (<अंग्रेजी गिम्लेट) और बहुत बड़ा खोखला बनाने के लिए (जस कि ओखली में) चौंच रुखानी काम में लाते हैं।

सतह बराबर करने के लिए रंदा काम में लाया जाता है। रंदा में एक तो धार होती है जिसे फल्ली या फलसा कहते हैं दूसरे उसका मुंदा, धार खूटी या ठेकी या घला या पच्ची या पचड़ी या पच्चड़ या ठेपी में बठायी रहती है। मोटे काम के लिए जो रंदा काम में लाते हैं, उसे खरना या दांत रंदा कहते हैं और महीन काम के लिए साफी रंदा काम में लाया जाता है। कोर को चौकोर बनाने के लिए दराज रंदा काम में लाया जाता है।

चौकोर या वर्गाकार खाना बनाने के लिए खुरजसाव या गुरुजसाप गोल खाना बनाने के लिए गल्ता या खिल्ली या खिरकी और दरवाजा के काम के लिए सारी का रंदा या पलाऊं काम में लाते हैं।

रेतने के लिए कई प्रकार की रेतियों का उपयोग होता है। आरा की धार तेज करने के लिए कतरा या कतरी या कतरोही या तेपल या तिपल्ला या कनासी का उपयोग होता है और मोटे काम के लिए सोहन रेता का। चौड़ी रेती को चौरसा रेती कहते हैं। एक अधचन्द्राकार रेती होती है, जो चिकनेपन के लिए काम में लायी जाती है। उसे मैगिरी या नीम गिरिद कहते हैं। एक चौपहल रेती भी होती है।

साध आदि देखने के लिए बटाम चलता बटाम और गुनियां का उपयोग करते हैं। नापने के लिए परकाल का सिर्फ रेखाएं लगाने के लिए खतकस या कोरसूत का उपयोग करते हैं। चिकनापन लाने के लिए सरेस कागज, सरेस पत्ता या सरेस कन्ना या साफी का सतह पर रगड़ते हैं।

कांटा आदि निकालने के लिए जम्बूरे या सँडसा का उपयोग करते हैं। बढ़ई जिस ठीहे पर काम करता है उसे ठिया, ठिगा पटकठी और परियाठा भी कहते हैं। लकड़ी खरादने वाले को खरादी कहते हैं।

लोहार या लुहार या कमार को काम करने की जगह लोहसार **या कोहसारी**

या चमरसारी कही जाती है। जिस लोहे के आधार पर उसका अधिकांश काम होता है उसे निहाई या सदाई अहेरन, गेन या लिहाई या नेहाई कहते हैं। यह निहाई ठीहे या परेठ या गड़ियास या अकुड के ऊपर गड़ा रहती है। एक किस्म की निहाई होती है जो नुकीली रहती है और लोहे में छेद करना होता है तो उसे उस पर रख कर उसमें सुराख करते हैं। इस निहाई का नाम हथकाई या छपरौना या घनफुड़ो है जिसके ऊपर थोर या थोरी या हुना जड़ा रहता है। इसी के ऊपर कांटियों की टोपी भी बनायी जाती है। इसीसे इसको छपरौना या छपरौनी भी कहते हैं। लोहा पाटने के लिए बड़ा घन या छोटा हथौड़ा काम में लाया जाता है। गरम लोहा पकड़ने के लिए सँड़सी या गहुआ या चगुरी काम में लायी जाती है। एक नरम्बो या सड़सी भी होती है उसे मुगही कहते हैं। आग तेज करने के लिए अकुरा या अँकुड़ा या अंकोरी या कोलटारा या कोलतारा काम में लाया जाता है। छेनी काटने के काम में आती है छेद करने के लिए टोपन या टोपनी या सुम्मा या सुम्मी काम में आती है।

लुहार को अपना लोहा तपाने के लिए आँच तेज रखनी पड़ती है। इसीके लिए भाथी या धौंकनी का उपयोग होता है। यह चमड़े की होती है। हाथ से चलाई जाने वाली भाथी दुहत्थी या एकहत्थी या सुपौआ या कठभाँथी कही जाती है। भाथी का नली का जो सिरा आग को छूता है उसे मुहारी, म्होहड़, मूड़ा या थूड़ी या मुड़िया, अँकुड़ा, मूड़ी, मोहखा मोखड़ी या सालक कहते हैं। नली को फूक, छूछी, चोंगा, सुरमा या सुम्सो कहते हैं। इससे लुहार की भट्ठी धौंकी जाती है जहाँ से हवा घुसती है, धौंकनी के उस ऊपरी भाग को घोका कहते हैं। लोहे की नली के ऊपर एक मिट्टी की पिंडाई होती है। उसे आरन या अरनी या आर या मेट्टम या मोटहम कहते हैं। भाथी या धौंकनी के दोनों बाजुओं पर तख्ते या पटरे लगे होते हैं। चमड़े का पखा या पँखड़ी या गद्दी चरख की तरह घूम घूम कर हवा भरती रहती है। दोनों भाथियाँ जिस धुरी पर काम करती हैं उसे अँकुरा, धूरी, कोड़ा या सुरसा कहते हैं। भाथी उठाने गिराने वाली लकड़ी डटा, लाठ या छीप कही जाती है। भाथी जिस लोहे के छड़ के नीचे रहती है उसे बडेड़ा बरठा या मेड़या कहते हैं। हाथ से चलाई जाने वाली भाथी के दोनों किनारों पर फँसाने के लिए फश लगा रहता है। लुहार उसी में बायाँ हाथ डाल कर भाथी चलाता रहता है। भट्ठी की आग की लपट को झार कहते हैं भट्ठी की आग की लपट छुए न, इसलिए एक ओट लगा देते हैं।

ढिभरी आदि कसने या घुमाने के लिए लुहार पाना, कवला या छुच्छी का उपयोग करता है। लोहे की सतह को चौरस करने के लिए (माठने के लिए)

माठना काम में लाया जाता है। कसने और दाबने के लिए तख्ते में जमा हुआ एक औज़ार काम में आता है। उसे बाक या बस या हथक्ल कहते हैं। इसके दो पल्ले होते हैं और इसमें एक गहुआ होता है जिसे मुसरा या कवला या छूछी या चांगिया कहते हैं जिसे चलौनी या हथकडा या हत्था से चलाते हैं। पेचकस के साँचे का खादिया चांदया या डाई कहते हैं। इसमें डाल कर पेचकस, चुटकी कुटका, डिबरी या कफ़ला बनाते हैं।

लुहार जिस पानी की कुंडा में लोहे के औज़ारों या गरम टुकड़ों को बुझाता है उसे जलल्ली, पनिहड़ा, पनिहारा, लबेरी, नबेर, पनवाहा चाहा या नमेरी कहते हैं।

इसके अलावा रेता धर्मा आदि औज़ार बढ़ई और लुहार के समान होते हैं। लोहे को पीट कर पतला बनाने के काम को खोटना या धार धरना या धार फरगाना या धार असराना या धार पजाना या धार पिटाना कहते हैं। सान पर चढ़ा कर धार तेज़ करने को पनाना, पानी चढ़ाना, चाड़ना और पानी धरना कहते हैं।

० ०

३९

कभी गाडी पर

गाँवों में यातायात के मुख्य साधन के रूप में गाड़ी और नाव अब भी सनातन सत्य हैं । बैलगाड़ी आकार के अनुसार कई किस्म की होती है । छकड़ा या गाड़ा या टायर (ताड़ा) (चपूस गाड़ी) हल्की बैलगाड़ी लढ़ी, सग्गड़, लढ़िया और सवारी वाली गाड़ी रथ बहली सीगी कही जाती है । सबसे हल्की गाड़ी एकबरधा होती है जिसका ऊँचा नीचा जमीन पर अधिक उपयोग होता है । बैलगाड़ी में एक, दो तीन या चार बैल तक जुतते हैं (दोबरधा चौबरधा) तीन बैल जब जुतते हैं तो दायें-बायें वाले दो बैल फाड़ी या धुरिया और बीच वाला बैल जिड़िया या जिट्टी या माटा कहा जाता है ।

बैलगाड़ी के ढाँचे के चार मुख्य भाग हैं पहिया धुरी ऊपर वाला ढाँचा और जुआ पहिया या चक्का । पहिया के तीन हिस्से होते हैं मगर या जमोट (काठ की ६ पट्टियों या पुट्ठियों के जोड़ से बना गोल घेरा) नाह (<नाभि) बीच की गाँठ और अरा । अरा या आरा की तीन जोड़ियाँ होती हैं जो पहिये का व्यास होती हैं । अमूमन पहली जोड़ी का ही आरा रहता है यह सबसे भारी और मजबूत होता है । दूसरा जोड़ा जो इससे आगे कुछ हल्का होता है तिमारा या बल्ली या नौमपुरी या नवारा या तेवारा और आगरा जो सबसे हल्की होती है गज कहा जाता है। इन तीनों जोड़ियों को दड़िया और अगरगज भी कहते हैं । मगर की ६ पुट्ठियाँ चूर या चूल पर बनाया होता है । इन पुट्ठियों के दोनों ओर यह चूल रहती है इन काढ़ा या गाढ़ा या गरबनिला या धानी या चैंपी भी कहते हैं देह या चूर या खोंच में जिन (डाबको) बना लिया जाता

है। एक खूँटी पूरे नगर को मजबूत रखने के लिए बाहर से ठोकी जाती है, उसे उस पच्चर या पच्ची या पच्चड कहते हैं।

नाह लोहे के बंद या बन में पिहाया रहता है। पहिया के चारों ओर भी लोहा चढाया रहता है इसे हाल, कोरमार कहते हैं। नाह के केन्द्र में लोहे का गोल बेलनाकार छेद होता है इसे मोहरी कहते हैं। इसी लोहे की धुरी का सिरी (आवन) पहनाया जाता है। इधर टायरों का रिवाज हो गया है। टायर वाली पहिया के चारों ओर हाल चढाया जाता है। नाह के दोनों ओर धुरकिल्ली या रनकिल्ली या किल्ली या फरकिल्ली ठोकी जाती है कि धुरी निकलने न पाये। नाह में सन का एक बाहर (चेनी या चेंदी या चेंही, चिंधी) बाहर लगा रहता है और एक भीतर (सागन, खेंहन)।

धुरी को बाहर से मजबूत करने के लिए पहिये के बाहरी हिस्से में दो लकड़ी के टुकड़े फिट किये रहते हैं इन्हें सुलावा कहते हैं। ये ऊपरी ढाँचे के अगले और पिछले हिस्सों से बँधे रहते हैं। शीशम की एक टेढी लकड़ी और रहती है जो धुरी के नीचे से उसे टेक देती है। इसे पजनी या दाब कहते हैं। पजनी को आगे की ओर से बाँधने वाली रस्सी जत कही जाती है पीछे की ओर वाली रस्सी कुलेंगड़ा या कुलगड़ा। जत का एक सिरा कड़ी में खोंसा रहता है और टेकानी और कड़हड़ी में लगी रहती है। जत को अमेठी या सलया से कड़ा रखा जाता है। पजनी लोहे की एक सीकड़ जैसी चीज है दो कोढ़ों में गाड़ी की आक के भीतरी हिस्से (पगाह) में दो छल्लियाँ (कडलडिया) लगी रहती हैं उन्हीं में यह सीकड़ जुड़ी रहती है।

गाड़ी का ढाँचा प्रायः तिकोना होता है, पीछे की तरफ चौड़ा आगे की तरफ सिर्फ एक सिरा। पिछला हिस्सा चौकोर होता है इसका सबसे पिछला हिस्सा ही आक या आग या आख कहा जाता है। इस आक के नीचे एक और लकड़ी रहती है उसे पड़ाव कहते हैं। आक के पीछे बांस का पछलकड़ा या पिछलकड़ा या अकोरा या पछेड़ना लगा रहता है। आक के आगे टेकानी या तेकानी होती है। पिछले चौकोर हिस्से के दो बाजू जो पहिया के ऊपर रहते हैं धुरौटी और टेकानी को जोड़ने वाली खूँटी बिलया कही जाती है और टेकानी और सबसे आगे के हूरे को मिलाने वाली लकड़ी पिढ़िया कही जाती है।

अगला हिस्सा सगुन या सगुनी या सबुनी कहा जाता है। इसका तला थोप कहा जाता है। गाड़ी के ढाँचे की दो लम्बी भुजायें फड़, फड़, हरसा या तागा कही जाती हैं। कभी कभी इन्हें मजबूत करने के लिए इनमें लोहे का पत्तर या

बन्द लगा देते हैं। गाड़ी के ढाँचे (ढाँच) में इस प्रकार फर, आर, टेकानी और पिंड़िया ये चार मुख्य हिस्से हैं। इसके अलावा तीन लम्बी पट्टियाँ और १३ आड़ी पट्टियाँ जुड़ी रहती हैं जिन्हें क्रमशः फरी या घरोट या मांना या भरानी या कड़ही और बत्ती या बता या घालो कहते हैं। ये फरफिल्लो या कीलियों से जुड़े रहते हैं।

गाड़ी के पीछे पछुआ लगा देते हैं कि कोई सामान पीछे न गिरे। पिंड़िया के ऊपर का खूंटा (खम्भा) के ऊपर बाँस का एक तीज रहता है। ढाँचे के दोनों बाजुओं में एक-एक बल्ला या बसोरी या बांसवल्ली या घदवा आरे और तीज के ऊपर रखा जाता है। कभी-कभी ये बल्ले टेकानी से फर और कभी-कभी टेकानी से सगुनी तक लम्बे चले जाते हैं। इन बल्लों का थोप कहते हैं। रस्सी का ढाँगली या बीघी या ढाँगड़ी या जोंड़ा या सोठ से ये कई फेरों में नीचे के ढाँचे से बँधे रहते हैं। इस प्रकार ये सामान रखने के लिए दीवाल का काम करते हैं।

गाड़ी हाँकने वाले (गाड़ीवान) की बैठकी मोहरा या मोढ़ा कही जाती है। टोकरी वगैरह लटकाने के लिए गाड़ी के नीचे धोम रहता है। सगुनी के बीच (एक मोटी खूंटी) उदरा रहता है। सगुनी के ऊपर जुआ के साथ जोड़ने के लिए मुहमोपड़ा या मोहड़ा रहता है। जुआ को जूअड़ भी कहते हैं। इसमें बैलों के कन्धे के दोनों ओर जुआ में दो दो खूंटियाँ होती हैं जिनके बीच में बँधे रहते हैं इन्हें समइल या सिम्मल या सेमल या बनल कहते हैं। भीतर वाली खूंटी को कहीं-कहीं विरवा भी कहते हैं। बैल जोतने के पहले गाड़ी को उठाकर सिरपाया या सिपावा पर टिका देते हैं। सिपावा का माथा माझा कहा जाता है। गाड़ी को उलटने से रोकने के लिए कभी कभी एंड़ा, उलरुआ या सिपवाई की टेक भी लगाते हैं। बैलों की गर्दन में लगी रस्सी जोता या जाती या गलजोती कही जाती है।

सवारी गाड़ी या बहली की आकृति कम लम्बी होती है। पीछे की ओर वर्गाकार बैठने की जगह होती है उस पर छतरी या टटरा तना रहता है नीचे गद्दा या गदेला बिछा रहता है। पूरे पिछले हिस्से को जिसमें सवारी बैठती है पट्टा या पट्टा या बौहड़ी कहते हैं। पीछे की ओर की टेक के लिए टेकुआ और बावली लगाये जाते हैं। कभी कभी सामान के लिए अलग जगह निकालते हैं। उसे हुँडुआ या ढाला या अड़ानी कहते हैं। अगर नयी बहू सवारी कर रही हो तो ओहार या पर्दा चारों ओर डाल देते हैं।

आजकल रबर के पहिया वाली गाड़िया का सवारी में अधिक उपयोग होन लगा ह। इन्हें डनलप या टायर गाडी कहते हैं। गाड़ी आग का ओर हल्की हो ता उलार और भारा हो ता दब कही जाती ह। आज भी दहाता में यातायात क मुख्य साधन के रूप में बल्गाडी का उपयाग उसा तरह हा रहा ह जिस तरह वदिक युग में होता था।

● ●

बंद लगा देते हैं। गाड़ी के ढब्बे (ढाँचे) के इस प्रकार फड़, आक, टेकानी और पिढ़िया ये चार मुख्य हिस्से हैं। इनके अलावा तीन लम्बी पट्टियाँ और १३ आड़ी पट्टियाँ ठुकी रहती हैं जिन्हें क्रमशः फरी या चपोट या मासा या भरानी या पखड़ी और वत्ती या वत्ता या चारी कहते हैं। ये परकिल्ला या कांटिया से ठुके रहते हैं।

गाड़ी के पीछे पगुआ लगा देते हैं कि कोई सामान पीछे न गिरे। पिन्ड़िया के ऊपर दो खुटरा (खम्भा) के ऊपर बाँस का एक तीज रहता है। ढब्बे के दोनों बाजुओं में एक एक खम्भा या बसोरी या बँसवल्ली या खदवा आक और तीज के ऊपर रखा जाता है। कभी कभी ये खम्भे टेकानी से फड़ और कभी-कभी टेकानी से सगुनी तक लम्बे चले जाते हैं। इन खम्भों को चोप कहते हैं। रस्सी की दावली या बोधी या डोंगडी या जोड़ा या सोंठ से ये कई फेरों में नीचे के ढाँचे से बँधे रहते हैं। इस प्रकार ये सामान रखने के लिए दीवाल का काम करते हैं।

गाड़ी हाँकने वाले (गाड़ीवान) की बैठकी मोहरा या मोढा कही जाती है। टोकरा वगैरह लटकाने के लिए गाड़ी के नीचे थोम रहता है। सगुनी के नीचे (एक मोटी खूटा) उढरा रहता है सगुनी के ऊपर जुआ के साथ जोड़ने के लिए मुहयोपड़ा या मोहड़ा रहता है। जुआ को जुअड़ भी कहते हैं। इसमें बैलों के कंधे के दोनों ओर जुआ में दो दो खूटियाँ होती हैं जिनके बीच में कंधे रहते हैं। इन्हें समइल या सिम्मल या सेमल या कनल कहते हैं। भीतर वाली खूँटी को कहीं-कहीं किरया भी कहते हैं। बैल जोतने के पहले गाड़ी को उठाकर सिरपाया या सिपावा पर टिका देते हैं। सिपावा का माथा भाड़ा कहा जाता है। गाड़ी को उलटने से रोकने के लिए कभी कभी एड़ा, उल्टआ या सिघवाई की टेक भी लगाते हैं। बैलों की गर्दन में लगी रस्सी जोता या जोती या गलजोती कही जाती है।

सवारी गाड़ी या बहली की आकृति कम लम्बी होती है। पीछे की ओर वर्गाकार बैठने की जगह होती है उस पर छतरी या टटरा तनी रहता है, नीचे गद्दा या गदेला बिछा रहता है। पर पिछले हिस्से को जिसमें सवारी बैठती है पट्टा या पट्टी या बोहड़ी कहते हैं। पीछे की ओर की टेक के लिए ढढ़आ और बावली लगाये जाते हैं। कभी कभी सामान के लिए अलग जगह निकालते हैं। उसे हँटुआ या ढाला या अदानी कहते हैं। अगर नयी बहू सवारी कर रही हो तो ओहार या पर्दा चारों ओर डाल देते हैं।

आजकल रबर के पहिया वाली गाडियों का सवारी में अधिक उपयोग होने लगा है। इन्हें डनलप या टायर गाडी कहते है। गाडी आगे का और हल्की हो तो उलार और भारी हो तो दब कही जाती है। आज भी देहाता में यातायात क मुख्य साधन के रूप में बलगाडी का उपयोग उसी तरह हो रहा है जिस तरह वैदिक युग में होता था।

• •

३०

कभी नाव पर

कभी नाव संयोग हमारी व्यवहार परक दृष्टि का प्रसिद्ध उपमान है। हिंदी भाषी क्षेत्र प्रायः नदियों का देश है, इसलिए नाव का उपयोग अत्यंत प्राचीनकाल से नदियों को इस पार से उस पार उतारने के लिए रहा और व्यापार के लिए भी उसका उपयोग होता रहा। पूर्वी भारत में अब भी नाव से सामान ढोने का काम लिया जाता है।

बड़ी नाव के मुख्य प्रकार हैं उलांक (जिसमें एक लंबा नुकीला सिरा पानी के ऊपर निकला रहता है) मेलहनी (जिसका सिरा चपटा और चौड़ा होता है) पनेली या पटेला या पटला या बतरा के ऊपर पटरे बिछे रहते हैं; कच्छा एक चौकोर नाव होती है जिसमें मांग या करवार नहीं होता। दो डांडों से खेयी जाती है; यह छिछले पानी के लिए उपयुक्त होती है और अधिक बोझ ले सकती है। सारंगा या सरंगा या सन्नीना या सरिया भी छिछले पानी के लिए उपयुक्त होती है। इसकी पेंदी गोलाकार होती है।

छोटी नावों के मुख्य प्रकार ये हैं: डोहट या डोइट, इनकी पेंदी चिपटी होती है, इसका मांग और करवार बहुत ठोस होता है; घनमुही हल्की नाव है, इसकी पेंदी गोल होती है; इससे भी हल्की नाव पलवार और एकठा या बगड़ा है। ये अधिकतर निजी नावें होती हैं। मछुओं की नावें डोंगी और खोलनया कही जाती हैं। खोलनया के दोनों सिर बड़े नुकीले और ऊपर उठे होते हैं, यह जल्दी डूब नहीं सकता। इसके अलावा घड़ों को बांस के साथ जोड़ कर घरनई बनाते हैं। बड़ी बड़ी बल्लियों को जोड़कर और एक के ऊपर दूसरी पांती बिठा कर बल्लियों की नाव बनती है। तिजारती नावों पर प्रायः छाजन रहता है,

बड़ी सजी धजी नावें बजरा कही जाती ह।

नाव की गढ़ाई महीनों लेती ह और इसीलिए मसल मशहूर ह, कभी गाडी नाव पर और कभी नाव गाडी पर, नाव की आडी पटरियाँ गूढा और बेंडी पटरियाँ बाता ठडिया या ठढ्वाता या गोछा या बाघ या गुच्छा कही जाती ह। छोटी आडी पटरियाँ बाँक कही जाती हैं। बाहर के तख्ते हार या बावल या बगल या जलमहार कहे जाते हैं जो तख्ते एक सिरे से दूसरे सिरे तक लबान में जडे जाते हैं उन्हें अहार या दीवाल कहते ह। भीतर के तख्ते पाटन या पटवतन या पटौरी कहे जाते हैं। इनके ऊपर कभी भी लबा तख्ता डाल दिया जाता ह। उसे अपती कहते हैं। नाव को पेंदी के ऊपर जो जडाई होती ह, उसे चालों या उढ़रा या पटाई कहते हैं। पटला नाव में जो तख्ते इस सिरे से उस सिरे तक नाव के ऊपर जोडे जाते हैं, उन्हें लेवा कहते ह। गर पटला नावों में ऊपर जुडाई नहीं होती, केवल बीच में पतले और मजबूत तख्ते मुश्किल से बठने भर के लिए जडे रहते हैं, इन्हें मरिया या मोरिया कहते हैं डाड खेने वाली की जगह पटौरी या बिठन और ऊँची नाव पर इसे बीट या पटाई या हलमचानी या मचान भी कहते हैं। पेंदी में चाचर (झाऊ के झाड) बिछे रहते हैं, उस पर आदमी पैर रख सके। आडी पटरियों को थाम्हने वाले यू ही कडवा कही जाती ह। नाव बाँधने के लिए लोहे की छल्ली लगायी जाती ह उसे कडी या जोका कहते ह।

नाव में अगर पलाश की छाल से दरारें भरी जाती हैं तो इस भराई या निगाफबन्दी का रसवत और अगर सन या पाट से का जाता ह तो इसे गहनी कहते हैं कभी कभी भराई के लिए अटार (पतली रस्सी) का भी उपयोग होता ह। पेंदा का निचला पटरा सिक्का या सहन या बतन या डडा कहा जाता ह और यह पूरी लम्बाई में इस सिरे से उस सिरे तक जाता ह और इसकी मजबूती पर ही नाव का दारोमदार रहता ह।

नाव की लम्बान दवर कही जाती ह नाव की पिछाडी गलही और अगला हिस्सा माग या मल्ग। माग को मल्लाह अच्छी तरह ठीक कर सुबह नाव खालता ह, माँग की ओर अधिक बोझ भी नहीं होने देता। गलही पर ही मल्लाह बठा रहता ह और वहीं पतवार (सस्कृत कर्ण) या पटवार रहती ह जो नाव को घुमाने का काम करती ह। पतवार का डडा गोल या गोला या खूदा कहा जाता ह और यह नथिया से गूटे में बँधा रहता ह। पतवार की घूमने वाली लकडी सल या डठा कही जाती ह। यह जिस घिरनी में फिट की रहती ह उसे बनरा या ठेल या ठेहरी कहते ह। पतवार का एक छोर गडक्सा नामक रस्सी से और दूसरा छोर अँकवरिया से बँधा रहता ह पतवार चलाने वाला ही मुख्य मल्लाह होता ह। उसे माझी कहते हैं वही सस्कृत का कर्णधार ह।

खेने के लिए दो या चार डाँड़ या चप्पू होते हैं, इन्हें डाँड़े को करुआर या करुआरी भी कहते हैं। डाँड़े की पतली धार को पाता कहते हैं कभी कभी बहाव के लिए और अधिकतर खेने के लिए बाँस की लग्गी या लग्गा लगाते हैं। और तीन-तीन चार चार आदमी मिल कर चलाते हैं (जब नाव को बहाव में लेकर खेना होता है)।

नाव का मस्तूल गुरला या गुनरखा भी कहा जाता है। यह मस्तूल जिस लम्बे खम्भे पर खड़ा किया जाता है उसे करगुमा या जरोया या जयखमा या जरगुया कहते हैं। इसकी पेंदी मलिया या मलवा में फिर रहती है और मलिया जिस गूड़े में फिट की जाती है उसे सतघनिया या गूल कहते हैं। मस्तूल में घिरनियाँ लगी रहती हैं जिनमें से होकर उठान गिराने का काम करता है। पाल को सूत या गुतघनिया भी कहते हैं।

नाव को तेज धारा के खिलाफ ले चलने के लिए तीन चार आदमी रस्सी लगा कर खींचते हैं। इस रस्सी को गोन या गून कहते हैं। यह काफी पतली पर मजबूत बटी रस्सी होती है और यह बाँस के खूँटे या चरखा में कई फेरों में लपेटी रहती है। गोन खींचने वाले पीठ पर चरखा लिये रहते हैं और जम जम कर आगे बढ़ते जाते हैं। गोन खींचने वालों को गुनवाह कहते हैं, जब नाव इस पार से उस पार जाने को होती है, तो ये नाव पर चढ़ आते हैं। फिर कहीं रेता पड़ा और नाव फँस गयी, तो नीचे उतर कर नाव को ठेलते हैं और जरूरत पड़ने पर छिछले पानी से भी नाव ऊपर की ओर खींचते हैं।

नाव को किनारे लगा कर इसकी लहासी (मोटी रस्सी) मजबूत खूँटे या कील में कई फेर डाल कर बाँध देते हैं। अगर नाव को ज्यादा पानी में ही खड़ा करना हुआ तो लोहे का लंगर या लोहलंगर गिरा कर पानी में फेंकते हैं और वह जमीन पकड़ कर नाव को बाँध लेता है।

नाव में कभी कभी छेद हो जाता है और पानी भरने लगता है तब सेवता या सीता नामक काठ के छिछले बरतन से पानी उलीचा जाता है।

नाव जब पहली बार पानी में डाली जाती है (पनियायी जाती है) तब परीक्षा की जाती है कि कितना पानी तोड़ती है, कितना पानी इसके बार पेंदी से ऊपर आता है। उसके हिसाब से कितना बोझ लेगी इसका अंदाज लगाया है। जो नाव घाट पर चलती है उसे घटहा कहते हैं जो माल ढोती है, उसे रोजगारी या देसावरी कहते हैं घाट चलाने वाले को घटवार और महसूल को घाटखेवा या खेवाई या पार उतराई कहते हैं।

नाव के लिए सब से आराम और सब से आफत का समय बरसात है, क्यों कि बरसात में ऊपर नीचे दायें बायें पानी का ही पारावार रहता है, इसलिए दूर दूर तक नाव से ही यात्रा की जा सकती है, रेतियाँ डूब जाती हैं नाव को

खीचने या ठेलने की जरूरत नही पडती, एक बार खूब ऊपर ले जा कर नाव छोड दी जाती है और कड़लाधार मिनटों में कई मील का पाट पार करा देती है। पर आफत है पुरवाई के तेज झोके से जब ऊँची लहरें उठती हैं या भेडिया उठने लगता है। उनके थपेडों में नाव हिलकोरा मारने लगती है। उसे सँभालना मुश्किल हो जाता है। पाल गिरा देनो होती है नही तो नाव के उलटने का डर रहता है। माझी और दूसरे मल्लाह तब चुपचाप राम का नाम लेते हैं इसी तरह जब नाव का किसी बहते हुए पेड से टकराने का डर उपस्थित हो जाता है तो जोड़-तोड से मल्लाह नाव को उधर जाने से खीचने लगते हैं कभी कभी दो धाराओं की टक्कर (सिल) पर नाव पहुँचने पाये, इसलिए नाव की उल्टी खेवाई शुरू होती है, क्योंकि ऐसी जगह पहुंचने पर पेंदी सीधे भरर कर टूट टूक होने का डर रहता है। प्राय नावें ऐसी जगहों पर ही मारी जाती हैं (डूबती हैं)। मल्लाह भौंरी से भी बहुत डरता है क्योंकि वह नाव को भीतर खींचती है। नाव वाला आफत में सवारियों से हाथ जोडता रहता है कि नाव की आरी पर न आयें, चुपचाप बैठे रहें पर नाव उसके काबू में रहती है, वो वह फिर बादशाह रहता है घाघ पंडित के अनुसार वन में अहीर (ग्वाला), माँग पर केवट (मल्लाह) और मके में जोरू ये तीनों किसी के हित नही इनका कोई एतबार नही। पर नाव के खेल भी अपने बडे रोचक हैं। छोटी छोटी एकठा नावों में लोग छिछली खेलने निकल जाते हैं हां मौसम सुहावना होना चाहिए और इस खेल में नाव बडी तेजी से एक ओर से दूसरी ओर घुमायी जाती है। मंदे पानी में नावों की दौड भी होती है। चिडिया के शिकार के लिए चोर नावें जो छप छप का शब्द भी नही करतीं उपयोग में लायी जाती हैं।

नाव का ही बृहत्तर रूप वाहित्र (वहित्र) बेडा या जहाज है और पार मार्थिक सतरण के साधन के रूप में भी इसी बिम्ब का प्रयोग निरंतर होता है। नौका हमारे जीवन दर्शन की एक मूर्त व्यंजना है।

● ●

शब्दानुक्रमणिका

अकड़ा—रहट का बकड़ा जाना (बैलों का एक रोग)।

अकबरी—पहियानुमा एक मिठाई।

अकरी—हल का मूठ।

अकासी—अमेर।

अक्षत—विवाह का चावल (हल्दी में सना हुआ रंगा हुआ)।

अक्षयतृतीया—वैशाख शुक्लपक्ष की तृतीया अखइतिजिया।

अक्स—छायाचित्र।

अखइतिजिया—अक्षयतृतीया।

अखफुट्टा—टिड्डी की आकृति का एक कीड़ा जो पत्ते चट कर जाता है।

अखरा—बिना साफ किया हुआ चावल।

अगता—पहले आने वाला।

अगदाई—सबसे बाहर वाला दौंरी का बैल।

अगरवधू—कटने योग्य पौरा।

अगरौटा—ठेकुआ।

अगला सिरा—अगरा।

अगवार—दूर बिखर जाने वाला अनाज।

अगहनी—अगहन के महीने में पकने और काटने वाली धान की फसल।

अगहनुआ—अगहन में होने वाली उड़द।

अगाड़ी—घोड़े को बाँधने वाली रस्सी।

अगारी—अगाड़ी।

अगारी—अगर।

अगिया—धान के पौधे को जला डालने वाली घास।

अगोल—पाहन।

अगौता—आग वाली लुटी।

अग्निप्रदक्षिणा—विवाह की एक क्रिया जिसमें वर वधू को अग्नि की प्रदक्षिणा करनी पड़ती है।

अघा देने वाली वर्षा—भूमि को पूर्ण जलमय बना देने वाली वर्षा।

अघोड़ी—रखोली।

अगूरी—अंगूर के रंग की अंगूर से बनी हुई।

अछाय—बिना छाया के।

अजमोदा—अजवाइन।

अजवाइन—अजमोदा जवाइन।

अटार—पतली रस्सी।

अटेरन—एना।

अठखेली करना—क्रीड़ा करना।

अठदंता—आठ दाँत वाला बछड़ा।

अठदल कमल—अष्टदल कमल।

अठपरा (कुआँ)—जिस कुएँ पर आठ पुर चलें।

अठमासिया—एक प्रकार की बेल रचना।

अड़गड़ा—अगला साँकल।

अड़ानी—एड़ा।

अड़ानी—हलुआ।

अड़ार—टूटने योग्य।

अड़ार—नदी का जलवर्ती किनारा।

अडिया—कूकरी।
अडिया—एक आभूपण।
अडियल—कामचोर बल।
अतरावन—अंतर देना
अतरावन भांज—एक प्रकार का अत रावन।
अथाह—नदी का वह भाग जिसकी गहराई का ठीक पता न चल सके, अत्यधिक गहरा।
अदंत—जब तक दूध के दांत नही पड़ते।
अदरख—आदी।
अदवान—उडचन।
अदवाइन—खांचा में लपेटी गई एक डोरी।
अदहन—चावल या दाल उबलने के लिए पहले रखा हुआ केवल पानी।
अदहन—खौलता पानी
अदालती ब्याह—घर वठौनी विवाह का कानूनी सस्करण।
अदौरी—कुछ तरकारियाँ जो उडद या मूंग के साथ लपेटकर धूप में सुखा ली जाती हैं।
अधढंकी—आधी ढंकी हुई रोशनी।
अधभरी—पड़या अनाज।
अधवा—१४ ढाली पान।
अधसंवरानी—कुछ मंद होना, कुछ श्यामल होना
अधिकमास—मलमास, पुरुषोत्तममास।
अधिकवर्ष—अधिकमास वाला वर्ष।
अधन—अदहन।
अनंत—एक बांह का आभूषण।
अनदी—चवेना के काम आनेवाला चावल।
अनवट—पैरों के अंगूठा में पहना जाने वाला आभूषण।
अनहद नाद—भीतर वाली आवाज, अनाहत नाद।
अंतस्थ—एक प्रकार की ध्वनि।
अंतराल—अंतर।
अंधड—तेज हवा जिसके कारण धूलि छा जाय।
अन्हरिया—पुआरी या जोत, ईख का बनाना।
अनालोक—प्रकाशहीन।
अनुकृति—अनुकरण, प्रतिकृति।
अनुष्ठान—धार्मिक कार्य तथा संस्कार।
अनुबिम्ब—प्रतिबिम्ब, परछांही।
अनिल—प्राण संचार करने वाली हवा।
अनिष्ट—अनठा बैल।
अनठा— अनिष्ट, मादा बल।
अनोखा—काढा का एक प्रकार।
अपनी—भीतर वाली पटरी के ऊपर डाले गये तरने।
अपान—शरीरस्थ वायु का प्रकार।
अपां नपात्—विद्युत देवता।
अफरा—बला का पेट फूलना।
अफार—फरेरा सूखा (खेत)
अबारा—ऽगार।
अभ्यंतर—भीतर।
अमक्ली—आम की सूखी खटाई।
अमचुर—आम की सूखी खटाई का चूर्ण।

अमनिया—स्वच्छ निर्मल ।
अमरस—आम का रस, पना ।
अमलोन—खट्टा, नमकीन ।
अमाल—अदर्शन ।
अमावट—अमपपड़ी ।
अमावट की चटनी—अमावट में नमक, सरसों का तेल आदि डालकर चाटने योग्य बनाया गया एक तरल पदार्थ ।
अमावस—अमावस्या ।
अमावस्या—कृष्णपक्ष की १५ वी तिथि मास की तीसवी तिथि ।
अमिया—कच्चे आम का लघु रूप टिकोरा ।
अमियारी—आमों की वाटिका ।
अमेड़ी—कनपटी का सूजना (बैल का एक रोग) ।
अमेठी—सल्या ।
अमेर—मथनी को बाँध रखने वाली ऊपर की एक कड़ी ।
अमोला—नया पौधा (आम का)
अम्बण—अमलोन, नमकीन ।
अम्बण लगाना—किशोर अवस्था के प्यार की प्रक्रिया ।
अम्मत—खट्टा ।
अरकसिया—आरा (लकड़ी चीरने का यन्त्र) चलाने वाला ।
अरकौंच—रिक्वच, पक्वान्नविशेष ।
अरगनी—कपड़ा सुखाने की जगह ।
अरनी—आरन ।
अरराना—गिरने के समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि विशेष उत्पन्न करना ।
अरवन—बर्तन का मुँह बँधान के लिए एक कपड़ा जो ढक्कन या डोरी में रहता है ।
अरवा—बिना उबाले हुए धान का चावल ।
अरवी—अरुई तरकारी विशेष जो जमीन में बढ़ती है ।
अरहर—अन्न विशेष जिसकी दाल बनती है ।
अरा—आरा ।
अरुआ—बड़ा तरकारी विशेष ।
अरुई—अरवी ।
अरुण—लाल ।
अरया—धान में लगने वाली बीमारी ।
अरौआ—कुड्डी ।
अगला—अडगड़ा ।
अधश्याम—आधा साँवला ।
अधश्यामल—अधसँवराया ।
अरवाऊ—धूलि के बाद मेह की लाने वाली हवा ।
अर्रा—हरवगना ।
अलगल—पड़िया ।
अलती—तरकारी विशेष अरुई ।
अलव्यानी—ओदला हाल की ब्याई गाय ।
अलसी—एक तेलहन तीसी ।
अलिजर—मिट्टी का बर्तन ।
अल्पप्राण—ध्वनि का एक प्रकार ।
अवतोका—ठुमनी गाय ।
अवश्याय—ओस ।
अव्याकृत—अस्पष्ट अविश्लेषित ।
अवाँसा—पाँजा ।
अशनि—वज्र ।

अश्मखण्ड—पत्थर का टुकड़ा।
अश्मारोहण—पाणिग्रहण के समय की क्रिया।
असनी—क्वार मास में कटने वाली उड़द।
असलेसा—आश्लेषा (एक नक्षत्र का नाम है)।
असहन—अनठा बल।
असाढ़—आषाढ़ (एक महीने का नाम है।)
असाढ़ी—उन्हारी या आषाढ़ की जुताई।
असीना—घोड़े की टाँग की तरह टाँग वाला बैल।
असीस—आशीष, आशीर्वाद।
असना—अनठा बैल।
असघटित—बिखरा हुआ।
अहार—लम्बाई में जड़ा तख्ता।
अहीर—ग्वाला, आभीर।
अहेरन—निहाई।
अहोरात्र—एक दिनरात
अँकटा—गेहूँ जौ के खेत में उगने वाली घास।
अँकरा—अँकटा, पहलौन।
अकरिया—धनार ओसारि।
अँकरी—अकरा बिना साफ किया चावल।
अँकवरिया—वह रस्सी जिससे पतवार का दूसरा छोर बँधा रहता है।
अँकुठ—ठीहा।
अँकुड़ा—मुहारी, अँकुरा।
अँकुढा—अँखुवा।
अँकुरा—जिससे आग तेज करने का काम किया जाता है।
अँकुरा—वह धुरी जिस पर दोनों भाथियाँ काम करती हैं।
अँकुसीदार लग्गी—इससे डाल पर से ही फल तोड़ने का काम लिया जाता है।
अँकोरा—पिछलकड़ा।
अकोरी—अँकुरा।
अँकोरा—सँड़सा।
अँखुआ—टीभी अकुर, सुआ।
अँखुआना—अँखियाना, अकुर निकलना, सुइयाना।
अँगीठी—बोरसी।
अँगूठी—मुँदरी।
अँगेर—अगला सिरा गल्ले का सिरा।
अँगोला—गन्ने का सिरा।
अँचरापरौनी—विदा होते समय वर सास का आँचल थामता है, तो उसे कुछ उपहार दिया जाता है या द्रव्य भेंट मिलती है।
अँटिया—पाँजा।
अँठुली—गुठली आम की।
अँडाउआ—अडी का पौधा।
अँदरसा—भीगे गेहूँओं की भिगी से बनी घी में सिकी रोटी।
अवरसा—गोल टिकिया सदृश एक मिठाई।
अवाल—अदवाइन।
अँवासना—नडाहना, नया बर्तन उपयोग में लाना।
आक—आग, गाड़ी का सबसे पिछला हिस्सा।
आग—आक।
आगिल—अगदाईं।

आगा माँगना—भोजन की स्वीकृति लेना।
आँट (स्त्री)—पोला, पोप।
आड़ा—तिरछा।
आड़ी—तिरछी।
आतप—गर्मी प्रकाश।
आदी—अभ्रक।
आदीचक—एक तरकारी।
आधा दाली—दो पत्त।
आद्रा—आर्द्रा नामक नक्षत्र।
आन—जिस ढंग से नीचे अनाज निकाला जाता है।
आब—चमक।
आभा—प्रभा पानी उलीचने का औज़ार।
आभास—आलोक।
आभ्युदयिक—नान्दीमुख श्राद्ध।
आभ्यन्तर—ध्वनि उच्चारण करने का एक प्रकार का प्रयत्न।
आम—आम ढंग की मिठाई।
आममाला—एक माला जिसके बीच जुगनू और उसके दोनों ओर जौ आदि की आकृति के दाने लटकते हैं।
आमिल—आम की खटाई।
आर—नदी का ओर का किनारा (पहला किनारा)।
आर—आरन।
आरती उतारना—आरती करना।
आरन—लोहे की नली के ऊपर एक मिट्टी की पिहाई।
आर पार—एक किनारे से दूसरे किनारे तक।
आसी—मछली पकड़ने के काम आने वाली टोकरी।
आरा—बड़ा लकड़ी चीरने का एक औज़ार।
आरा—अरा, अरा की पहली जोड़ी।
आराकशी—लकड़ी चीरना।
आराकश—लकड़ा चीरने का औज़ार।
आरी—किनारा छोटी लकड़ी चीरने का एक औज़ार।
आर्द्रा—आर्द्रा नामक एक नक्षत्र।
आल—आलू का एक पौधा।
आला बिनौला—गुवरौटी में मिलाया बिनौला।
आलू—एक फसल।
आलू पनीर की टिकिया—एक मिठाई।
आलोक—प्रकाश।
आवट—बिना साफ किया चावल।
आवन—नाह में लगे लोहे की धुरी का सिरा।
आवर्त—पानी का धार के विपरीत मोड़ लेना या घूमना।
आवर्तमान—अधिक स्थान व्याप्त करने वाला प्रकाश।
आवाज़—ध्वनि।
आसमानी—आसमान के रंगवाला हल्का नीला।
आश्लेषा—एक नक्षत्र का नाम।
आसिनी—मदई।
आहुल—बाजा।
आँख—आँख आँख (एक वस्तु) गाँठ से फूटने वाला पहला कल्ला।
आँठी—आम की गुठली।
आँतर—अन्तराल रेखाओं के बीच छूटी हुई ज़मीन।
आँतरमारना—छूटी हुई जगह में हल चलाना।

इंगुरी—कुटे हुई जौ की रोटी।

इक्चुटिया—स्त्रियों का एक चोटी का शृंगार या बंधाव।

इकरी—कारई।

इक्वाई—एक प्रकार की निहाई, एक प्रकार की नाली।

इकसी—इक्कीस वाझे को एक इकसी।

इतरी—चचल स्वभाव वाली (गाय)।

इत्रदानी—इत्र रखने का चांदी का पात्र।

इनरी—फेनसा से बनने वाला पदार्थ विशेष।

इन्द्र—देवताओं का स्वामी।

इन्द्रधनुस—सतरंगी।

इमरती—उर्द की पिट्ठी में शोरम दल्ले दार व्यञ्जन।

इमरितिया—कान में पहनने का आभूषण जो इमरिती के आकार का होता है।

इमली—एक प्रकार का फल, जो कुछ खट्टा और मीठा होता है।

इमली का झोर—एक प्रकार का व्यञ्जन।

इमली की पिंडिया—इमली को कूट कर बीज निकालकर बनाया गया एक पिण्डविशेष।

इमिरती—रसचरना एक मिठाई।

इलायचीदाना—चीनी या शक्कर से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।

इलायचीपाग—गुडपाग की भाँति इला यची से बनी मिठाई।

ईकर सरकंडा—सरई।

ईंदना—गूँधने पर लोच आये हुए आटे को ताड़ने की प्रक्रिया।

इगुर—कूटा हुआ जौ।

इगुरी—इगुर नामक पदार्थ विशेष के रंगवाला।

ईस—हरिस।

ईसान—ईशान (उत्तर-पूर्व) कोण से चलने वाली (हवा)।

उकठ—वह खेत जिसमें पानी बिल्कुल न हो।

उकठ जाना—सूख जाना।

उकठा—पाला के कारण होने वाला रोग (जो गेहूँ की फसल में)।

उकठा जाना—दाना नहीं पड़ना।

उकड़ा उकसा—उखरा।

उखड़ जाना—खेत की नमी समाप्त हो जाना, उपजाऊपन कम हो जाना।

उखड़ा—एक फैलने वाली लतर।

उखड़ी आवाज—कमजोरी की आवाज।

उखबधना—ईख बांधने वाला मजदूर (रस्सी के सामने काम देने वाला)।

उखरा—सूखे के कारण होने वाला एक रोग (जो गेहूँ में)।

उखरी—हल का मुँह।

उखाड़ो—पैर उलटने की क्रिया।

उखारी, उखाव—गन्ने का खेत।

उगरना—मिठाई रखने का पात्र।

उगराना—फटकने-जैसी क्रिया।

उघार—बादल जब छँट जायँ।

उजला—धाला रोता।

उजाला—प्रकाश।

उजास—उजाला, प्रकाश रेखा।

उजेला—प्रभात।

उज्ज्वल—श्वेत, साफ।

उट्टा—पगुनी य नीच की एक मोटी गेंदा।

उठ आना (खेत का)—पानी सूखने के बाद खेत उठ आता है।

उठ जाना—पैदा जाना तैयार हो जाना।

उठना—बादल का ऊपर उठना, मचना गर्भधारण करने की इच्छा करना हुआ चलना।

उठबह पीस उठा बहू पीस—तलिया मना या आवाज या संकेत जो औरत समझती है।

उठ सकना—ऊपर उठ सकना गर्भ धारण की इच्छा कर सकना तैयार हो सकना।

उठाना—जाड़े से ऊपर उठा देना।

उड़चन—खाट के पताने की मोटी रस्सियाँरी बंधेज।

उड़द—दाल वाला एक फसल अन्न विशेष जिससे दाल या बड़ा बनाया जाता है।

उड़ना—छींटा।

उढ़रा—वाली सगाई ब्याह।

उतर जाना—खराब हो जाना कम होना।

उतरना—बाढ़ का कम होना, घटना।

उतरंगा—चौखट की ऊपरी लकड़ी।

उत्तरपश्चिम—वायव्य कोण (वाली बयार)।

उत्तरा—उत्तर से बहने वाली हवा, एक नक्षत्र।

उत्तरायण—सूर्य का उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित होना।

उतरा स्वर—गिरा" का स्वर।

उतरैया—उत्तरी (हवा)

उथला—छिछला।

उदत—मदत।

उदान—प्राण का एक भेद।

उदिया (उदया)—वह तिथि जो सूर्योदय के समय रहती है।

उनइमा—नीचे झुके हुए बरसाने वाले बादल।

उन्नाबी—एक किस्म का रंग।

उन्हारी—गर्मी बरसात वाली जुताई मदई या कुआरी।

उनींदी रोशनी—फीकी रोशनी।

उन कर—लटककर या नीचे लटककर।

उपरपाटी—बैठी।

उपसर्या—ओसारि गाय।

उपला—गोबर का बनाया गया ईंधन विशेष, गोईंठी, कांडी।

उपला पाथना—कांडी बनाना।

उपार—अत्यधिक वर्षा होने पर की गयी जुताई।

उपट जाना—टूटना।

उपटन—मिठाई मोड़ने का एक औजार।

उपटना—नदी के वास्तविक विस्तार से पानी बढ़ना।

उफान—बाढ़ की लहर।

उबटन—ऊकड़ोर।

उबलना—क्रुद्ध होकर उल्टी सीधी बातें करना, खौलना भुनकना।

उबसन—पत्ता या रस्सी का माँजना।

उबहन—पानी भरने के लिए रस्सी।

उबालना—खुनकाना।

उभारा जाना—चिन्हित किया जाना उद्घाटित किया जाना, प्रकाश में लाया जाना।

उमस—गर्मी।

उमसी—चने का रोग जिसमें फली नहीं लगती।

उम्मी—जौ-गेहूँ की बाली, हाबुस।

उरकुसी—गोरूवे को खाने वाली एक प्रकार की घास।

उलटा धरवा—पश्चिम से आनेवाला बादल।

उलरवा—सिपवाई।

उलवा—हल्के भूनकर दली हुई दाल।

उलार—गाड़ी का आगे की ओर हल्की होना।

उसावल—हल्की भूनकर दली हुई दाल।

उलीचनयन्त्र—पम्पिंग सेट।

उल्टामौरिया—भौरा।

उलाक—बड़ी नाव जिसमें एक लम्बा नुकीला सिरा पानी के ऊपर निकला रहता है।

उसरार—पटपर।

उसिना—उबाले धान का चावल।

उसिलजाना—ढीला हो जाना।

उसा—ओसरि गाय।

ऊख—ईख।

ऊझना—खुलना।

ऊपर का खण्ड—कोठा।

ऊभ चूभ हो जाना—खूब वर्षा होना।

ऊलस—जूठा (भोजन)

ऊसर—जहाँ कोई फसल न उगायी जा सके।

ऊसर खेत—रेहयुक्त खेत जहाँ पानी नहीं सोखा जाता, कोई फसल नहीं उगती।

ऊष्म—एक प्रकार की ध्वनि।

एकठा—एक हल्की नाव एक बार ही ब्यानवाली गाय।

एकबच्या—एकठा गाय।

एकबरघा—एक हल्की गाड़ी जिसे एक बैल खींचता है।

एकपरा (कुँआ)—जिस कुएँ पर एक ही पुर चले।

एकहत्थी (भाथी)—एक हाथ से चलायी जानेवाली भाथी।

एकहरा—जो बैलों द्वारा सँभलने वाला पाटा।

एकादशी—पक्ष की ग्यारहवीं तिथि।

एकौंद—एकठा गाय।

एड़ा—सिपवाई, अड़ानी (हूरा)।

ऐन—घन निहाई।

ऐना—लकड़ी का एक अड्डा।

ऐनना—परेतना।

ऐपन—हल्दी।

ऐपन का कोहवर—गोबर भीत पर लीप कर, सुखा कर उस पर हल्दी मिले चौरठ से की गयी रचना।

ऐंठा—(जो गेहू की) पत्तियों के सिकुड़न का एक रोग।

ओरा—टाप या गाज।

ओयर—एक बेलन जिस पर कम्बल लपेटा जाता है।

ओखर-पोखर—परे कुएँ पर रखा जाने वाला लकड़ी का ठाठ।

ओट—आड़।

ओटना—टेंट में से रूई निकालने की प्रक्रिया।

ओटनी—कपास ओटने की मजदूरी।

ओढ़नी—झूल।

ओडहसा—बलगाड़िया के सफर में नाद के काम में लायी जाने वाली बाँस की बडी डलिया।

ओडा—बोने के काम की टोकरी ढाका।

ओडिया—खाने के काम की टोकरी।

ओडसा—पशुओ को खिलाने के लिए एक पात्र।

ओद—नमी, गीला।

ओदला—तुरत लायी गाद।

ओवार—कचरा।

ओभी—बडी खुदाई करने वाला यन्त्र विशेष।

ओरहा—होरहा।

ओरा लडुवा—खाड के लड्डू।

ओरी—किनारा।

ओरी चुआन—इतनी वर्षा कि छत से ओरी चून लगे।

ओल—सूरन।

ओलना—गुबरौठी में बिनौले के मिलाये जाने की प्रक्रिया।

ओला—बनौरी।

ओसचदाव—बहुत ही मामूली वर्षा।

ओसरी—हरी होने के योग्य गाय।

ओसारा, ओसारी—बरामदा ढलाऊँ छाजन।

ओसौनी—हवा के बहने पर अनाज अलग करना भूसा एव धूल आदि आदि अलग करना।

ओहार—पर्दा।

ओहारी—ताना थाम्हने के लिए बनायी गयी ऊपर की बडी जो बुनकर के सामने वाले सिर पर होती है।

औंगना—गवा के भीतर के हिस्सा।

औडा कुड—चक्रकुण्ड (भँवर की जगह होती है)।

औक्ल धौक्ल हार—एक प्रकार का हार।

औगार—उरस।

औटनो—गरम करना।

औडर (पानी)—जहाँ पैरना सम्भव न हो।

औंहा कर—उलटकर।

औरग—मक्का-ज्वार बाजरा का रोग जिससे डंठल पर सफेद दाग पड जाते हैं।

औरा—मोथा।

औल्हा—पाजा।

औहरना—गर्भ धारण करना।

औंचक—मृगमरीचिका।

औंडला—अन्तिम क्षाँवर मारना।

ककडौर—उबटन।

ककना—फसल को जकडकर बाँधने वाली घास।

ककरा—वह जमीन जिसमें उपजाऊपन न हो।

ककरैठा—ककडी मिला हुआ।

ककही—रीन कघी।

कगार—ऊंचा किनारा।

कंकण—(वर के हाथ में) सूत का बना हुआ वस्तु विशेष जिसमें राई नोन और हल्दी बंधी होती है।

कगन—आभूषण।

कंघी करना—केश सवारना।

कचरस—गन्ने का ताजा रस।

कचरा—खरीफ की फसलें बाँधने के लिए हरे पाट का बंधन बनाते हैं, भदरा।

कचराना—डोंग्याना।

कचरिया—चावल के आटे की बनी।

कचरुआ—बाँगा।

कचवनिया—कसार।

कचारना—पछारना।

कचिया—दाँता।

कचोहा—तम्बाकू का एक रोग, जिसके कारण फसल अधपकी ही तैयार हो जाती है।

कच्छर—छेनी।

कच्चा—दुधिया (खोया)।

कच्चू—बड़ा।

कच्छा—बेमांग की चौकोर नाव।

कछवाया—दोपल्ला चपटा और बिना रीदार।

कछार—नदी की बाढ़ के दायरे वाली जमीन।

कजरधर—एक मोटा धान।

कजरारा—काजल के रङ्ग वाला।

कजरारी—काजल के रङ्गवाली (आँख)

कजरी—बहुला।

कजला—गहरे काजल से आँखों-जैसी आँखों वाला बैल।

कजली—काली आँखोंवाली (गाय)।

कजाहल—अपाहिज (बैल)।

कटक—छेनी।

कटना—टुकड़े टुकड़े अलग हो जाना।

कटनी—कटिया (फसल काटना)।

कटरा—जवान पाड़ा।

कटसिंगी—कटे सींग वाली (भैंस)।

कटाई—कुम्हार द्वारा की जानेवाली मिट्टी की कटाई।

कटान—कमरी की पगुड़ियों के सिरों पर का खाँचा।

कटिया—कटनी।

कटुई—पालक की एक जाति, एक किस्म का गुबरैला जो धान में लगता है, बलस्ट।

कटुई दही—छिनुई दही बिना मलाई की

कट्टा, कटठा—कपटा।

कट्टी—बेकार (भैंस)।

कटैलिया—कट्टी भैंस।

कठरेंगनी—अनजुते खेतों में फलनेवाली एक प्रकार की जंगली पोस्ता।

कठार—ज्यादा खुराक पर कम दूध देनेवाली (गाय)।

कठुली—कुआँ खोदने के लिए एक औजार।

कठौवा—आमा एक हथियार।

कठमांघी—दुहत्थी।

कडजी—सफेद पुतली वाली (गाय)।

कडकड—खौलते द्रव की आवाज।

कडला—तेज।

कडावा—आड़ी पटरियों को थाम्हने वाली धूही।

कडवी—तिक्त स्वाद वाली।

कडहडी—फरी।

कड़ा—आभूषण, करारा।

कड़ी—नाँव बाँधने के लिए लोहे की छल्ली सख्त, ठोस।

कठा—गले का एक आभूषण।

कठी—फावड़े का पिछला ऊपरी हिस्सा।

कडा—गोबर का बना ईंधन विशेष।

कतना—खँचोली ।

कतरना—कुतरना ।

कतरा—पटला एक औजार जिसमें आरा की धार तेज की जाती है ।

कतरा की जड—खस ।

कतरी—धान के पौध म लगनेवाला एक रोग इसके कारण पौधा पनप नही पाता कतरी ।

कतरोही—कतरा ।

कतिका—कातिक वाला या कातिक मास में नयी फसल की तयारी के लिए उपजी उडद ।

कत्ता—दाहा हसुली ।

कत्तिन—चरखा कातन वाली स्त्री ।

कत्ती—चरखा कातन वाले पुरुष ।

कत्थई—कत्था (खर) के रग का ।

कदीमा—कुम्हडा ।

कदन—सस्ता और रूखा अनाज ।

कन—धान का पता जो कुआर में निकलता है ।

कन—टूटा चावल ।

कनइली—रग (कनर का सा) ।

कनई—कीच ।

कनई—पटनी ।

कनई करना—खत जोतकर उसमें पानी भरना गन्दा करना ।

कनरचूर—एक म ान धान ।

कनरजोर—एक महीन धान ।

कनकपुरिया—एक आलू ।

कनखसोंहा—कोइल (पक्ष) ।

कनखिल्ली—काल ।

कनगिन्नी—चिटनी गुटा ।

कनसी—गनरा मन अंकुर ।

कनगोजर—नयी किलसी ।

कनचिपकी—कान के पीछे चिपके सींग वाली (गाय) ।

कनछी—छोटी शाखा ।

कन्द—बडा ।

कन्ना—धान के खत में उगनेवाली एक घास ।

कन्नी—असुआ ।

कनपट्टी—आँखो और कान के बीच सफेद धारी वाली (भस) ।

कनफूल—एक आभूषण (कान में पहनने का) ।

कनवाँ—धान के खत में उगनवाली एक घास साथ ढोली पान ।

कनसन—कोसो ।

कनाठा—छोरा ।

कनाना—छीना लगना ।

कनासी—कतरा ।

कनाहना—रताना ।

कनिक—चोकर ।

कनियाना—अगुआना ।

कनीली—सुनहली (गाय) ।

कनेरी—कनर के फूल सा (रग)

कनवा—रणजय ।

कनाल—समतल मगर पहला गुटी ।

कनठी—सूगी ।

कनोजर—पहनी ।

कनौसी—मोटा ।

कनूसी—दन्तगता, अर्रा ।

कन्टी—छारा एक कारा ।

कपना—नप यन, बावरा ज्वार

कवलगट्टा—कमल का फल।
कवल-दह—कमल हृद।
कँवल-पाती—कमल की पंक्ति।
कसुआ—एक रोग जिसके कारण पौधा पतला और छोटा पड़ जाता है।
काकली—किलकारी।
काकपक्षी—कौवापक्षी।
काकु—सुर के चढ़ाव उतराव का ढंग।
काछ—गाछा।
काटना—अवरोध हटाना, जाड़ा मारना।
काट भरना—मोड़ पर जलधारा के वेग से नये कटाव करता है एवं जल एकत्रित होने लगता है।
काटा—घास पात खखोरने का औजार।
काड़ा—एक आभूषण।
काडी—उपला।
काढ—बरही।
काढ़ना—बाल सवारना।
कादम्बिनी—घटा।
कान—पूरे कान को ढँकनेवाला आभूषण कान।
काना—धान के खेत में उगने वाली एक घास।
कानी—खराब।
कान्ति—ज्योति शरीर की शोभा।
कारुराय—शिल्प।
काला जाम—छेने की मिठाई।
काला नमक—एक महान धान।
काला भँवर—बादलों की घटाओं के साये में पड़ा जल।
काल्या—कलार गाय।
काशीफल—कुम्हड़ा।
काष्ठपीठिका—काठ का पीढ़ा।
काही—एक रंग।
काहू—एक तरह का लेटूस साग।
कांक नुकाना—ओटना।
काकर—कछौटा।
काकरेजी—एक प्रकार का बल।
काकर—एक प्रकार का पान (बड़ी पत्ती वाला)।
कांजी—नमकीन घोल के रूप में प्रस्तुत खट्टा पेय।
काटियो—फरकिल्लो।
कांटी—ढेंढा (हरिस की)।
कांटा—कान का आभूषण।
कांठर—आंती।
कांद—टिटिहरी की बोली।
कांपती आवाज—वह आवाज जो बुढ़ापे की होती है।
कांपना—हिलना।
कांव कांव—कौवे की बोली।
कास—वनसन, कास।
किकोरना—खुरचना।
किचकिच—झगड़े का शोर।
किड़ा जाना—कीड़ा पड़ा हो जाना, सड़ना।
किनक—मंद बूंदें।
किनवारिया—केन नदी के आस-पास के बल।
किनारा—तट।
किनारीदार—किनारा वाला।
कियारी—क्यारी।
किरच—नीम या बबूल की चिरी लकड़ी।
किरा—गोयड़ा अरहर की ठांट।
किरौना—एक किस्म की मक्खी।
किर्रकिर—छोटे पहिया की आवाज।

किलकारी—नवजात बच्चे की आवाज।
किलौटा—एक कीड़ा।
किल्ला—वरन (बाँस का)।
किल्ली—धुरकिल्ली साँकल जैसा एक साधन।
किल्हा—कुल्हा।
किसलय—कोपल।
किसमिसी—किसमिस का सा रंग।
कीच करना—कनई करना, कीचड़ युक्त करना।
कीरी—किरौना।
कील—नल के पीछे की टाट पल्ला, चौपा खूंटा।
कुआरी—कुआर में होने वाली फसल कुआर में नयी फसल की तैयारी के लिए, कुआर की कुआरी अनाज।
कुकड़ी—कुकरी।
कुकरी—लिपटे सूतों के पिंड।
कुचकटी—बहुत छोटी पूंछ वाली (भैंस)।
कुकुड़ी—गुलाबी रंग की एक बिहार जो कपास को खराब कर देती है।
कुकुही—जाड़े में फसल में लगने वाला कीड़ा
कुचिला—एक प्रकार का विष।
कुटकटना—ठीहा।
कुटका—डाँठ।
कुटिल—टेढ़ा।
कुट्टी—लड़ाई।
कुट्टी—कटा चारा।
कुठला—बखारी।
कुड़ड़ी—बाँस के लग्गों की फसान।
कुणित—कु नी भैंस।
कुंड—प्राकृतिक जलाशय जो अधिक गहरा होता है कुछ कम गहरा भी होता है, जहाँ पानी पर्वत से बहकर जमा होता है।
कुंडल—आभूषण।
कुंडली—जन्म पत्रिका।
कुंड—हल।
कुतरना—छाटना, काटना।
कुदरा—फावड़ा।
कुदरिया—कुदाली।
कुदार—फावड़ा।
कुदारी—गूदरी।
कुदाली—पतला धार वाली, फावड़ा।
कुती—लाई।
कुंदन—सोना।
कुंदरू—एक फलवाली तरकारी।
कुंदा करना—खोया भूनने की क्रिया।
कुंदा—भुना हुआ खोया कुन्द।
कुन्ना—बोइया।
कुन्नी—मुड़ी और गोल सींग वाली भैंस।
कुनबी—साग सब्जी उगाने वाली जाति।
कुनरी—ज्वार फंगी।
कुना—प्याज लहसुन व रोपे जाने वाले पौध।
कुनिया—बाइया।
कुबड़ा—गुम्मटदार पीठवाला बैल।
कुबड़ी—जिस गाय की रीढ़ की हड्डी ऊपर निकली दिखाई दे।
कुमड़ी—बटुरी मटर।

कुम्हड़ा—कदीमा।
कुम्हड़ौरी—अदौरी।
कुम्हेड़ी—नथुने से पानी गिरना।
कुरदा—गरी।
कुरल—एक आदमी की सँभाल में आने वाला छह डंडियों वाला जाल (मछली पकड़ने के लिए)।
कुर्सी बनाना—भवन का एक अंग बनाना
कुलँगड़ा—पञनों के पीछे की ओर वाली रस्सी।
कुलथी—एक अनाज।
कुलफा—गुल्फा, एक साग।
कुलावे जुलफी—सटनी।
कुल्या—कूरा।
कुल्हा—बिनौले का पहला अंकुर, अँखुवा, कनी, दो से अधिक पत्ते पौधे में लग जायें।
कुल्हाड़ी—टांगी।
कुसबद्दाव चौक—यह चौक विवाह में पूरा जाता है।
कुसनटना—कुथियाना।
कुसाइत—यात्रा ठीक न हो अच्छा मुहूर्त न निकला हो।
कुसियाना—रावे हुए धान का कुस की तरह बढ़ना।
कुसिहार—दोनों ओर बड़ा दस्ल की इन।
कुसो—फार।
कुसुम (कुसुभी)—जरसो, कुसुम।
कुहकाच्छन्न—चाँदनी कुहासे से ढँकी चाँदनी।
कुहनी—शरीर का एक अवयव।
कुहासा—कुहरा।
कुहेल—कजो आख वाली भस।
कुड़नी—मिट्टी का एक बरतन।
कूक—कोयल की बोली।
कूकरी—दानों का पकना, कुकरी।
कूटा जाना—बधिया किया जाना।
कूप—कुआँ।
कूला—पानी का कृत्रिम साधन, कुल्या।
कूचना—कूँच कर खाना, चबा चबा कर खाना।
कूचो—कूची, झाड़ू।
कूचा—झाड़ू।
कूड़भराऊ—पानी से गड्ढे भर जाना।
कूड़मिलौनी—खेतों को बहुत घनी हटाना।
कूड़ा—मिट्टी का बर्त्तन।
केओचा—बड़ा परता।
केका—मोर की बोली।
केतरा, केतार, केराना—पतली और लम्बी तरह की ईख रोपना।
केराव—मटर।
केवट—मल्लाह।
केवटी—कई किस्म की दालों को एक साथ मिलाकर पकाते हैं।
केवलहा—छोटे दाने वाले गेहूँ।
केवाही, केवाँली—एक प्रकार की ईख।
केसरबाटी—बेसन की एक मिठाई।
केसरिया—पकाया हुआ केसरयुक्त चावल, वर्षा, केसर के रंग का।
केसोड़ा—नछू।
केवाच—खारफगे।
कैन—बाँस की एक छरन, बेंत की कैन।

करा—सर्वाङ्ग श्वेत (बल)।
करीहार—अमिया के आकार के लटकना वाला हार।
कलाना—हुबसाना।
कलिया—कोढ़िया, एक कोढा।
कोइडार—साग सब्जी की कास्त।
कोइया—खार में रख अनाज को खान वाला एक काला कीडा।
कोइरी—साग सब्जी की कास्त करने वाला।
कोइल—काले कानों वाला बैल, मरायल।
कोइलखो—गोरपुल।
कोइली—एक रोग जिसके धान में लगने पर पीले धब्बे पडते हैं।
कोइलासी—एक ओर काला (आम)।
कोकटी—कपास की एक जाति लसोहे रग की रुई वाली फीका गरुआ (रग)।
कोखी—पचखी।
कोठा—घर के ऊपर का खण्ड।
कोठारघर—भण्डार घर।
कोडा—चाबुक।
कोडिया—गुडाई।
कोढ़िया—कोढ़ली।
कोढ़िया मेह—बादल बरसते रहने पर धूप निकलना।
कोय—मकई बाजरे की बाल निकलने का स्थान।
कोय फूलना—दाना पडना।
कोरों—एक मर्द प्रसूत।
कोनसिला—कोनिया।
कोनिया—दो पासों का जोड।
कोपल—किसलय।
कोमल—मधुर, सुकुमार।
कोरई—वह ढांचा जिस पर लतर चढ़ाई जाती है।
कोरना—नग के नोको की घिसाई।
कोरवास—दो सांचो के बीच का अंतर।
कोरमार—टाल।
कोरसुत—खतकस।
कोराई—चावल का भीतरी छिलका।
कोरी—बीस पत्ते, ठाट में कोरी होती है तँवबा।
कोरो—कोरई, कडी।
कोरी की ठाट—यह दासे के ऊपर रखी जाती है।
कोरौनी मठा—छाछ।
कोलटारा—अँकुरा।
कोलतारा—अँकुरा।
कोला—बेड़ा।
कोसा—मिट्टी का पात्र चौड फले मुँह वाला दिया जैसा पात्र स्थान।
कोसा खोलाई—कोसा खोलने की विधि।
कोसी—एक लम्बा घर जो बखार में पडता है और प्राय नदी या बाजार के किनार लगता है।
कोहनाना—कोर करने का स्वांग रचना।
कोहबर—कौतुकगृह।
कादा—धूरी।
कौआलपान—गेहूँ जौ के पौधों की छः इंच तक की बाढ़।
कौआबँधाव—तिनतरिया बखार।

कौआलुकान—कोआखपाल, बहुत कम ऊंचा।

कौआसांतिया—एक प्रकार का स्वस्तिक।

कौड़ियाकूबड़—कुबड़ा।

कौतुकगृह—कोहबर।

कौर—एक बार मुंह में डाला जाने वाला भोजन।

कौरापो—मोर।

कौरी—चावल के आटे की पनी।

कौरा—चौखट के दायें-बायें बाजू।

कौंदा (कांड़ा)—अंकोरा।

कौंध—चमक।

क्षय तिथि—जो तिथि एक सूर्योदय के बाद शुरू होकर दूसरे सूर्योदय के पहले ही समाप्त हो जाती है।

कयाचो—दाहा।

क्वार—खारद की पाली।

खइनहार—मुहजार (गाय)।

खखड़ी—फसलों का एक रोग जिसमें फसलों में दाने नहीं पड़ते।

खखोरनी—पपड़ी खोदने का कांटेदार यंत्र।

खजुला—खाजा, एक मिठाई।

खजूर—खजूर के आकार का गुड़दार चिह्न, एक मिठाई।

खजूरा बंधाव—दस चोटी वाला एक विशेष बंधाव।

खटकनी—खूंटे से रहनेवाली भैंस।

खटखटा—दम्य बछड़े के गले में डाला गया डण्डा।

खटाई—१ नोनचा २ (आमको) आमिल।

खटिक—साग सब्जी बेचकर जीविका चलानेवाली एक जाति।

खड़आ—१ पैर का आभूषण २ दुहरी धारा।

खडींगा—खड़ी नुकीली सींग वाला (बैल)।

खड्डी—पालने की एक किस्म।

खतकस—खपरी लगाने का एक औजार (सूत)।

खतला—दे० निरारा।

खत्तो—बखारी।

खदकना—उबलना।

खदकाना—पकाना उबालना।

खद्दड़—खूब खाकर भी काम न करने वाला।

खन्ती—जमीन खोदने का एक औजार।

खना—गोल।

खनखारी—बिखारी।

खनूकी—निश्चित समय से अथवा निश्चित मात्रा में दूध न देने वाली (भैंस)।

खपड़ोइया—गड़रा।

खपड़ा—घर।

खपियार—फेंकल (जाल)।

खबौनी—गेहूं की मोटी रोटी।

खमखम—टाप की आवाज।

खम्भा—पाया, स्तम्भ।

खम्भार—ढेरी।

खरफा—पौधों के खेत में उगने वाली एक जाति।

खरफूटी—खरकोट (लकड़ी के खूंटे में जड़ी लकड़ी)।

खरखराहट—खराब गले की आवाज।

खरखुरा—गदहे की खुर जैसी खुरवाला (बैल)।

खरगदार—(दे०) खनूकी ।
खरथुआ—बथुआ (एक साग) ।
खरपात—घास ।
खरमिटाव—प्रात जलपान ।
खरसान—चाला ।
खरही—सरई ।
खरदो (खूटी)—एक प्रकार की खूंटी ।
खरादना—लकड़ी को विशेप से चिकना करना ।
खरादी—खरादन का यत्र ।
खरुका—१ जाला २ खरथुआ ।
खरल—कुरल ।
खरोरी—खरपात उगन का स्थान ।
खलिहान—पको फसल एकत्र करन का स्थान ।
खली—तल निकलन के बाद तेलहन का सूखा भाग जो पशुओं के खिलान के काम आता ह ।
खसखस—भोजन वाले कूंचो के रोग ।
खसरया—ठेंवनो ।
खसी—गिरी ।
खाइक—दोपहर का भोजन ।
खाजा—खजुग ।
खाजी—चोका खिचड़र ।
खाड़ी—खाड़ा ।
खाता—पनारा प्रणाली ।
खावर—नीची जमीन ।
खाप—दोपहर का भोजन ।
खाल—नोचा ।
खिखोरनी—गुड़ की गाँठ बराबर करन क लिए लकड़ी की एक कूची ।
खिचड़ी—१ मकर सक्रान्ति पर्व २ दाल के साथ मिलाकर पकाया चावल ।
खिचड़ी खिलाई—१ कुंवर कलेऊ २ बसिया खिलाई ।
खिड़की—मकान में पीछे का या बगल का दरवाजा ।
खिघोरनी—खिरखोरनी ।
खिनौरी—पुराना हल ।
खिरचो—गलता ।
खिरावर—जिस खेत में खाद अधिक मिली हो ।
खिरौदा—१ चावल के आटे की रोटी २ चावल के आटे की मिठाई ।
खिलखिलाहट—तेज हसी की आवाज ।
खिलती—गलता ।
खिलना—जगमगाना ।
खिलोरनी—खिखोरनी ।
खिसलना—बड बड ओलो का तड़ा तड़ गिरना ।
खिकरी—छोटी-पतली पूड़ी ।
खीरकदम—छेने की मिठाई ।
खीरमोहन—१ मूग की दाल से बना व्यजन २ एक मिठाई ।
खील—१ भुना धान ।
खील-लावा—लावा ।
खीलिया—तरइया ।
खीमी—खोदा ।
खीस—खनसा ।
खुटहरा—पुराना हल ।
खुदनी—घुमा मान का छोटा औजार ।
खुरखुर—रात गत अनाज की आवाज ।
खरर—गून्य ।

खुशिगर—गुटहन (चावल)।
खुक्खा—पइया।
खुज्जा—रेंगा।
खुट्टी—आधार जिन दो खूँटियों पर टिकी रहती है वे खूँटियाँ।
खुद्दा—फार।
खुर—बैल के पैर का अंग।
खुरघिसिया—खुर घिसते चलने वाला (बैल)।
खुरसुन—पगड़ी।
खुरचन—भूनी मलाई से बनी मिठाई।
खुरचना—किकोरना।
खुरचनी—१ खुरचने का औजार २ खँसाढ़ी।
खुरदायाँ—अच्छी तरह रूँदा हुआ बाँठ।
खुरपी, खुरपा—घास काटने का छोटा औजार।
खुरफटा—फटे खुर वाला बैल।
खुरमा—आटे का एक व्यंजन।
खुरा, खुरी—चूक।
खुदट—पहले दोंगरे के बाद की जुताई।
खुलना—उधार होना।
खुश्क
खुश्का } —सूखा
खुश्की—सूखापन
खुसी—खुदनी।
खुरा—कछआर।
खूह जाना—१ साँड न मिलने पर गाय का उठिटना २ पलट जाना।
खेखसा—चठइल एक तरकारी।
खेडा—काँटी।
खेढ़ा—गूल।

खेत भागना—खेत की सरसता समाप्त होना।
खेप—फेरैल।
खेवाई—घाट उतराई।
खेसारी—लतरी।
खेना
खेवा } (दोपहर का) भोजन
खैरा—१ धान की बाली का रोग २ कत्यई रंग का।
खैरी—लोही (भष)।
खैरागढ़ी—बैल की एक किस्म।
खोइया—१ बोकला २ गुठलीदार कच्चे आम की खटाई ३ गन्ने का रस निकल जाने पर बचा हिस्सा।
खोटना—१ लोहे को पीट कर पतला बनाना २ साग आदि खेत से तोड़ना।
खोढ़ा—गूल।
खोद—चाकर।
खोनचा—मिठाई आदि बेंचने का बेंत का बना पात्रविशेष।
खोपटा—चोए की ऊपरी परत।
खोंहा—अनाज आदि रखने का मिट्टी का पात्र।
खोभना—पानी पता लगाने का साधन।
खोभिया—खाई।
खोया—दूध जला कर बनाया गया पदार्थ।
खोर—चरन।
खोल—छेद।
खोलनइया—एक छोटी नाव।
खोह—नदी द्वारा बरबाद की गयी गड्ढेदार जमीन।

गिट्टई पड़ना—बिजली गिरना।
गुच्छा—गाछ।
गुच्छी—एक आभूषण।
गुज्झी—एक तरकारी।
गुझिया—गोया एक मिठाई।
गुजार—भौंरा की आवाज।
गुड़गुड़ाना—पेट की आवाज।
गुड़गुड़ाहट—बादल की धीमी आवाज।
गुड़धनिया—गुड़ और धनिया बाँटने की प्रक्रिया।
गुड़—मक्के लगने वाला रोग जिसके कारण बाली मलकी टेढ़ी पड़ जाती है।
गुड़ाई—थमिया कोड़िया।
गुड़िया—मलकाठी।
गुढ़ी—मोजर।
गुदना—चिन्नी।
गुदारा—चिनौरा।
गुनरखा—गुरखा (नाव का मस्तूल)।
गुनवाह—गोन (नाव की रस्सी) खींचने वाला।
गुनिया—एक औजार (सीध आदि देखन के लिए)।
गुनौली—दूध घी दाना में समृद्ध (गाय)।
गुपपाक—गादपाग, एक मिठाई।
गुबरौटी—गोबर मिट्टी का घोल।
गुँबारे उभारना—एक प्रकार का कच शृंगार करना।
गुम हो जाना—बहना बन्द हो जाना।
गुम्मर—गाँठ हो जाना।
गुरखा—नाव का मस्तूल।
गुरगाँठ—बहुत कड़ी और दुहरी गाँठ।
गुरदम—मिठाई मोड़ने का एक औजार।
गुरम्हाना—गुठली भरना।
गुरहो—कचरा।
गुरुखाय—एक औजार।
गुल्ली—ऐंठा गड़री, खूँटी।
गुलगुला—पुआ सदृश व्यंजन।
गुलठियाना—चितियाना।
गुलती—गुलेल।
गुलदाना—चीनी या शक्कर से ही बनी मिठाई, उद की पिट्ठी से बनी एक पोली जैसी मिठाई।
गुलफा—कुलफा, एक साग।
गुलफी—मूठ।
गुल होना—बुझना।
गुलाबगजूर—गिजा सदृश एक मिठाई।
गुलाब जामुन—सूखी मलाई से बनी एक मिठाई।
गुलाबी जाड़ा—फागुन का हल्का जाड़ा।
गुलामगर्दी—घर के आगे निकला हुआ हिस्सा।
गुलिया—मना।
गुलूबन्द—गले में चिपके रहने वाला आभूषण।
गुलेल—जिस पर गोली रखकर निशाना लगाते हैं।
गुहना—पुहना।
गुढ़ा—आड़ा पटरी (नाव की)
गूदरी—पटार के साथ चिपके कुछ सूखे छोटे डठल।
गून—गोन।
गूरी—कूटा हुआ जौ।
गूल—पनारी, हरिस के ऊपरी सिरे की खूँटा, मेड़ों के बीच की छोटी-सी नाली।

गूतर—गूलर, गूला ।

गूला—कपास के फूल के बाद आनेवाला सख्त नोकदार गोल फल ।

गेडहरुआ—यह गेहूँ जो के खेत में उगता है ।

गेयआ—गडार, मेंजर ।

गेरुई—बरसात के बाद पुरवाई के चलने से होनेवाला रोग जिसमें पौधा गेरुए रंग का हो जाता है और बाल काली पड़ जाती है गेरू रंग के (बादल) ।

गेरुई जल—जिस जल में पारदर्शी गेरू घुलकर मिला हो ।

गेरू—पहाड़ी धातु ।

गेटहनी—पनकरिया ।

गेहुँआ बाजरा—लाल रंग का बाजरा ।

गेहुआ—गेहूँ के रंग का ।

घर मनरुआ—वह मिट्टी जो उपजाऊ होते हुए भी खेती के उपयोग में नहीं लायी जाती ।

गोइंठा—गोहा, उपला ।

गोकुलसार—एक महीना धान ।

गोखरू—खोर का ऊपरी हिस्सा, बरनी ।

गाखुला—गोरखुल, एक घास ।

गोचर—चरागाह ।

गोछा—टहवाला (छाजन में) ।

गाजी—लाठी ।

गोझा—गुझिया ।

गोटाना—हथियाना ।

गोठ—ढोरों के रहने की जगह ।

गोठी—रुई का पुना ढेर ।

गोटौला—उपलों के रखने की जगह ।

गोडर—सरसों क
बढ़ा हुआ ।

गोडहरा—पर द

गोड़ा—खभिया

गोड़ार, गाडावन

गोद भराई—ब
रूम जो
कन्या के लि

गोधूली—सूर्यास्त
वला कहते ह

गोन—नाव खींचन

गोपाल भोग—एक

गोभना—एक य
पता लगाया

गोभी—एक रोग
होता है जिस
छोटे कच्चे फूटत
बाढ़ मारी जा

गोरखरूबा—पैंचदा

गोरखुल—घास के
पाव ।

गोरदार—कार वाल

गोरा—लालिमा और
वर्णवाले शरीरवा

गोल—तलवार का ट

गोलक—एक औजार

गोलक बुखसाय—ए

गोलभद्रा—एक प्रकार

गोला—कपास का ए
लाल रंग वाला य

गोला दसानी—एक अ

गोलावा—गुच्छा ।

गोलो—लाल रंग की (

चहोरा—जड़हन ।
चाउर धोअन—चावल धोते समय गिराया गया पानी ।
चाकी—नदी के बीच में उभरी हुई जमीन नदी के द्वारा छोड़ी गई नयी जमीन ।
चाचर—नाव की पेंदी में बिछे झाऊ के झाड़ ।
चाट—नमकीन व्यंजन ।
चातर—जमीन के समानान्तर सींग वाला (बैल) ।
चातुर्मास्य—चौमासा ।
चान्द्रमास—कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से शुरू होकर शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तक का समय ।
चार—छाजन समेत पूरी ठाट ।
चार चास—चौबारा जुताई ।
चारा लाना—घास आदि लाना ।
चाली—नाव की पेंदी के ऊपर की जड़ाई, फरा ।
चास—एक बार की जुताई ।
चिउड़ा—उबाले धान को कूटकर तैयार किया हुआ तुरंता भोजन ।
चिउरी—बाजरे आदि का कूटकर तैयार की गयी ।
चिक—गले का एक गहना ।
चिक्ना—अलसी ।
चिकहारा—चिचार ।
चिचिड़ा— } चिचिड़ा
चिचूका— }
चिचोर—यह घास ताला में होती है और धान की फसल को अधिकतर दबा देती है ।
चिटकना—हड्डी की आवाज, तेज चमकना ।
चिड़िया—चिड़िया का चिह्न या आकार जो पजा पर लाल रंग से स्त्रियाँ रंगती हैं ।
चितकबरा—कबरा (बैल) ।
चितकबरी—कबरी (गाय) ।
चितवा—मूंगफली का एक रोग ।
चिताई—चातन की प्रक्रिया ।
चितियाना—पक्के पत्तों पर चित्तियाँ पड़ जाना ।
चितवा—मेंहदी रचना ।
चिन्नी—गुदना ।
चित्ती—पत्ते में चित्तियाँ पड़ना ।
चित्रा—एक नक्षत्र ।
चिनचिनाहट—ठंडी के तुरंत बाद हल्की गर्मी की प्रतिक्रिया ।
चिनिया—मीठा इख ।
चिप्पी—पैंच, बढ़ई ।
चिर्रा—सिरा पर घिरे सींग वाला (बैल) ।
चिरई मगार—चिड़िया और डालीयुक्त बेल रचना ।
चिराई—आर से लग की कटाई ।
चिरियाना—पानी पड़ने पर बर्तन में छदयुक्त फटन वाली रेखा है ।
चिरया—समइल के प्रकार की भीतर वाले (खूँटी) ।
चिरौंजी—गरी की लौज ।
चिलचिलाहट—झलक, दोपहर की धूप ।
चिलचिली—चमक मारन वाली (धूप) ।
चिलोही—कटना का साधन दाहा ।
चिल्ला जाड़ा—अतिशय ठंडी ।

चहोरा—जड़हन ।
चाउर धोअन—चावल धोते समय गिराया गया पानी ।
चाकी—नदी के बीच में उभरी हुई जमीन, नदी के द्वारा छोड़ी गई नयी जमीन ।
चाचर—नाव की पेंदी में बिछे झाऊ के झाड़ ।
चाट—नमकीन व्यंजन ।
चातर—जमीन के समानान्तर सींग वाला (बैल) ।
चातुर्मास्य—चौमासा ।
चान्द्रमास—कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से शुरू होकर शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तक का समय ।
चार—छाजन समेत पूरी ठाट ।
चार चास—चौबारा जुताई ।
चारा लाना—घास आदि लाना ।
चाली—नाव की पेंदी के ऊपर की जड़ाई, फर्श ।
चास—एक बार की जुताई ।
चिउडा—उबाले धान को कूटकर तैयार किया हुआ तुरंता भोजन ।
चिउरी—बाजरा आदि को कूटकर तैयार की गयी ।
चिक—गले का एक गहना ।
चिक्‍ना—अलसी ।
चिकहारा—चिचार ।
चिचिडा— } चिचिंडा
चिचूका— }
चिचोर—यह घास धानों में होती है और धान की फसल को अधिकतर दबा देती है ।
चिटकना—हड्डी की आवाज, तेज चमकना ।
चिड़िया—चिड़िया का चिह्न या आकार जो पंजों पर लाल रंग से स्त्रियाँ रचती हैं ।
चितकबरा—कबरा (बैल) ।
चितकबरी—कबरी (गाय) ।
चितवा—मूँगफली का एक रोग ।
चिताई—चाटने की प्रक्रिया ।
चितियाना—पत्तों पर चित्तियाँ पड़ जाना ।
चितवा—मेंहदी रचना ।
चिनी—मुदना ।
चित्ती—पत्ते में चित्तियाँ पड़ना ।
चित्रा—एक नक्षत्र ।
चिनचिनाहट—ठंडा के तुरंत बाद हल्की गर्मी की प्रतिक्रिया ।
चिनिया—मीठा इख ।
चिप्पो—चेंदा चकई ।
चिर्रा—सिरा पर चिरे सींग वाला (बैल) ।
चिरई सगार—चिड़िया और डालीयुक्त बेल रचना ।
चिराई—आरे से लकड़ी का कटाई ।
चिरियाना—पानी पटने पर बर्तनों में छेदयुक्त फटने वाली रेखा है ।
चिरया—समहल के प्रकार की भीतर वाली (खूँटा) ।
चिरौंजी—मेवे की लौज ।
चिलचिलाहट—चलक, दोपहर की धूप ।
चिलचिली—चमक मारने वाली (धूप) ।
चिलोही—कटनी का साधन दाहा ।
चिल्ला जाड़ा—अतिशय ठंडा ।

चीकट—गंदा

चीआ—अमी का बीज इमली का बीज।

चीतना—गहना पर वस्तुओं की आकृति बनाना।

चीप—बाँस का वल्ला।

चीपा—छत की मिट्टी का बड़ा टुकड़ा।

चीस चीस—नलिया मना की आवाज। (लकड़ी आदि)।

चीरना—चिराई चारना।

चीला—नाक सब, व्यजन विशेष।

चुक्क—अतिशय खट्टा।

चुखेटा—गाय का नवजात बछड़ा।

चुखेटी—दूधपीती बछिया।

चुगना—एक एक करके खाना।

चुचुहिया—मरायल।

चुटकी—उंगलियों की आवाज।

चुटकी बजाते—पलभर में।

चुनरी—विवाह की धोती।

चुप—अधिक बड़।

चुनट रचाई—चुनट बाँध के खोली रगने की प्रक्रिया।

चुभलाना—धीरे के दाँतों से खाना।

चुमावन—विवाह की यह क्रिया जिसमें उसे सम्पन्न होती है।

चुर जाना—गल जाना।

चुराया जाना—गलाया जाना।

चुहुल करना—बात बात करने अथा धार से स्पर्श करना हुली करना।

चूक—मुड में लगा रहने वाला काहे को धार का हिस्सा करना।

चूड़ा—चिउड़ा।

चूड़ामटर—जनरान चूड़ामटर-मिश्रण।

चून—चूर्ण (अनाज आदि का)।

चूनरी—हथेली की एक प्रकार की मेंहदी रचाई।

चूना—टपकना।

चूनी—चोकर।

चूर—चूरा।

चूरमा—टिक्की रोटीको तोड़कर घी में भुनकर तयार किया हुआ व्यजन।

चूरा—चाट।

चूस—चूर।

चूल्हा घर—भनसा रसोईघर।

चूहड़—जोहड़, घुँए की किस्म।

चूहेदन्ती—एक आभूपण।

चेनी—बाह में बाहर लगा सन का एक बाहर।

चेपुआ—चडरी।

चत—चतमाव।

चती—चैतक महीनें में फसल कटन के कारण उस फसल का नाम चैती पड़ गया।

चैली—पये के ऊपर का ओढ़ार चिरी लकड़ी।

चोआ—राब का रस जल संग्रह का एक निचला स्थान।

चोकनी चोक चाकर—खाल (गहूँ जौ आदि का छिलका), गहूँ के आट में मिली हुई मोटी भूसा।

चोखा—सौंधा।

चोसा—चरसा।

चोटी—बछड़ के लिए दूध चुरानवाली (गाय)।

चोत—खाम का ढेंग पर लगा रस।

चोभी—करुआर।
चोरनाव—इससे चिड़ियों का शिकार किया जाता है।
चोरनी—चोही (गाय)।
चोला—वस्त्र।
चोही—हर पुट्ठा के दोनो ओर रहने वाली धूल दूध चुराने वाली।
चौकड़ी—युग चतुष्टयी।
चौकनारन—वरही।
चौकपूरना—माङ्गलिक अल्पना करना
चौकी—हुँगा, चकरी।
चौकोर—पटिया।
चौखडजडा—चोखटयुक्त।
चौखडा—चार चास।
चौखूट—चार खूँट वाली वेल रचना।
चौघड़िया—चारघड़ी का मुहूर्त।
चौथ—चतुर्थी।
चौथेया—पचास पत्ते।
चौदन्ता—चार दाँत वाला बछवा।
चौदा—चका।
चौधा—सनसारी।
चौपट्टा—गेहूँ में उगने वारी एक घास।
चौपत—लपटन।
चौपतिया—कपास के कपारो फोरने की बाद का स्थिति।
चौपहल रेती—रेती का एक प्रकार।
चौपाल—घर के बाजू में होता है, खुले छप्पर का चौबारा।
चौपारा—जिस कुऍं पर चार पुर चलें।
चौकड़ा—चतुःशाल, बड़ा कमरा।
चौबरघा—चरगोड़ी (गाड़ी)।
चौबही—चार-चास।
चौबारा—चौपाल।
चौभरा—पीछे के दाँत।
चौमस—पलिहर।
चौमासा—चातुर्मास्य।
चौरङ्गा—चार टाँगो में वात वाला बल।
चौरठ—भिगोय चावल की पीठी, चावल का आटा, पिसा चावल।
चौरसा—सीधे और चौड़ छेद करने का एक औजार समतल।
चौरस रेती—चौड़ी रेती।
चौराई—चौलाई।
चौराई—जिस खान से दाँत न खट्टे हों ऐसा (आम)।
चौरासा—एक आभूपण (घूँघरू) जिसमें दो कटोरियाँ सी मिलाकर जोड़ दी जाती हैं।
चौरासी घुघुर—पैर का आभूषण।
चौरी—चिउरी, वेदी।
चौरीपूजना—विवाह-वेदी की पूजा।
चौलरी—चार लड़ वाला हार।
चौलाई—एक साग (लालभाजी)।
चौवई—कुआर और पूस में तेजी से दिशा बदलने वाली हवा।
चौसरा—दालान।
चगेर—चगेली का बहुत बड़ा रूप जिसमें ज्यादा अनाज रखा जाता है।
चगेरी, चगेली—अनाज रखने के लिए बहुत चौड़े मुँहवाला तथा सँकरी पेंदी वाला पात्र।
चंगोर—बोइया।
चँदवा—चँसोरी।
चंदिया—(दे०) पनपथी।

चँवरी—सफेद पूँछ वाली (गाय)।
चँहूली—टिकरी (गाय)।
चाडना—पानी चढाना।
चाँदशाही—खबीनी की तरह एक मिठाई।
चँगवा—चगन।
चँगी—चकई।
चँघी—चोटी।
चपा—एक काला कीडा।
चाषा—भाथी की नली, साँसल।
चोगिया—गहुआ।
चाचिया—नोकदार।
चोटी—चोही।
चाप—नाड की रस्सी।
चौंदना—कुतरना।
चौंदिया—छोटी बेनी।
चौंधियाता प्रकाश—अधिक तेज प्रकाश जो आंखों को ज्योति दक द।
चडचडाहट—आग म पडी लकडी की आवाज।
छकडा—गाडी।
छकनी—छडी।
छदार—छ दांत वाला (बछडा)।
छज्जा—ढाँचा बाहर निकली खिडकी अथवा जगह।
छट्ठ—षष्ठी।
छडा—लच्छा पैर का आभूषण।
छतदार—उतवाला घर।
छतरी—छतरी के आकार का एक छाजन (छाया करन क लिए)।
छत्ता—मटर क पौधे का ऊपरी भाग।
छदता—दाँत वाला बछडा।
छनगाह—दूध दते समय कून्न (वाला)।
छनिया—एक आभूषण।
छनौटा—एक प्रकार का परना।
छपका—(बला की) देह पर चकत्ते पडना।
छपकी—गडली।
छपटा—धान में लगने वाला तोता।
छपरोना—इकवाई।
छपाक—कोई चीज यकायक पानी में गिरती ह तो एसी ध्वनि होती ह।
छपछप—हवा के लहकारने पर जल की ध्वनि नाव की आवाज।
छप्पइया—छप्पर छाने वाला।
छबडा—छैंचा।
छबडा करना—डरा लगाना।
छबडी—टट्टा।
छबरिया—समकेंद्रित वृत्त रचना।
छरका—सुटकनी।
छरन—बाठी के ऊपर बाँस की कल।
छर्रा—कई ढग के अन्नों और छाटो वाला (बल)।
छर्री—कई रगा वाली (गाय)।
छलछल—पानी की आवाज।
छल्लाछल्ली—पर की अंगुलियो में के पोरा में पहना जान वाला आभूषण, फदा।
छल्ली बधाव—छापा बधाव (कदा रचना)।
छवाई—छाने की प्रक्रिया।
छाक—सवरे का भोजन, गहूँ के बारीक मद से बनी मिठाई।

छाकल—छकनी, छडा।
छागल—पैर का आभूषण।
छाछ—कोरोती मठा।
छाजन—छाजन छाया करने का साधन।
छात—छत्र।
छान—पशुओं के पैरों में बांधने वाली रस्सी।
छानना—घी में छानना, अनाज भिगो कर छानना।
छना—मडवा।
छायित—छायायुक्त।
छाल—जब छोटे ओले पडकर कुछ ही देर में बन्द हो जाय।
छा सकना—फल जाना।
छिउला—पलाश।
छिछली खेलना—पानी के ऊपर नाव को घुमाकर एक ही स्थान पर क्रीडा करना।
छिछला—उथला।
छिटक जाना—तडक जाना।
छिटकना—तितरबितर होना।
छिछुआ—बास की खूंटिया के सामने वाली सरकी।
छिट्टा—कठौआ।
छिटकी—छिटुआ।
छिडकाव—बहुत ही मामूली वर्षा।
छितनी—बांस की बनी होती है (डलिया के आकार से मिलती जुलती) टोकरी की पेंदी।
छितरी—छितना।
छिनगा डालना—एक एक कर काटना।
छिनना—मलाई उतारना।
छिनुईदही—मलाई उतारने पर बचा दही।
छिपकी—छिटुआ।
छिमउर—चना अरहर, मटर का भुस।
छिमिहन—फलीवाली (फसल)।
छिलकेदार—छिलकावाली (दाल)।
छिलाई—सोने में चमक पदा करने की प्रक्रिया।
छीटी—चाबुक।
छीप—डटा।
छीरा } तम्बाकू और कपास में लगने
छीरी } वाला कीडा।
छीलना—तीव्रता से स्पर्श करना ऊपरी पत्त उतारना छीलना।
छीबा—दगरा।
छुच्छी—बगनर की एक पोली गडली, कवला।
छुट्टल } सांड बनाने के लिए छोडा हुआ
छुट्टा } जवान (बछडा)।
छुहियाना—हल्के हाथ फलाना।
छुहियाया जाना—हल्के हाथ से फलाया जाना।
छेउआया—तमाखू की एक किस्म।
छेद—भूर।
छेना—पनीर।
छेनाखोर—छेन की मिठाई।
छेनावडी—छेन की मिठाई।
छेनी—छेद मारने का एक औजार काटने के काम के लिए एक औजार।
छेनिया—छेने की मिठाई।
छेने की टिकिया—छेन की नमकीन मिठाई।

छेव—कुल्हाड़ी की चोट।
छेव लगाना—काटना।
छेलवड़ी—एक प्रकार का काढ़ा।
छेंड़न—छुग भोजन मयार पर पानी छूट जाता है और कुछ दिनों तक दोहर बनी रहती है।
छेपा
छेपी } आरसी।
छेर—मठा।
छेरी—पनछोर।
छेलनी—छोटा करना।
छेला जाना—ढीला जाना।
छाटना—कटना अलग होना।
छाटना—चावल को ऊखल आदि में साफ करना।
छाटी—पुआल आदि का चारा (काट कर छोटे टुकड़ों में)।
छांटीकट्टा—बैल खिलाने वाला स्थान जहाँ छांटी या चारा काटा जाता है।
छांही—प्रकाश की कमी।
छीका—सिकहर।
छीटा—ओड़ा रास जोखान के काम में लाया जाता है।
छीटी—कुआँ खोदने के लिये एक औजार।
छूछरी—बगुची।
छूछी—गड़ुआ नाथी की नली।
छेंकन—रोकना विवाह के लिए वर चुनना।
छेड़ी—ढोरा।
छटी—आरा।
छौंक—बघार।
छौंकना—बघारना।
छौंका—हल्की वर्षा।
जई—नया यवांकुर एक मोटा अनाज।
जगडोरी—बरही।
जगत—कुएँ के चारों ओर का चबूतरा।
जगत्प्राण—प्राण संचार करने वाली हवा
जग नाथी—एक प्रकार का पान एक प्रकार का धान।
जगमगाना—तेज चमकना।
जगरनथिया—एक मोटा धान।
जगा देना—(दद को) गाँठों के उभाड़ना।
जग—बाजूबंद के तीके की एक घुण्डी।
जगाला—नीला रंग विशेष।
जड़कट्टा—बड़ से कटिया की प्रक्रिया।
जड़बधना—मोजर।
जड़हन—अगहनी।
जड़ियागिरी—नग जड़ने का काम।
जनवासा—डेरा, बारात ठहरने की जगह।
जनेऊ—यज्ञोपवीत।
जनेरा—मकई।
जत—पैजनी को आगे की ओर से बाँधने जाने वाली रस्सी।
जपित—ओठ के भीतर बुदबुदाना।
जभला—छपेटन को टिकाये रखने वाला दायें बाजू वाला खूटा।
जमन—घटा।
जमना—घनीभूत होना।
जमता-सा—जमने (कठोर होने) जैसा।

जमराजी—दखिन पुरवाई हवा, जो सूखा लाती है।
जमार-गडार—गाडर।
जमीकन्द—ओल, सूरन।
जमुवट—कुएँ का घेरा।
जमला—बादल की घटा।
जमोट—काठ की ६ पट्टियों को जोड़ से बना गोल घेरा।
जम्हार—एक कड़ी किस्म की घास जो खराब और बंजर धरती में उगती है।
जम्हूरा—कांटी आदि निकालने के लिए एक औजार।
जरईकरना—राख और नमक-पानी से बीज को अखुआ करना।
जरला—चरखा।
जरगली—अधिक वर्षा से होने वाला फसलों का एक रोग।
जरछोरा—जड़कट्टा।
जरापूर } जरौंदा } आलू की जड़ में लगा छोटा छोटा रेशा।
जरसुधा—दरसूधा सावा (नाव का एक अंग)।
जलखई—सबेरे का भोजन।
जलखरी—इसमें आम आदि फल रख कर धोते हैं।
जलखोरना—मूज फटना, बैल का रोग।
जलधराव } जलपान } सबेरे का भोजन।
जलमहार—बगल।
जलवांसी—जलने से राख की भांति कालिख लग जाना।
जलसारी—लूसी या लम्पी।
जलहली—पानी की कुंडी जिसमें लोहार लोहे के गरम टुकड़ा या औजारों को बुझाता है।
जलहोर—एक महीन धान।
जलिया—मुगरा।
जलिया डालना—कुतर कर जाली की तरह कर देना।
जल्ला—पशुओं को खिलाने के लिए जालीदार झोला।
जवसघा—जसोधा।
जवाइन—अजवाइन।
जसोधा—दरसूधा।
जहरबाद—जहरीला फोड़ा, बैल का रोग।
जहाज—बेड़ा।
जाउर—दूध और पानी दोनों में पकाया हुआ चावल।
जाखिन—ऊड़द मूंग आदि का तना।
जाजिम—बिछाने का बड़ा चद्दर।
जाठ—नरा।
जाठि—बेलन।
जातोख—छ दांतों वाला जवान बछड़ा।
जाफरी—बाँस से फटी।
जाब } जाबा } जाबी } पशु के मुंह पर जो खलिहान में लगाई जाती है।
जावर—सब्जी के साथ पकाया चावल।
जामन—जोरन (दही जमाने के लिए)
जामुनी—गहरा (पानी)।
जारा—हरया।
जाला—कपास, अफ़ीम या पोस्ता की पत्तियों में लगने वाला रोग।
जिउती जिउता—दम्पति का चित्रांकन।

जिहला—जभला ।

जामनी गिडार—मक्का के तन नष्ट करने वाली गिडार ।

जीरा जल—एक प्रकार का पेय ।

जुआ, जुआठ — पालो (हल का एक अंग), जूअड बैलगाडी का एक भाग हल का एक अंग ।

जुगनू—रात को चमकने एव उडने वाला एक कीडा ।

जुट्टा—फूलो को बाँध कर जुट्टा बनाते हैं ।

जुट्ठ—बाँस का ठटक दायें बायें जुट्ठे के साथ बाँस की पच्चटे बाँधी जाती है ।

जुडना—आपस में मिलना ।

जुनेरी—बैंती ।

जुना—बोझ बाँधने के लिए सरपत या पटार के ऐंठकर बनाते है ।

जुरठी—जुड हुए थन वाली (भैंस) ।

जुलाहा—जोल्हा ।

जूअड—जूआ ।

जूठ—छुटा भोजन उच्छिष्ट ।

जूना—जुना ।

जूही-बगाल—एक महीन धान ।

जेठ-असाढ़ी—वह फसल जो ज्येष्ठ और आषाढ़ में कटती है खेत की तयारी का समय ।

जेठुआ—तमाखू की एक किस्म ।

जेठआ-सन्जी—जेठ मे होने वाला सञ्जी ।

जेबरा—बड के गड में पड़ने वाली रस्सी ।

जमा—सिक्का ।

जोगिया—गेरू के रग का ललछौहें रग का ।

जोट—पैर की उँगली का आभूषण ।

जोडतोड—पूरी शक्ति ।

जोडाजामा—वर का वस्त्र ।

जोडी—हस्तगत करो ।

जोत—प्रकाश मजरुआ ।

जोता, जोती — बैलों की गर्दन में जो रस्सी बाँधी जाती है उसे जोता कहते है बैलो को जुए से जोडने वाली रस्सी ।

जोती—जुआली ।

जोन्हरी—मकई ।

जोर—पगहा, रस्सी की गाँठ उबहन

जोरन—जामन ।

जोरावर—सगुनी (बैल) ।

जोरू—स्त्री ।

जोलहा—जुलाहा ।

जोशन—एक आभूषण ।

जोहो—उत्सवधना ।

जौमाला—एक प्रकार की माला ।

जौरी—जुआ ।

जंगला—छड़दार खिडकी धान में होने वाली घास ।

जदनी—अदवाइन ।

जाँगी—होंठ ।

जँगरा—भैंस का सद्याजात बच्चा ।

जँगरी—पुसटो गाय भैंस की सद्योजात पडिया (मान्य) ।

जँवर—दुआली ।

जगरा—बछरू ।

जोता—कनटो कडी, गूरा ।

जोगा—एक मोटा धान।
जोधरी—लाल ज्वार।
जौंढ़ा—दोगली।
जोंडरी—ज्वार।
ज्योति—रोशनी, प्रकाश।
ज्वार—एक भदई फसल।
झंकार—झिल्ली की आवाज।
झंखाड़—झाड़ आदि वाली जमीन लीजार।
झंयरीदार—झंयरीवाला।
झंझवा—वाम्मा, एक जमीन का किस्म।
झंझा—चक्रवात।
झटहा—छोटा डण्डा।
झड़प—धारो।
झड़ी लगना—कुछ दिन तक लगातार वर्षा होना।
झपटी—बरसाती हवा तेज हवा के साथ बौछार का पड़ना।
झपसजाना या झपसना—पत्ता से खूब लद जाना।
झबदा—रोग लगी फसल।
झबिया—एक आभूषण।
झब्बरा—कुआर के प्रारम्भ में बहने वाली पुरवया।
झम—फावड़ा।
झपा—धान की वाली।
झर—भट्ठी की आग का लपट।
झरका—झगरा पतली डाल।
झरना—एक प्रकार का रंदा मिठाई बनाने का झरना पर्वतों से निकलने वाला जल स्रोत।
झरगा—झारग मड़ा धान।
झरझर—वर्षा की आवाज।
झलक } चमक प्रकाश की सबसे
झलकरा } हलकी रेखा।
झलझलाती—चकमक करती।
झलझलाना—चमकना।
झलमल—तेज प्रकाश एवं धूप से युक्त। पतिरुद्ध ज्योति का जलना।
झलरिया—ज्वार।
झलाना—मेह बरस कर यकायक बंद होना।
झल्ली—खाँची।
झहरना—छिलकर गिरना।
झहराना—झकझोर देना।
झाइन—झाल।
झाइ—झलक।
झाओट—तेज हवा के साथ मोटी वर्षा।
झाड़ू—सोहनी, बुहारु।
झामा—फावड़ा।
झाय—गर्मी की तेज हवा।
झारकर—पीट कर।
झारना—साफ करना।
झारनी—पक्का दन वाला (गाय)।
झारम—अपने आप उगने वाला धान।
झारी का रंदा—लकड़ी के दरवाजे बनाने के लिए औजार।
झाल—एक प्रकार की चंगली।
झाला—आभूषण, तमाखू (तम्बाकू) का तना डंडी या डाँठ, सूखे पत्ते और डंठल।
झिकिया—पिटिया (गाय)।
झिटटी—चीड़।
झिमझिम—रिमझिम (वर्षा)।
झिरझा—जँगला खिड़की।
झिलमिल—सूर्य या चन्द्रमा की किरणों से मिला जल।
झिलमिलाहट—चमक।

टपका—टपका हुआ, डाल पर से गिरा हुआ।
टरसुई—टाँडी।
टर टर—मेढक की आवाज।
टलमल—शीघ्र बुझने वाली रोशनी।
टहकार—चहकोली।
टहना—शाखा, डाल।
टहोका देना—धक्का देना।
टाट } टाटी } बांसिया की दिवाल।
टाड़ा लगना—होना लगना।
टाप, टापी—मछली पकड़ने के काम आने वाली टोकरी।
टापरा—करई।
टाल—पहिया के चारों ओर चढ़ाया गया लोहा, मौंग या सेंठे में सामने का हिस्सा सिरी।
टिकरा—चहुला।
टिकरी—केवल लिलार पर सफेदी वाली (गाय)
टिकिया—बाजरे के आटे की पूड़ी, गेहूँ के आटे की बना।
टिकुली—टिकरी गाय टिकुली, तिलक।
टिकोरा—आम की नयी कैरी।
टिक्कड़—चाकर मिश्रित आटे की मोटी रोटी।
टिकटिक—घड़ी की आवाज।
टिड डी—एक कीड़ा।
टिमटिमाना—बहुत हो मन्द प्रकाश देना।
टिरिया—छोटा और कुत्सित नस्ल का बैल।
टीका—टीका, तिलक, पाणिग्रहण के पूर्व की एक रस्म।
टीपन—जन्म पत्रिका।
टीलिया—ढूह टीले जैसा।
टुनकी—धान के पौधे में लगने वाला एक रोग।
टुनटुनी—घंटी।
टुनटुन—घंटी की आवाज।
टुटहुन—बहुत टूटने वाला (धान)।
टूट जाना—धारापरिवर्तन होना।
टूठा—वझड़।
टेकानी—उरानी, गाड़ी के ढाँचे का एक मुख्य हिस्सा।
टेखती—तरौनी।
टेढ़रा } टेढ़वा } टेढ़ा मेढ़ा।
टेर—पका गूला।
टेना—मुचकना।
टेमना—आलू के ऊपर का एक हरा गोल फल।
टोई—थोडी।
टोकरो—थोड़या।
टोडिया—द्वार के अलावा तीन ओर कड़िया को ढकने वाली लकड़ी।
टोनखावा—पनारो।
टोना—मेंड़।
टोपन } टोपनी } जिससे छेद किया जाता है।
टोपी—वर्मा की टोपी टोपी।
टोरा—हल का निचला हिस्सा।
टोसा—पाथेय।
टोह लगना—पता लगना।
टँगउघार—लमटंगा (बैल)।
टंगपुच्छा—पुछटंगा बैल।

टँगारी—टाँगी ।
टँगुहइया बजडी—ज्वार ।
टँगुली—कुल्हाडी ।
टागा } कुल्हाडा लकडी काटने का एक
टागी } साधन ।
टागुन—कगुनी ।
टाड—टाँडा सामान रखने के लिए बनाया जाता है ।
टाडी—गहूँ और इख की जड को नुकसान पहुँचाने वाला एक हरा कीडा टरसुई ।
टुगनी—बलकट ।
टूक—रोटी का टुकडा ।
टूड—सूँग गहूँ की बाली में से आगे निकला हिस्सा ।
टेंट—डेंढा ।
टभी—होभी ।
टोटा—हाथ टढ़ हाथ बढ़ी हुई फसल ।
ठकुआ—ठडुआ ।
टटरी—छत्री ।
ठट्ठा—ठाठ ।
ठठरा—छानी ।
ठठा—टेंपनी ।
टठरा—फग्रा ।
ठडिया—मरसा ।
ठडवाता—ठडिया ।
ठठिया देना—गडा कर देना
ठर—ऊंचा जगह ।
ठरकना—निकल जाना ।
ठरियाई—पाले से भारी नुकसान ।
ठर्रा—ऐंग्र सूत ।
टस्स—र्‍ (गाय) ।
ठहर जाना—गर्भ टिक जाना ।

ठाकुरचिरइया—श्यामा पक्षी ।
ठाकुरभोग—एक महीन धान ।
ठाट—पँसडोर के ऊपर का साज ।
ठाढ़ा—ग्वार ।
ठारी—पाला ।
ठिकरीली—ककरीली (मिट्टी) ।
ठिठुरन—ठडी के कारण ठिठुरने की क्रिया ।
ठिहा } जिस पर बढई काम करता
ठिहा } है जिस पर चारा काटा जाता
ठुक ठुक—बसूले की आवाज ।
ठुर्रो—जिन दानों का लावा नहीं फूटता है अनफूटा दाना (भुजा हुआ) ।
ठुसी—गले का एक गहना ।
ठेक—चटाई की बनी ।
ठका—रस्सी की गाठ ।
ठुआ—दाल के साथ पकी रोटी ।
ठल—वह पिरनी जिसमें डडा फिट किया रहता है ।
ठलना—धक्के से आगे बढाना ।
ठहरी—ठल ।
ठोक—चप्पे का दूसरा सिरा ।
ठोकरा—भडभाड ।
ठोपारी—दूसरी बार छानने पर जो चीनी का रस निकलता है ।
टोरी—ठुर्रो ।
ठगुनी—टेंपनी ।
ठाठर—एकदम बूढ़ी गाय ।
ठिगुरियाई—चटा ।
टोंचा—चाइया ।
टेंगनी—एक प्रकार की छडी जो गुन्डा के हाथ में रहता है ।

ठेंघनी—बाँस की खभिया (थुही)

ठाठ } एक प्रकार की कुदाली
ठेंठी }

ठवा—वोड्या।

डगरा—पतली बारी की सीक या बाँस की बड़ी डलिया।

डनलप—रबर के पहिया वाली सवारी गाडी।

डभका—भुने हरे गने (मटर आदि के)।

डर—मोथा।

डलमल होना—आज कल में व्याने का होना।

डलिया—फूलडाला, चँगेली का छोटा रूप जिसमें थोडा सा कुछ रखा जाता है।

डम्हरी—जम्हार।

डाई—बाँदिया।

डाक्नी—सिरा।

डगोडी—दो बला द्वारा सँभलने वाला पाटा।

डाट—मुँह ब द करने वाला।

डाढी—मही।

डाव—गड्ढा।

डाभा—कफचा।

डाभी—एक कडी क़िस्म की दूब।

डार—एक आभूषण।

डाल—नवाकृति डलिया जो बाँस की होती है।

डाला—डगरा।

डाहना—ईर्ष्या करना, खेत गाडकर धूप में सुखाना।

डिठवन—देवोत्थान (एकादशी)

डिडिया—मरचाई।

डीको—कद्दई।

डीभी—नया अकुर, पौधे का दुपतिया होना।

डील—गूल।

डीह—भीटा।

डीह डावर—पुरान भवन की ऊँचा जमीन खडहर आदि का स्थान।

डुबान—जहाँ पूरा डूबना सभव हो, ऐसा गहराई।

डुब्बा रगाई—पूरा डुबा कर रँगने का प्रक्रिया।

डुब्बी—विरहा।

डेगची—भाजन पकाने का बतन, पतीली।

डेढौरा जोर—छान।

डेफ—अखुवा।

डेफ निकलना—कनियाना, अँखुआ निकलना।

डेवढी—द्वार क पीछे का घर।

डेरा—जनवासा।

डेली—खाची।

डेहरी—यह अनाज रखन क लिए कच्ची मिट्टी की बनाइ जाती है।

डनी—चार क दो छोटे पल्ल।

डोआ—कफचा।

डाइट—डाहट (एक नाव)।

डोई—लकडी का चम्मच।

डोमा—पूस माघ में कहने वाली उडद।

डोरवघा की खूटी—पिछली खूँटी।

डोरी—रस्सी लोटा भरन के लिए रस्सी।

डोहट—एक छोटी नाव जिसकी पेंदी चिपटी होती है।

ढूकना—बार बार चमकना।
ढेंकी—सिंचाइ का साधन।
ढेंकुल / ढेंकुली } कूटने का साधन
ढेंढ—पका गूला।
ढेंढ़ियाना—चना मटर में घोघो लगना।
ढेंढी—टेंट फूल।
ढेंपी—मिट्टी की लोद, फल का व त।
ढरिया मरचाई—एक किस्म का लाल मिर्च।
ढेंसर—अधपका।
तकुआ—तकली के बीच म यह जडा रहता ह।
तकुली—महीन सूत कातन क लिए तकली। लट्टू को दबल का लाहे या लक्डी का लम्बी डण्टी वाला एक यत्र।
तक्कर—मट्ठे का घोल।
तक्की—तिरछी चितवन वाला।
तगडी—कमर का एक आभूषण।
तगधरी—सूता को सुल्झान वाली लकडी।
तगही—पगहा।
तगाडी—पथिया।
तडक जाना—दूहत समय गाय का कूद जाना।
तडतड—तज आवाज (लाठा आदि की)।
तडतडाहट—स्तनित बाल की आवाज।
तडपना—एकाएक बादल का गरजना छटपटाहट।
तडा—धान की मजरी में लगान वाला रोग।
तताना—गम करना।
ततुराई—बठी (फसल)।
तनकर—हत्या।
तनी—ताँति।
तपखी—कातिकी उन्द।
तपा—लूक।
तपोवनी—एकटा गाय।
तमिया—गुडाइ।
तरइया—तारा क बीच छिटके बादल खण्ड।
तरकी—कान का आभूषण।
तरख—हल का गहरा और कडा चलना।
तरछा—पास्ता लाइन का एक यत्र।
तरछी—कुआ खोदन का यत्र।
तरमेरो करना—पर उखाडना।
तरबेजी—एक मिठाई।
तरयोना—कानो का एक आभूषण।
तरल—तला हुआ यजन।
तरवा जाना—(बैल का) पैरा का पकना रोग।
तरवा झोरनी—लम्बी पूछ वाली (गाय)।
तरसला—जुआ की निचली डण्डा।
तरती—तरनी।
तरोइ—एक सब्जी।
तरौना—खाँचा, तरौनी।
तरौनी—मिठाई रखन की छाटी चौकी।
तर्कु—तकुला।
तलवा—तालु पर का तल भाग।
तलसिरी—ऊँची-नीची जमीन।
तलया—छाटा तालाब।
तवना—तपना।
तवाना—तपाना।
तसमई—खीर।

तहरी—हरे मटर के साथ भुन हुए चावल का व्यजन।
तहिआई—तह लगाई हुई (वस्तु)।
ताख—दीवाल में रखन की जगह विषम सख्या।
ताखो—तक्की (वल)।
तागा—धागा डोरा।
ताजखानी—तासखानी।
ताना करना } सरकी म सूत लपेटना।
ताना करना }
तामई—ताम्र वणता।
तामझाम—ठाट बाट।
तार—धागा।
तारकुतारी—समय स दूध न देने वाली (गाय)।
तारावन—अतरावन।
ताल—नीचा और फली हुई जमीन छिछला तालाब।
तालतोड—ताल क किनारा को तोडन वाली (अतिवृष्टि)।
ताव—अवसर ठीक समय।
तावीज—बाँह का एक आभूषण।
तावन करना—माँजना
तासखानी—चावल के आँटे की बनी हुई मिठाई।
तिकोनिया—तीन कोन वाला।
तिखरा—तिबारा (जुताई)।
तिजहरी—तीसरे पहर का समय।
तितिली—चोपट्टा।
तिदरी—तीन द्वारों वाली (दालान)।
तिनगिनी—गुड़ का बनी मिठाई।
तिनचुटिया—कालनेमी या कौआ बधाव (कनकव्वा)।
तिपहरी—तिजहरी।
तिप तिप—ओस की आवाज।
तिफसली—तिसाई, तीन फसल देने वाली।
तिफल्ला—तीन फतर वाला।
तिबसिया—तीन वेला तक बासी गया भोजन।
तिबही—तिबारा (जुताई)।
तिबेनिया—किवाड़ों की जोड़ी।
तिरपटाह—दरकना (खेत)।
तिरि—जिससे सूत निकाल कर बुना जाता है।
तिलकुट—तिलवा तिल स बना व्यञ्जन।
तिलहन—तेल वाली फसल।
तिलरी—तीन लड़ी वाला हार।
तिलवा—तिलकुट।
तिलौडी—तिल की पीठी के साथ बनी बडी तिल की पीठी से तयार अदौरी जसी तरकारी।
तिल्ली—तिल का बीज।
तिसजौरी—तीसी के साथ पकाया चावल।
तिसाई—तिफसली।
तिसियाउर—तीसी के साथ पकाया चावल।
तीकुरिया—टूड वाली।
तीज—सुतीया।
तीज—बाँस का (खूटा) जो पिढ़िया के ऊपर दो खूँटों के बीच रहता है।
तीतरपखी—तीतर की पंखों जसे (बादल)।

तहरी—हरे मटर के साथ भुने हुए चावल का व्यजन।
तहिआई—तह लगाई हुई (वस्तु)।
ताख—दीवाल में रखने की जगह विषम संख्या।
ताली—चक्का (बल)।
तागा—धागा डोरा।
ताजखानी—ताउखाना।
ताना करना } चरखा में सूत लपेटना।
ताना भरना }
तामई—ताम्र वर्णता।
तामझाम—ठाट बाट।
तार—धागा।
तारकुतारी—समय से दूध न देने वाली (गाय)।
तारावन—अतरावन।
ताल—नीचा और फैली हुई जमीन छिछला तालाब।
तालतोड़—ताल के किनारों को तोड़ने वाली (अतिवृष्टि)।
ताव—अवसर ठीक समय।
तावीज—बाँह का एक आभूषण।
तासन करना—माँजना
तासखानी—चावल के आटे की बनी हुई मिठाई।
तिकोनिया—तीन कोने वाला।
तिखरा—तिबारा (जुताई)।
तिजहरी—तीसरे पहर का समय।
तितिली—चौपट्टा।
तिदरी—तीन द्वारावाली (दालान)।
तिनगिनी—खाँड का बनी मिठाई।
तिनचुटिया—काकपक्षी या कौवा बधाव (केशसज्जा)।
तिपहरी—तिजहरी।
तिप तिप—ओस की आवाज।
तिफसली—तिसाई तीन फसल देने वाली।
तिफल्ला—तीन स्तर वाला।
तिबसिया—तीन दिना तक बासी रखा गया भोजन।
तिबहो—तिबारा (जुताई)।
तिबेनिया—त्रिवाहा की जोड़ी।
तिरपटाह—टरपना (खेत)।
तिरि—जिससे सूत निकाल कर बुना जाता है।
तिलकुट—तिलवा तिल से बना पक्वान।
तिलहन—तेल वाली फसल।
तिलरी—तीन लड़ी वाला हार।
तिलवा—तिलकुट।
तिलौड़ी—तिल की पीठी के साथ बनी बड़ी तिल की पीठी से तैयार अदौरी जैसी तरकारी।
तिल्ली—तिल का बीज।
तिसजौरी—तीसी के साथ पकाया चावल।
तिसाई—तिफसली।
तिसियाउर—तीसी के साथ पकाया चावल।
तीकुरिया—टूड वाली।
तीज—तृतीया।
तीज—बाँस का (खूटा) जो पिढ़िया के ऊपर दो खूटरों के बीच रहता है।
तीतरपखी—तीतर की पाँखों जैसे (बादल)।

ततरबन्ना— तीतरपंखी (बादल) ।
तीता—तिक्त, गीला खेत, भीगा ।
तीमन—साग ।
ताय—घाट (पानी का) ।
तीसी—अलसी ।
तुअनी—जिस गाय का गर्भ प्रायः गिर जाय ।
तुतलाहट—शिशु की बोली ।
तुनाई—तूमने की क्रिया ।
तुक्की—सोधा ।
तुरई—तराइ ।
तुरता—सतुआ, तुरत तयार होने वाला (भोजन) ।
तुरी—दरकी ।
तुर्रा—मटर को लता का फैलाव ।
तुलँगड़ा—कुलँगड़ा ।
तुलबुल्ली उड़द—हरी उड़द ।
तुलसी फूल—एक महीन धान ।
तुलावा—धुरा का मजबूत करने वाला लकड़ी का टुकड़ा ।
तूफान—बुढ़िया ओंजन ।
तूमना—तुनाई की क्रिया ।
तूर—वरखा से अलग की गई रूई ।
तेकानी—टेकानी जो आक के आगे होता है ।
तेफल—कतरा ।
तमरा—कन्दू ।
तेरस—त्रयोदशी ।
तेलचढ़ाव—विवाह के एक या दो दिन पूर्व वर या कन्या के लिए रस्म ।
तेलहन—तेल का फसल ।
तलियामैना—एक चिड़िया ।
तलियाना—तल लगाना ।
तेली—कपास के गूलर एवं पत्तियों को खा जाने वाला कीड़ा ।
तनुआ—बुआकस ।
तयल—दमहा (बैल) ।
तोड़—बच्चा मरने पर भी दूध देने वाली (गाय) ।
तोड़ मारना—धारा का टकराना ।
तोड़िया—तोड़ (गाय) ।
तोतई—धानी (रंग) ।
तोरई—वरोई (एक सब्जी) ।
तोरन—मेहराब तोरण वंदनवार ।
तोरी—सरसों की एक किस्म ।
तौक—एक आभूषण ।
तौमरा—ठूंठों के आगे का सूखा लाहा ।
तमइया—छप्पर को रस्सा या जोड़ से जगह जगह बांधने वाला ।
तँतवा—कपड़ा बुनने वाली एक जाति ।
तँवक—गर्म उष्ण ।
तँवक उठना—गर्म हो जाना, उष्णता से प्रभावित होना ।
तागा—डोरा ।
तात—घोड़े के पेट को बांधने वाली रस्सी दादा ।
ताती—ततवा ।
तूती—कद्द ।
तेंगा—(बहू का) तीसरी बार आगमन ।
थकरियाना—थकरी से केश सुलझाना ।
थकरी—केश सुलझाने का एक साधन ।
थन—एन, दुधार पशुओं का स्तन ।
थपेड़ना—थप्पड़ मारना ।
थपथप—पानी की आवाज ।
थप्पा—ठप्पा ।

थम्हना—हवा चलना बन्द होना।
थान—बाजू।
थापरी—थापर का बल।
थापी—मिट्टी मुलायम करने एवं पीटने का औजार।
थारा—बड़ा थाल।
थाल—पीतल की थाल मिठाई रखने के लिए।
थाला—थाला (पानी जमा करने का मेंड़दार घेरा)।
थिगली—घरवा के बीच में छोटा सा सफेद बादल का टुकड़ा।
थिर—स्थिर अचचल।
थिर होना—थम टिक जाना (भय के लिए)।
थुही— } खूटी खेंखिया।
थुम्मा— }
थूआ—पटार।
थूम—खूँटी।
थोडली—थोडी।
थोप—सगन का तला।
थोम—टोकरी वगैरह लटकाने के लिए गाडी के नीचे का भाग।
दखिसन-पच्छिम—नैऋत कोण वाली (हवा)।
दखिसन-पूब—आग्नेयकोण से चलने वाली (बयार)।
दक्षिणायन—सूर्य का दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित होना।
दक्षिणपवन—दक्षिण दिशा से चलने या बहने वाला पवन।
दखिन पछाही—दखिखन पश्चिम से चलने वाली तेज (हवा)।
दखिन पुर्वाई—दखिसन-पूब से चलने वाली (बयार)।
दखिनहा—धान ज्वार बाजरा और मक्का में दखिसनी बयार के अधिक बहने पर लगने वाला रोग।
दखिना—दखिसन से चलनेवाली (हवा)।
दखिनया—दखिनी (हवा)।
दगियां जाना—दाना न पड़ना।
दडिमो—आम के टिकोरे की खटाई।
दनजाऊर—पोस्ते के साथ पकाया चावल।
दनदान—रंगीन खांड की बनी लंबी मिठाई।
दनौरी—पाहडा के दानों के साथ बनाई गई बड़ी।
दब—गाड़ी का आगे की ओर भारी होना।
दबनी—बर्मा की टोपी।
दबिया—पनिहारी।
दबोटा—बर्मा की टोपी।
दमडी का सिन्दूर—विवाह विधि में उपयोग में लाया जाने वाला सिंदूर।
दमहरिया—खचोली।
दमहा—हपना (बैल)।
दररा—दर्रा दडदार।
दर्रा—मक्के के दड दानों का भात।
दरस्तूपा—वह ऊंचा खंभा जिस पर मस्तूल खड़ा किया जाता है।
दरान रदा—कार को चाबीर बनाने के लिए रदा।
दरार—लम्बी फटान।
दरांत—हंसुआ।
दलगजन—एक मोटा धान।

दलदम—नदी के किनारे की फाफा जमीन।
दलसग्गा—दाल में चने के घुण का सा डालकर पकाते हैं।
दलही—दाल का पीठो से युक्त पूड़ी।
दुवर—नाव की लवान।
दह—हद।
दहर—नीचा खार।
दहाड़—शेर की आवाज।
दहियायो—बाढ़ में मारा फसल।
दहाना—फसल या अन्य वस्तुओं का जलमग्न करना और बहा ले जाना।
दही—बाढ़ में मारी (फसल)।
दही दही—महरी चिड़िया की आवाज।
दाऊदी—गेंदिया।
दाग देना—कोमलता नष्ट करना, मलिन बना देना।
दागी—दागवाला, धब्बे वाला।
दाड़ी—मकरी।
दात—दातोंवाली हँसिया।
दाना—भिगाये अनाज का नाश्ता।
दाना—एक प्रकार का बीज।
दाना-डूनी—सबेर का भोजन।
दाना पड़ना—हुलसाना।
दाब—दाहा, हँसिया, पजना।
दावा } दावी } – मिठाई माड़नेवाला औजार।
दायें चलना—हल का एकबार घूमना।
दार—उपजाऊ।
दाल का दूल्हा—दाल के साथ पकी रोटी।
दाल की पूड़ी—बरुआ पूड़ी।
दासा—बरामदे की छाजन में खम्भा के ऊपर दासा रखा जाता है।
दाहा—दाब, दाइ।
दिसनौट—भारी और चिकने शरीर वाली (भैंस)।
दिन चढ़ानो बेला—जब सूर्य ऊपर चढ़ जाता है।
दिन ढलानी—दिन का चौथा पहर।
दिनौर—कटनी की मजदूरी।
दिपना—चमकना।
दिमिरका—फिरकी।
दियरा—नदी की दो धाराओं के बीच की जमीन।
दिया—दीपक।
दियार—दीमक।
दीया बाती—दीपक जलाने का समय।
दीया—दीमक।
दीवाल—अहार।
दुआ—द्वार।
दुआर घर—द्वारगृह।
दुआर छेंकाई—जब वर की साल्याँ द्वार छेंकती हैं तो वर द्वारा जो नेग दिया जाता है उसे छेंकाई कहते हैं।
दुआली—नारा, रस्सी, बमा चलाने की डोरी।
दुआरा—चार के दो स्तम्भ पथ।
दुदन्ता—दो दाँत वाला (बछड़ा)।
दुद्धरमुठिया—दुद्धा।
दुद्धा—अधपकी बाल (ज्वार, बाजरा या मक्का का)।
दुधघोंटू—दुधमोरा, दूध भरने वाली (पत्ती वाला)।

दौंग—ओंतर।
दौंगडो—दागलो।
दौंगर—ओंतर।
दौंगरा—चौमास का वर्षा।
दौंरी—दांवरी।
द्वारगह्—दोगहा।
द्वाराचार—द्वारोठा बारात का कन्या के द्वार पर प्रथम आगमन और सम्मान।
द्वाल—ढांचे के सबसे नीचे द्वाल या टाप।
धचाना—अमेर।
धम्मिल्ल—बाधा बनाव।
धडकना—हृदय की आवाज।
धडाका—हथगोल या पटाके की आवाज।
धनक्यारी— } धनहर (खेत)।
धनसर— }
धन धरम—धन और धर्म (पूर्ण उपयोगी)।
धन पडना—गर्भ धारण करना।
धनवाल—बडी बाल।
धनहर—जिस खेत में धान पैदा होता है उसे धानहर कहते हैं।
धनहरा—धनवाल।
धनार ओसरि—गर्भधारण करने के बाद धनार ओसरि कहते हैं।
धनिया—एक महीन धान।
धनुही—धुनकी।
धमाकुल—चौडे पत्तेवाले तमाखू।
धरन—बडे शमर के ऊपर बडर के नीचे यह लकडी होती है।
धरन—छाजन वाले मकान की आडी मोटी लकडी।
धरवा—उठता हुआ बादल।
धरतीझार—धरती छूने वाला।
धानी—धोतई (रंग)।
धामा—ओडा।
धार—जलप्रवाह धारा भाग फार का अगला हिस्सा।
धार ओसरना—धार पीटना।
धार उतराना—खोटना।
धार कढइया—दूहने वाला।
धार धरना—खोटना।
धारपजावना—धार पीटना।
धारपजाना—खोटना।
धार पिटना—धार पर सान चढाना।
धार पिटाना—खोटना।
धार फरगाना—धार पिटना।
धारगाना—खोटना।
धार बनाना—धार पिटाना।
धाराधार— } जलसे भरा हुआ बादल।
धारावर्षी— }
धारी बावग—हराई में एक धार में बीज गिराया जाने वाला बावग।
धारासार—मूसलधार।
धुआकस—रसोई से धुआं निकलने की जगह।
धुइलो—धुधुलो।
धुईला—धूमवर्णी।
धुरवा—धरवा।
धुधुआरा—एक रंग का बादल।
धुनकी— } पीजन (यह धनुषाकार होती है जिसमें एक लकडी के फरोंटे में एक लचीली डंडी लगी रहती है इसके ऊपर एक चमडे की तांत मढी रहती है।
धुनटी— }

धुंध—ध्वांत धूलि से अंधेरा हो जाना।

धुरकिल्ली—किल्ली।

धुरिया—१ तीन बैलों वाली गाड़ी के दाएँ बायें वाले दो बैल २ जोड़ो।

धुरिया बावग—सूखे खेत में की गई बुवाई।

धुरी—बैलगाड़ी का एक भाग।

धूरी—अंकुर।

धूरुप—चमड़ा।

धुरौटी—पिछले चौकोर हिस्से के बाजू जो पहियों के ऊपर रहते हैं।

धुय—सगुना बैल।

धूनी—तम्बाकू का बीज।

धूपछांही—आधे श्वेत आधे काले रंग के बादल।

धूमिल—मटमैले रंग का।

धमिल—(चाँदनी) मटमैली चाँदनी (अगहन पूस की)।

धूम्र—१ धूआँ २ भूरा।

धूरपा—चमड़ा।

धूलिधुमाव—धूलि का उठना रोकने वाली थोड़ी वर्षा।

धूस—ऊंची जमीन।

धूसर—१ धूमिल २ मटमैला।

धूसरी—धान एक या धनवाली (भैंस)।

धेयता—रोहित।

धोअन—मांडकर धान समय गिराया गया पानी।

धाजा—पटार।

धोभाच—धोई (दाल) धोकर सुखाई गया दाल।

धोती बचार—घुटने के ऊपर तक की नो का माप।

धोना—चावल आदि धोना।

धोरा—सफेद रोएँ और नीली खाल वाला (बैल)।

धोरी—सफेद रंग की (गाय)।

धगठी—पशुओं से रौंदी फसल।

धँगायो—धगठी।

धुआंह—धूम्र के रंग (जैसा)।

धोका—धौंकनी का ऊपरी भाग जहाँ से हवा घुसती है।

धौंकना—ढकना हवा करना।

धौंकनी—यह चमड़े की बनी होती है आँच करने के लिए इससे हवा की जाती है।

धौंग—बड़ा धुआं।

नकछिकनी—कठरेंगनी।

नकटी—खोड़ा।

नकेल—ऊंट की नाक में बांधी जाने वाली रस्सी।

नचनी—धुएं को ऊपर से गिराने या उठाने वाली लकड़ी की आड़ी कड़ी।

नजारा—हरचोंडी।

नटचा—एना।

नटुली—नाटा (गाय)।

नठाई—एना।

नडा—नरा नाड़ा लाट छेद में फसाने वाली डोरी।

नतो—पाला।

नथ } नथिया (नाक का आभूषण)
नथिया } नाक नाथने की रस्सी।

नद्दर—नरुआ।

नहरनी—चरकट।

नहिया—एक मोटा धान।

नबारा— बल ।
नबेर—जल्हली ।
नमकीन स्पर्श—खारापन लिये बहने वाली हवा का स्पर्श ।
नमी—ओद, आद्रता ।
नमेरी—चाहा ।
नरगोरी—लाल बदल वाला बैल ।
नरमधार—मामूली दाब पर दूध देने वाली (गाय) ।
नरमा—नर्मा के अतिरिक्त अन्य महीनों में दिया गया पानी, कपास की एक जाति ।
नरा—लाट, जुए के बीच में चमडे की पटार का बना एक फन्दा, पीढ़ा के दो खूँटों के बीच धुरी के रूप में एक लम्बी लकड़ी ।
नरिया—नरिया, खपरल ।
नरी—लरी, जुलाहे की बुनाई छुच्छा ।
नरक्का—बाजरे की बाल के नीचे की नली ।
नरली—नारा ।
नलकी—लौंग या सैंठे के बीच में पोली डडी ।
नलकूप—ट्यूबवेल ।
नवठा—नया हाल ।
नवदन्ता—नव दाँत वाला बछडा ।
नवधर—नया हल ।
नस्त—नाथ ।
नहछू—वर्षों का मागलिक रस्म ।
नाक—मकरी ।
नाकनवसा—एक आभूषण ।
नाकसेव—पुआ सदृश लम्बी आयता कार मिठाई ।
नाग—धार ।
नगौरी—एक प्रकार का (बल) ।
नाटा—बीड ।
नाथ—पशुओं के नथुनों का बांधनेवाली रस्सी ।
नाथना—नाथ से नाथ कर नियन्त्रित करना ।
नाद—मवेशियों के चारा खान का मिट्टी का पात्र (चौड़ मुँह वाला) ।
नांदा—बादर ।
नाधा—लरनी ।
नानखताई—महीन मैदे से बनी मिठाई ।
नानपज—
नानबाई— } रोटी बनाने वाला ।
नान्दीमुख—आभ्युदयिक श्राद्ध जो विवाह के अवसर पर किया जाता है ।
नाव—धार ।
नारकटिया—सफेद ज्वार।
नार—चका धार, हंसिया की धार वाला हिस्सा ।
नारङ्गी—रंगविशेष ।
नारन—
नारा— } नरा ।
नारी नाली—नहर से निकाली गई प्रणाली ।
नावा का मारा जाना—नावा का एका एक पानी में डूब जाना।
नासा—हल का निचला हिस्सा ।
नाह—नाभि ।
निकल जाना—बह जाना ।
निकासी—पानी निकलने का रास्ता या नाली ।

निखरना—चमक उठना बिलकुल निमल होना।
निखरा—पक्का भोजन यथा पूड़ी साग।
निखरी—नज।
निघटना—मल या गदगी का अलग होना या पानी के नीचे बठना।
निघेस—अँगठी।
निथरना—स्वच्छ होना।
निनाद—वरन की आवाज।
निबादर—जब बादल बिलकुल न रहें।
निमग्रण—खाना।
निमान—डगार।
निमारा—बल्ले।
निमिष—पल।
निराई—खाहनी, गर निकालना।
निराना—पौधों के आस-पास की घास निराना (खाहना)।
निर्घोष—गजन।
निवष्ट—बरस कर पानी समाप्त हो जाना।
निवात—वायुरहित।
निवाला—एक बार म ह में डाला जान वाला (भोजन)।
निशीथव्यापिनी—यह तिथि जो निशीथ काल में रहती है।
निसुरा—टाहा।
निसोन्मा—पाना न जाने वाला।
निहाइ—जिस आह के आधार पर सुहार गहना जनिकाल काम करता है।
[illegible]
[illegible]
नीम—दखिनी वयार स उत्पन्न रोग।
नीरसना—बेस्वाद होना पानी सूखना
नीलकण्ठी—नीलकण्ठ (पक्षी विशेष) के कण्ठ के समान कण्ठवाली।
नीलगाय—जगली पशु।
नुकाना—दाग निकालने की प्रक्रिया को कहते ह।
नेउसा—पानी फल जल म होन वाली एक तरकारी।
नेग—याहार भेंट।
नेड़ा—लँगुरी, लँगा।
नेत्रप्रतिघाती—आँखों की ज्योति पर आघात करनेवाला प्रकाश।
नेनुआ—घेवड़ा।
नेपाली आलू—पहाड़ी आलू।
नेवरा—चलत समय खुर रगडन वाला बल।
नरती—(गर्मी में) हड्डियाँ [illegible] काल में चलनेवाली वायु।
नइआ—धान की [illegible]।
नयारी—[illegible]।
नहाई—[illegible]।
ननू—ताजा घी।
नारबार—[illegible] (पशु)।
नौनचा—[illegible]।
नौआ—[illegible]।
नौआ—[illegible]।
नौनिहारा—[illegible]।
नौतन—[illegible]।
नौतन—[illegible] (गहना)।
[illegible]—[illegible]

राख में स सोने-चांदी के कणो को अलग करने का काम ।
न्योता—निम त्रण ।
हैनो—कूडमिलौनो ।
पइन—नहर की शाखा ।
पइया—खोखला, अधमरा अनाज, एक कीडा ऐसी फसल जिसम दाने न पडें ।
पइला—पैला हल का मुह ।
पइ—श्रोटनो ।
पकठा—अढिया, सूखा ।
पकाइ—पकाने की क्रिया ।
पका जाना—परा का पकना, एक रोग ।
पकाना—(भोजन) पकाना, भूनना ।
पक्का—भोजन का एक प्रकार जिसम साग व पूडा सम्मिलित ह ।
पक्की—वरुठा ।
पक्की चासनी—सोन का विशेष प्रकार स शुद्धीकरण ।
पक्खन—जाला ।
पक्खा—सिंघाडे का फसल को बरबाद करने वाला कीडा ।
पक्वा—कनचटी ।
पखनरी—नुकीला यन्त्र जो ढरकी के खोखले हिस्से में लगा होता ह ।
पखविर—पखनरी ।
पखारना—धोना ।
पखिया—पक्खी, मुट्ठा ।
पखियारी—पखनरी ।
पखी—टॅट के भीतर का हिस्सा ।
पगडी—सिर का पहनावा ।
पगहा—पशुआ को बाँधने वाली रस्सी ।
पगार—ईख का व जन, वेतन ।
पगुडी—कनछी ।
पचकट्टा—छपटा, छिछला ।
पचफारिया—काटा ।
पचमासा—फाना ।
पचरी } —एक छोटी लकडी जो चूल
पचडी } कसने के काम आती ह, बाँस या लकडी की खाल ।
पचरुखी—ललका ।
पचलरी—एक हार ।
पच्चट—आँस क टाट के दाएँ बाएँ बाँधी जाने वाली ।
पच्चड } पूरे मगर को मजबूत रखने के
पच्चर } लिए बाहर स ठोका जाने
पच्ची } वाली एक खूटा पच्चर ।
पछइया—पछुआ पश्चिम का (बल) ।
पछुवो—कनछो नया अङ्कुर ।
पछरिया—स्टना के लिए साधन ।
पछलकडा—आँस का खूँटा जो आक क पीछे लगा रहता ह ।
पछाड—पिछाडी पीछे की ओर ।
पछाया—पछुआ के अनुकूल (बादल) ।
पछारना—फटकना, पेचारना ।
पछीत (घर)—खिडकी के पास का घर ।
पछुआ—एक आभूषण पश्चिम से आने वाली हवा, अगवार गाडा के पाछे लगाया जाने वाला थोर जिसस सामान पीछ न गिरे ।
पछेडना—पिछलडा ।
पछेला } बायें बाजू वाला गॅंटा ।
पछेली } चूडियों के पीछ पहनन का

एक आभूषण।
पछौटा—फरौटे का गोल सिरा।
पचपल्लव—पाकड़, पीपल गूलर बर गद और आम के पल्लव।
पचमी—पक्ष की पाँचवीं तिथि।
पञ्चरगी—पाँच रगो वाली।
पटकन—छरनी।
पटकना—पानी से हल्का सोचना।
पटका—पटला हेंगा।
पटकी—गदराया चना।
पटनहा—पटना वाला (आलू)।
पटपटाना—पटपट करना।
पटपर—ऊसरार।
पटहुरी—चना कपास व अण्डो में लगने वाला लाल कीड़ा।
पटरा—लकडी का तख्ता।
पटरा मारना—मटर आदि में फूल की ढेंढी लगना।
पटरी—पटरी चँगली।
पटवतन—पाटन।
पटवार—पतवार।
पटाई—क्रीट चालो।
पटा जाना—पटरा जाना।
पटाढी—पटाढी।
पटार—धान का सूखा पौधा या मुर पत सन का छिल्का।
पटिया—चौकार, बल अनाज उगल की बनो।
पटिया पारना—बाल सजाना काढना।
पटुआ—कुसुम्भ एक रशदार पौधा।
पटेला—ह्गा पटेरा।
पटेलो—पटरा बिछा हुइ एक बनी नाव।
पटला—पटेरा।
पटौरी—ढोंड खेतवाली जगह, पटवतन।
पट्टा } पट्टी } गाडी का वह हिस्सा जिसम सवारो वठता है।
पण्डवारी—मयमरारिका।
पडवहू—पडिया के बाद की अवस्था वाली (भस)।
पडवा—भस का नरबच्चा।
पडार—आक के नीचे की लकडी।
पडाका—मठरी-गेहूँ के आटे की बना हुई।
पडिया—दूध न पीनेवाला भस का मादा बच्चा।
पडिवा—प्रतिपदा।
पडोह—मोरी या नाली।
पतवट्टा—छरटा।
पतलगुज—फसल का मारा जाना।
पतवार—पटवार (सस्कृत कण)।
पतसोखा—पत्ता को सुखा देनेवाली पछुआ हवा।
पतहर—जुन्ना पताई।
पतहरना—पत्ते पडना।
पताई—पतहर।
पतीलो—डेगची।
पतुकी—मिट्टी का पात्र।
पतौरा—पतहर।
पत्तर—लोहे का पतला पत्र।
पत्ता—जुए का पाट।
पत्थर पडना—ओला पडना।
पथिया—कुँआ खोदने का एक औजार, ओडसा।
पथुली—खचारी।

पघरिया—रात भारी वार वाली ।

पनचाहा—जलहली ।

पनछोर—उबहन में जुड़ी हुई छोटी रस्सी जिसमें फंदा लगा रहता है ।

पनजीरी—भुनी धनिया एवं शक्कर के मिश्रण से बना पसार ।

पनडठिया—संगन्धिया (पहले पत्तवाली)

पनडब्बा—पान रखने का डब्बा ।

पनदहनी—बिन्हनी खेत में पानी डाल कर उसे तयार करना ।

पनदाहना—खेत में पानी डालकर तयार करना ।

पनपयो—बिना 'परायन' के बनी हुई रोटी ।

पनपियाव—प्रात कालीन कलेवा ।

पनफतो—५० पनपयी ।

पनसाही—चिनिया ईख ।

पनसुही—गोल पेंदे वाली हलकी नाव।

पनहा—प्रतिकर ।

पना—कच्चे आम अथवा इमली से बना व्यंजन ।

पनारा—पदारा ।

पनियाढार—नालों को बहने वाली स्थिति ।

पनियाना—पानी में डालना (नाव को पहली बार) ।

पनिहारा—जलहरी ।

पन्नि } तान रखने की एक लचीली
पन्निक } धनुही ।

पनिहारी—नाला में एक नारी एवं नुकीला लकड़ी दबिया ।

पनिहण्डा—जलहली ।

पनीर—छेना ।

पपड़ियाना—पपड़ा पड़ना (भूमि में) ।

पपरा—चौपट्टा ।

पम्मी—ओसौनी करते समय उड़ा हुआ हलका अनाज या भूसा ।

पया—चूरा ।

पर—पंख ।

परई—मिट्टी का पात्र ।

परकटठा—ठीहा ।

परकाल—काण बनाने या नापने का औजार ।

परछौनी—वर के परिछे जाने पर दिया गया उपहार ।

परता—एना ।

परती—ऐसी जमीन जिसमें फसल न उगाई जाय ।

परमल—भूजा ।

परवल—परवर, एक सब्जी ।

परवा—टाप ।

पराठा—कम घी में पकाई रोटी ।

परात—पीतल का थाल जैसा बना पात्र ।

परास—वाप ।

परिछन—वर का प्रथम स्वागत ।

परिछा जाना—वर सत्कार का एक रस्म ।

परिमलवाही—सुगंध ढोने वाली हवा ।

परिया—फार ।

परियाठा—ठीहा ।

परिल्ला—गन्ने को सड़ाने वाला रोग ।

परिहय—मूंठ ।

परुआ बल बन } आलसा या बिना काम
कर रहना } के रहना ।

परुवा—गिर्रा (बल) ।

परेठा—ठीहा ।

पाटी—एक आभूषण।
पाड़ा—पड़रू के बाद वाली अवस्था का भैंस का नर बच्चा।
पाडो—तैयार होने वाली अन्न।
पाढ़ा—बरठा।
पाणिग्रहण—विवाह।
पाता—डाँड की चपटी धार, पल्ला।
पानडलिया—पान रखने की छोटी डलिया।
पानफूल—बेल रचना, भेंट।
पानफेराई—वरपक्ष की ओर से कन्या की माँ के पास पान भेजने पर वापस आई द्रव्य की भेंट।
पान बतासा—हथेली पर का आभूषण।
पाना—ववला।
पानी चढ़ाना—पनाना।
पानी तोडना—पानी पर चलना या उसे पार करना।
पानी धरना—पानी चढ़ाना।
पानी रोकना—पानी को बहने न देना।
पायजेब—पैर का आभूषण।
पायल—पैर का आभूषण।
पाया—खम्भा।
पार—दूसरा किनारा।
पार उतराई—खवाई।
पाल—मूत (नाव का)
पालक—एक साग।
पाल डालना—कच्चा आम तोड कर पकाना।
पाला—ठारी।
पालेज—कोइडार।
पाली—जुआ, सीवान।
पास—सुपुरा।
पासा—लोहे के फार के भीतर वाला छेद।
पासन—खुरपे की धार।
पाहुर—पाथेय उपहार।
पाहा—लौंवर।
पिउनी—पूनी।
पिछलकड़ा—पछलकडा।
पिछवारा—पिछला हिस्सा।
पिछाई—माथे के पीछे का भाग।
पिछाड़ी—घोडे के पिछले पैरों को बाँधने वाली रस्सी।
पिटाई—पीटने की क्रिया।
पिटिया—पीटा कर दूध देने वाली (गाय)।
पिट्ठू—भौंरी।
पिटोई—टाडा।
पिठौरी—एक नमकीन व्यंजन।
पिडकिया—गोझा।
पिडई—छोटा पीन्हा।
पिढ़िया—फरुई, आर्टे के हूरे को मिलाने वाली लकडी।
पितरनेवतो—पितनिमंत्रण।
पितरसेलो—एक साग।
पिन्नी—चावल के चूरे व दूध से बना लड्डू।
पिन्हाना—थन में दूध उतरना।
पिपरा—चौपट्टा।
पियरा—पिरौंदा (बैल), पीला (सरसों) रोग।
पियराना—पीला पडना।
पियराह—कुछ कुछ पीला।
पियरी—पीली सूती साडी सियार जैसे रंग वाली (गाय)।

पिल्लू—कपास को हानि पहुचाने वाला एक सफेद कीडा।
पिसान—अन्न का चूर्ण।
पिहान, पिहानी—मिट्टी का ढक्कन।
पिहिका—सुलडा।
पीक—पान का थूका हुआ रस।
पी कहा—पपीहे की बोली।
पीटकर—मारकर।
पीटी—ओले से बरबाद हुयी फसल।
पीठा पीठ—पिष्टि, जल म पोसा अनाज।
पीठिका—, पीढा— } काठ का बठने का आसन फरई पिढई।
पीती—गोठो से बनाया गया मेला।
पीर—पूनो पोनी।
पीरोदा—पोले रंग वाला।
पुआ—गेहू के आटे तथा शक्कर के घोल से बना व्यजन।
पुआडी—नई किलसो वाली ईख की फसल अरगी।
पुआरी का जोत—कोडिया।
पुकार—आवाज।
पुछटगा—छोटी पँछवाला (बल)।
पुछेटा—पछौटा।
पुटपाक—बतन का मिट्टी से ढक कर तेज आँच में पकाना।
पुटुकना—अगुलियां की आवाज।
पुट्टी—पट्टी।
पुटठा—शरीर का एक अग जाँघ।
पुण्यतिथि—मृत्यु की तिथि।
पुतरा—बीज के जड पकडने को पुतरा कहते हैं।
पुत्ती—कमरी, गहूँ का बीज।
पुनरवसु, पुनवसु } एक नक्षत्र
पुपरा—तितिली।
पुर—चमड का थला सिंचाई का एक साधन।
पुरइन—कमल की पत्ति, कमल पत्र।
पुरवा—कुकडी।
पुरबिया—पूरब का (बल)।
पुरवा—सकोरा छोटा गाँव।
पुरवाई—पूव स चलने वाली (हवा)।
पुरवया—पुरवा हवा।
पुरी—कपास के फूल या कपास की बद मुहवाली कली।
पुरवा—पूर्वा नक्षत्र पुरवाई।
पुरवाई—पुरवा हवा।
पुलारना—पीला कर देना।
पुलाव—एक व्यञ्जन।
पुलिन—रेती।
पुलई, पुलुई } सिरा, इख का ऊपरी भाग।
पुष्पडल—पछौटा।
पुष्करावतक—बादल का एक नाम।
पुष्करी—पुष्कर का (बल)।
पुष्य—एक नक्षत्र।
पुस्तीमान—किवाडा का जोडने एव विभक्त करने वाली लकडी।
पुहना—पूहना।
पूती—कमरी।
पूनी—पोनी पिउनी।

पूनो—शुक्ल पक्ष की पंद्रहवीं तिथि ।
पूर्वा—एक नक्षत्र ।
पूला—सरपत की ढरी ।
पृषत—बूँद ।
पृषदश्व—जलकण लगी वाली हवा ।
पेकचा—अढ़ई ।
पेचकश—एक यंत्र ।
पेट—नदी की चौड़ाई ।
पेटाढी—धान का नष्ट कर देने वाला कीड़ा ।
पेटारी—छोटी पेटाढी ।
पेटी—मूल, कमर या आभूषण ।
पेठा—एक प्रकार का मुरब्बा ।
पेड़ा—खोए की एक प्रकार की मिठाई
पेवसी—फेनसा ।
पेरवा—आरसी ।
पेसना—लपेटना ।
पैहानी—झाँप ।
पैकर—हाथी के पैरों में डाली जाने वाली सीकड़ ।
पैका—पान का गाका सड़न का रोग ।
पैना—इण्डा सोटा तेज (धार) ।
पैनाना—धार तेज करना ।
पैर—खलिहान में अनाज अलग करने के लिए फैलाई फसल ।
पैरा बावग—बीज को हराई के पीछे-पीछे कतार में बोना ।
पैराहु—पैरन की स्थिति वाला बैल ।
पैरा कुआँ—जहाँ पुर चलते हैं ।
पैला—हल का मुँह मूड़ी की टोपी ।
पैसा—टका मेंहदी की बड़ी-बड़ी गोल बूँदें ।
पौआ—तम्बाकू का रोपा जानेवाला पौधा ।
पोई—पगोला, धार, एक साग ।
पोखरा—जलाशय ।
पोखरी—छोटा जलाशय ।
पोखी गड़ेली—लुच्छी ।
पोंगल—मकर संक्रांति के दिन मनाया जाने वाला एक पर्व ।
पाल्ढ़ई—पराठा ।
पोतना—पोतने या लीपने वाला कपड़ा ।
पोदीना—चटनी वाला एक पौधा ।
पोर—पैर की अँगुली में पहले जाने वाला आभूषण । पगोली ।
पोर छोड़ना—मिड़ाना ।
पोराना—गाठ लगाना ।
पोरी—पोर ।
पोरुआ—एक आभूषण ।
पोलिया—आटी पोल ।
पोसार, पौसार—परचे का हिस्सा ।
पौआ—२८ ढाली पान ।
पौतान—पाखार में जड़ी एक मेख जिसे अँगूठा के बीच चुनकर दबाए रखता है ।
पौती—पेटारी ।
पौनिया—थाँपी ।
पौना—एक प्रकार का भरना ।
पौ फटना—प्रातःकालीन प्रकाश दीख पड़ना ।
पौर द्वार—सदर दरवाजा ।
पौरा—द्वार के समीप का काठा, आगमन चरण ।

पोरी—पुआही।
प्याजी—प्याज का सा (रंग)
प्रकम्पित—कपा कर उच्चारण करना।
प्रग्रह—पगहा।
प्रच्छायित—छायायुक्त।
प्रतिपदा—पक्ष की पहली तिथि।
प्रतिहस्त—मूठ परिहथ।
प्रत्यालोक—सूर्य का प्रकाश जो पानी आदि से टकरा कर लौटता है।
प्रत्युपवेला—सूर्योदय का समय।
प्रदोषव्यापिनी प्रदोषातिथि—जो तिथि संध्या काल में रहती है।
प्रभंजन—आँधी।
प्रभामण्डल—प्रकाश का गोलाकार रूप।
प्रहर—याम, तीन घण्टे का समय।
प्राण—प्राणवायु।
पगाई—बलरंट।
पगोली—पाई दो गाँठों के बीच का हिस्सा।
पँचकठिया—तकुली का पूरा साँचा।
पचवेनिया—किवाड़ा की जोड़ा।
पँचोतरी—पाँच प्रतिशत वह दक्षिणा जो तिलक लाने वाला पुरोहित पाता है।
पँदारा—पनारा, छत के ऊपर से पानी नीचे बहाने की पनाला।
पँसडोर—खभा के ऊपर का वह भाग जिस पर ठाट रखा जाता है।
पाक—कीचड़ गीली मिट्टी।
पाकी—पम्मो नदी की नई मिट्टी।
पाचप्राण (वायु)—१ अपान २ उदान, ३ व्यान, ४ समान, ५ प्राण।
पाँजा—चार मुट्ठी फसल (पोरे) का गट्ठर।
पाँवपूजी—विवाह के समय वर के पाँव पूजन का नेग।
पाँवपूजी विवाह—विवाह का एक प्रथा जिसमें कन्या का उसका पिता वर के घर ले जाता है और वर का और पूजा कर कन्या उसे सौंप देता है।
पिड़िया—व्रतविशेष जो अगहन प्रति पद या द्वितीया का सम्पन्न होता है।
पिजन—पुनकी।
पुजवट—पुआल की ढेरी।
पूँछ—पशु शरीर का अंग।
पूजा—पटार।
पँच—एक यन्त्र।
पँडनी—फरुही।
पँडो—पशु को पुराना खेती या खुटिया
पँदो—बरतन का आधार भाग निचला भाग।
पजनी—पुरी के नीचे से उसे ढकने वाली शीशे को एक टढ़ी लकड़ी।
पड़ा—गेंड का टुकड़ा।
पपना—मटर की फली।
पाकनी—पाकन वाली गाय (ढीला गोबर करने वाली गाय)।
पौंडी—गन्ने की फसल का रोग जिसमें पीछे से नयी कछी निकलने लगती है।
पौंडा—गेंड।
पौडी—उटिबन, चिनिया ईख।

फगुनहट—फागुन की हवा।
फटकना—(सूप से) अनाज साफ करना।
फटहा—धान का एक रोग।
फटा—गाने का राग।
फटा स्वर—बय सन्धि की आवाज।
फटेरा—ठठेरा, मक्का, ज्वार-बाजरे का तना पटार।
फटठी—चपनी।
फटठा—फन्हा चिरे बांस का डण्डा।
फडडा—चादर।
फड़—गाड़ी के ढांचे की दो लम्बी भुजाएं।
फडवदा—घर का एक वस्त्र, कमरबन्द।
फड़हा—फावड़ा।
फतिंगा—तोते की जाति का कीड़ा जो गन्ने को खाता है।
फनकी—रोना।
फनगी—तोते की जाति का कीड़ा जो गेहूँ, चना जौ की जड़ को खाता है।
फनिगा—सुरका।
फन्दा—ठुल्ला।
फमरा—फावड़ा।
फरई—चरने का आगार एक चौड़ा हत्था पिढ़ई।
फर—पहुंच पानी में फिर घी में सिकी पूड़ा या कचौड़ा, गाड़ा के छज्जे का मुख्य हिस्सा।
फरकिल्ली—किरचा।
फरसा—टांगा एक तेज धार वाला हथियार।
फरहर—खिला खिला खिला (भात)।
फरही—चिउरा।
फराठी—फटठा।
फरिया—फार।
फरी—गाड़ी में ठुकी पट्टियां, धार कुर्दी।
फरुही—अधपकी इमली, लाई।
फरुहा—
फरुही— गन्ना आदि की खेती में क्यारी बनाने में प्रयुक्त किया जाने वाला काठ का औजार।
फरेरा—अफार सूखा।
फरेहा—फरौरा।
फलसा—फल्ली।
फली—छिम्मी।
फल्ली—रंदा की धार।
फसली—एक सम्वत का नाम।
फहोड़ा—फावड़ा।
फाटो—धान की बाली में लगने वाला एक रोग।
फाना—उपरपाटी।
फार—हल का एक अंग, पनिहारी के ऊपर लोहे की एक नुकीली पटिया, फावड़े का लोहे वाला हिस्सा।
फारम (गेहूँ)—एक अच्छी किस्म का गेहूँ।
फाहआ—कूँड़ में बाये जाने वाले आलू।
फाल—फार।
फाला—परिया।
फालूदा—एक व्यंजन।
फावड़ा—चौरा कुदाल।
फिरकी—चकई।
फिरोजी—रंग विशेष।
फिल्ली डुबान—फिल्ली तक पानी।
फुटहरा—
फुटहरी— कंडे की आग में पकाई रोटी।

फुनगी—पौधो का ऊपरी सिरा।
फुफकार—फू फू की आवाज।
फुफकार उठना—तेजी से हवा चलना शुरू होना।
फुरकनी—फुरकारन वाली (गाय)।
फुलक—फुलुई।
फुलका—पतली हलकी रोटी चपाती।
फुलछबरिया—स्त्रियो के पंजो के शृंगार के बीच वाले वृत्त के भीतर बनाया गया स्वस्तिक।
फुलधोवा—फसलो के फूल झरने का रोग।
फुलपतिया—उँगलियों पर की एक प्रकार की मेहदी रचाई।
फुलबसिया—मीठी हवा।
फुलभगा—झिल्ली।
फुलवा—देह पर सफेद फूलो वाला बैल।
फुलुकी—डलिया।
फुलौरी—बरी बड़ी।
फुसफुसाहट—कनफूसी की आवाज।
फुहार }
फुही } पीनी बूँदों की बारिश।
फूट—खूब पक कर फटी हुई ककडी।
फूट लाना—बरतनो (मिट्टी के) का टूटना।
फूटपूडी—(पं०) दलही।
फूटी (आवाज)—बुढ़ापे की आवाज।
फूल—मनका की नोक।
फूलडाली—आकार में अति छोटी डलिया।
फूला—धान का एक रोग।
फेंकल—फिकने वाला जाल।
फेटवाल—कपास की एक जाति।
फेनसही—फेनसा वाली (गाय)।
फेनसा—बियान के दस दिन बाद तक का गाय का दूध।
फेना—फनवाँ नामक एक घास।
फेनिल—फेनयुक्त।
फेनी—खजुला की तरह एक मिठाई चावल के आटे की एक मिठाई।
फेरा—भाँवर।
फेड—पेड़।
फोटा—गूला।
फोरन—फोडन (छौंक का मसाला)।
फौरा—फावड़ा।
फेदनी }
फेंसरगाली } रौना एक प्रकार का पतला गन्ना।
फाडा }
फाडी } बखार में रखे अनाज में लगने वाली एक किस्म की गिडार।
फांस—नारी (नाली)।
फूआ—मक्का के दाने पकने की दशा में टूटने वाले फूल।
फूंक—भाथी की नली।
फेंका—फन्दा (जाल)।
फेंकार—हुआँ हुआँ की आवाज (सियार आदि की)।
फेंटना—घाल बनाना।
फोफा—नदी के किनारे की जमीन।
बघाउरी—लोमडी।
बकला—एक पक्षी।
बधुला—धान में लगने वाला एक काला कीड़ा।

बकना (पड़रू)—भैंस का बड़ा नर बच्चा जो दूध नहीं पीता, बहुत दिन को ब्यायी (गाय भैंस)।
बकैया—बेकुला।
बकेला—अधिक दिन की बियाई हुई (गाय, भैंस), बकेना।
बक्की—बकुला।
बखार—अनाज रखने के लिए बाँस आदि से बनाई गई जगह।
बखारी—कुठला।
बखीर—चीनी या गुड़ के रस में पकाया चावल।
बगनग—सैंटा।
बगराना—बहकाना फैलाना।
बगरेंड—अंडी का पौधा।
बगल—बावल।
बगिया—सत्तू से बना पदार्थ, कोला।
बगुची—(१) डुँडरी (२) टेढ़ी।
बगूला } धूल उड़ाती हुई बहने वाली
बगोला } हवा।
बघरा } कटनी का साधन।
बघरिया }
बघार—छौंक।
बक—कुटिल, टेढ़ा।
बछुटही—दूध देने वाली गाय।
बछरू—ढाई बरस तक की अवस्था वाला गाय का बच्चा।
बजका—करा।
बजड़ा—बाजरा।
बजना—हवा चलना, नाद करना, ठनना।
बजरबोंग—एक भारी लाठी।
बजरा—सजी-बनी नाव।
बजरी—अत्यन्त छोटी मटर।
बज्जा—निंदित (बैल)।
बज्जी—कठार (गाय)।
बजर—गैरमजरुआ जमीन।
बझड़—बाल रहित ज्वार बाजरा के पौधे।
बटरी—एक प्रकार की पतेला।
बटवन—बटिवन।
बटाम—एक औजार (जिससे सीध आदि देखने का काम होता है)
बटारी } छेनी।
बटाली }
बटिवन—लोहे या मिट्टी की छोटी गोली।
बटुरी—छोटी काली मटर।
बटोरना—इकट्ठा करना।
बट्टा—१ ओढ़ा २ डलिया ३ पुरवा।
बड़गोहुँआ—गेहूँ की शकल से मिलती जुलती गहूँ के खेत में उगने वाली घास।
बड़बड़ाहट—अस्पष्ट आवाज, अधचेत नावस्था की आवाज।
बड़सिंगा—बड़े सींग वाला (बैल)।
बड़सिंगी—डूँगी (गाय)।
बड़ा—उड़द से बना भाज्य पदार्थ।
बड़ी—१ अदौरी २ तमाखू की एक किस्म।
बड़ेड़ा—लोहे का छड़ जिसके नीचे भाथी रहता है।
बड़ेर—बड़री।
बड़सा—कपास की एक जाति।
बढ़ोसा—बढ़ई।

बरेठा—१ बडेरा २ भीट।
बरनी—हरिस को सँभालने के लिए ठाटी जाने वाली कटी।
बरौंखी—नरगोरी।
बधवार—चरवाहा।
बर्फी—खोए की एक मिठाई।
बर्मा—लकड़ी छेदने का औजार।
बर्माभूसो—एक महीन धान।
बर्रा—ज्वार बाजरे की मारी गई बाल जिसमें दाने नहीं पड़ते।
बलखट—ऊपर से बाल काटने की क्रिया।
बलदौड़ा—बहूटी।
बलसार—बगारी।
बलसुनरी—बालू मिली हुई चिकनी मिट्टी।
बलिहन—बाली वाला फसल।
बलीवर्द—जो बल हिलावर हो जाने के बाद जोता नहीं जाता।
बलुआ } बालू का बालुकामय
बलुहा }
बल्ला—बड़ा बाँस।
बवण्डर—चौंडर।
बाष्कयणी—बासरी गाय बकेना, गाय।
बसिया—एक पहर पहले का भोजन।
बसिया खिलाई—कुवर कलेऊ कलऊ के समय वर को दिया जाने वाला उपहार।
बसुधारा—वसोधारा विवाह संसार का एक अनुष्ठान।
बसूला—बढ़ई का एक औजार।
बसाड़ो—बसौता।
बस्ती—आवास, स्थान।
बहरनी—एक महीन धान।
बहरा—सावन भादों में तेज चलने वाली हवा।
बहली—१ एक सवारी गाड़ी २ सवागा गाड़ी।
बहाव—धार या प्रवाह।
बहिया—बाढ़।
बहिला—गर्भ न धारण करने वाली
बहुरी—अजा।
बहुल दिन—बदि, कृष्णपक्ष का दिन।
बहुमवा—बैल के गुदा भाग पर गठू मरो सा उठना।
बहूँटा, बहूटी—एक आभूषण।
बाकरी—कपास की एक जाति।
बाखरी—बकेना (गाय)।
बागडोर—घोड़े को सँभालकर ले चलने वाली रस्सी।
बागवानी—फूल पत्ती की खेती।
बाधी—दावनी।
बाछा—हल चलाने लायक नया बैल।
बाज—बाजूबन्द।
बाजरा—बजड़ा।
बाजरिया—बाजरे की आकृति का घुँघरू।
बाजू—थान।
बाजूबन्द—एक आभूषण।
बाटी—फुटहरा लिट्टी।
बाता—बेड़ी पटरिया।
बाती—१ बाँस की पतली कमाची २ जुनरी।
बाती बढ़ाना—बुझाना।
बाती मिलौनी—दिया बाती मिलाने की क्रिया।

बाध बाधी—खाट बुनने की रस्सी।
बान—धान का रोपा जाने वाला पौधा।
बाना—ताने के ऊपर बुना जाने वाला सूत।
बाबरा, बाबरी—मालपूए जैसी फूली फूली मिठाई।
बावल—हार।
बायन—मिठाई की भेंट।
बारा—गावड़ा।
बारादरी—बारह दरवाजे वाला।
बारी—समय अवसर एक जाति एक आभूषण पालेज।
बारौठी } द्वारचार।
बरौनियाँ }
बरौठ—चौखट के ऊपर वाली रखी जगह।
बालवाली—खलिहान।
बाला—बालू वाली के समान आभूषण।
बालिका } बारी कान का एक आभूषण।
बाली }
बालू—एक कीड़ा जो दाल वाली फसलों की पत्तियों को सिकोड़ता है।
बालूसाही—एक मिठाई।
बावग } बोने की क्रिया, बुआई।
बावड़ी—वापी।
बावली—पाछ का टर।
बासमती—एक महान धान।
बासा—वजला।
बासिला—वसूला।
बासूरा—रबड़ी।
बोसरूल—एक महान धान।
बाह—चाह।
बिखेरना—फैलाना।
बिचकनी—कान के बीच का भाग।
बिचकिल्ला—निचला गड्ढा।
बिचवई—मध्यस्थ।
बिच्ची—घुनी।
बिचलना—पथ होना हाथ से निकलना।
बिछिया } पैर की उंगली आभूषण।
बिछुआ }
बिछौतिया—पाहत को खाने वाली घास।
बिजली—एक आभूषण।
बिजार—साँड।
बिजार बटरा—जवान पाड़ा।
बिजार मानना—गर्भ धारण करना।
बिझरा—गहरा गड्ढा।
बिटन—पटौरी।
बिटौरा—पाटोला।
बिठुई—बटने का आसन (धान की पुआल से बना)।
बिदाहना—पनदाहना।
बिनौला—कपास का बीज।
बिदरी—एक श्रृंगार जो पैरों पर स्त्रियाँ करती हैं।
बिमौठ—वल्मीक।
बियाड़—वह खेत जिसमें रोपने के बीज या पौधा डाला जाता है।
बियारी—शाम का भोजन।
बिर—पसनरा।
बिरनियाई—पाले से मारी (फसल)।
बिरसा—गौरा आदि वर्ग में होने वाला राग।
बिर्रा—घना वन।

बिलइया—जिसमें किल्ली लगाई जाती है।

बिलइया लोटन—तेज (धूप)।

बिल्हरा, बिलहरो—पनडब्बा।

बिलना—बैल के गले में फोड़ा।

बिलाना—मढ़ाई।

बिसरी, बिसार, बिसारो—मछली पकड़ने का छोटा जाल।

बिसुकी—दूध देना बन्द करनेवाली गाय।

बिसना—मछली मांस की रसोई के काम आने वाला बर्तन।

बीजू—बीज से तयार (आम)।

बीझी—गिडारा से नष्ट की गयी फसल।

बीट—ऊँची नाव पर की डांड खेने वाले जगह।

बीड़ा—कत्था चूना सुपारी के साथ तह लगाया हुआ पान।

बीड़ी—छुच्छी।

बीया—१ बीज २ दाना।

बीयामिलौनी—बीजरोपण।

बीयामार—पइया।

बीर—, बीदी—दो मोतिया वाली बाली।

बीरी—मुट्ठा के रूप में बनी मिठाई।

बुक्नी—लौकी आदि बेलों में लगने वाला रोग।

बुक्सायंध—धूप न निकलने से कीचड़ से निकलने वाली एक प्रकार की गंध।

बुसार उतरना—कुठला से बीज निकालना।

बुचा, बुच्चा—सिरकटा।

बुढ़िया—बकुला।

बुढ़िया आंधी—तूफान।

बुदराना—उबालना।

बुनकर—कपड़ा बुनने वाला।

बुनिया—बूंदी।

बुन्दा—एक आभूषण।

बुन्दीदार—बिन्दु युक्त।

बुरुमलाव—एक औजार जिससे लकड़ी में वर्गाकार या चौकोर छेद बनाया जाता है।

बुलाक—नाक का एक आभूषण।

बुआई—बावग।

बुहारू—झाड़ू।

बूट—चना।

बेआलू—शाम का भोजन।

बेगमाती—देसी बँगला पान।

बेडई—कचौड़ी।

बेड़ा—१ जहाज २ बाहित।

बेढ़ा—१ एक आभूषण २ घेरा।

बेदाम—चना।

बेनिया—दलही।

बेनी—आड़ी या बेंड़ी पट्टियां।

बेनी गुहना—पान की सी आकृति का केश गुहना।

बेनी-बंधाव—चोटी बंधाव।

बेरहतिया—शाम का भोजन।

बेल—१ शाखाच्चार २ वल्लरी बेल का मुरब्बा।

बेलचड़ी—कांटा का एक प्रकार।

बेलन—जांठि, आटा बेलन का यन्त्र।

बेलना—नरा, बेलन से रोटी बनाना।

बेल रचना—पान फूल बनाना।

बेल लिखना—वल्लरी या पटिया लिखना।
बेलहरी—एक प्रकार का पान।
बेसन—चने या उडद का चूर्ण।
बेसर—नथ का एक प्रकार।
बेसुरी—सुर में वैषम्य के कारण उत्पन्न आवाज।
बेहन—धान या पौधा जिसे अन्यत्र रोपना है २ गेंड।
बसाखी—बसाख में होने वाली सहारे के लिए छडी।
बहरा—पछुआ के कारण लगने वाला रोग।
बगन—भाँटा।
बठउआ—पानी के साथ ही चावल रख कर पकाना।
बठक—बठन का स्थान (घरों में यह बरामदे के पीछे होती है)
बठी—वह फसल जिसकी बाढ मारी जाती है।
बतरनी—एक मोटा धान।
बना—टीका।
बरिया—भूरे लाल रंग वाला (बल)।
बलट—तगधरी।
बली—निमारा।
बस—बाँस।
बोआ—बोया हुआ।
बोइया—ताड खजूर के पत्तों की डलिया।
बोउनी—बावग।
बोकला—(दे०) खोइया छिलका।
बागिया—खाँची।
बाझा—चार पाँजों का गट्ठर।
बोडा—एक प्रकार की तरकारी।
ेदर—सींचन के लिए पानी उठाना।
बोदा—खराब और असगुनी (बल)।
बोरना—डुबाना, जलमग्न करना।
बोरसी—अगीठी।
बोल्ला—बोरिया।
बौछार—भारी भारी बूँदों का पडना।
बौहडी—पट्टी।
बकुआ—पहसुली (घास काटने का एक औज़ार)।
बँगठी—रूई का बिनौला।
बँगडा—एक हल्की नाव।
बँगला—एक प्रकार का पान।
बँगली—चूडियों के बीच में पहनी जाती है।
बँगुरी—खँडसी बँगली।
बँगौर— } बिनौला।
बँगौरी— }
बँधेला—बाएँ बाजू वाला खूँटा।
बझियाना या बँझिया जाना—बाधी लगना।
बँटना—रस्सी बनाना।
बँटा—ऐंठा (सूत)।
बँडछा—कपास की एक जाति।
बडेर— } लरही के ऊपर की लकडी।
बँडेरी— }
बँधना—पात्र विशेष।
बधा—१ ऐंठा २ (पशुओं का) पाखाना-पेशाब बन्द होना।
बधेरी—बैलों बधेला।
बवारी—बधेला।
बसजोती—पटेला खींचन में रस्सी के स्थान पर उपयोग में लाने वाली बाँस की फट्ठी।
बँसबल्ली—बसौरी (बाँस का बल्ला)।
बसौता—एक जंगली बाँस।

बँहिंगा—भार ढोने के लिए प्रयुक्त बाँस या पट्टा।
बाँक—१ एक आभूषण २ छोटी बाड़ी पटरियाँ ३ बसनर का एक औजार ४ दाहा।
बाद रवानी—बड़ा खोखला बनाने का औजार।
बाल्टा—नष्ट हुई फसल।
बाका—धान का एक दाढा।
बारा—१ मिर्च का रोग जिसमें पत्तियाँ ऐंठ जाती हैं २ कुटिल।
बागर—नदी के प्रभाव क्षेत्र से बाहर की भूमि।
बाग—१ टेंट के भीतर की कच्चा कपास २ वन ३ गुला।
बाझी—१ पग्या २ चमड़ा सिझाने वाला वनस्पति (वल्ला)।
बाड़ा—लँडूरा पुछकटा (बैल)।
बादिया—पचक्खा।
बासा—१ एक मोटा पोला बाँस २ कड़ही ३ नाक का ऊपरी हिस्सा।
बासिया—उभरे बाँसा वाला (बैल)।
बासड़ी—कुबड़ा।
बीड़—तीन बैल वाली गाड़ी का बिचला बैल।
बुंदका—कौआसाँतिया (स्वस्तिक)।
बूँद—आभूषण का हिस्सा।
बूँदा बादी—विरल बूँदों वाली वर्षा।
बूँदी—बसन की बुनिया।
बेंती—अरहर या उसी से मिलते जुलते पौधे को एंठ कर बनायी हुई रस्सा, जो बोझ बाँधने के काम आती है।
बेंट—मूठ।
बेंव—एक लकड़ी जिससे ताने का सूत खड़ा किया जाता है।
बगनी—मोटा के रङ्ग की।
बरही—दरही।
बाग—एक भारी लाठी।
बाँस—खूँटी।
बोंडर—बवण्डर।
बोरिया—छीरफूल।
ब्यालू—शाम का भोजन।
ब्यात मारना—लात मारना।
ब्रह्मवेला—सूर्योदय-पूर्व का समय।
ब्रह्मगाठ—लम्बी एवं सुन्दर गाँठ।
भँगरा } —एक प्रकार की घास।
भँगरया }
भँजनी—एक प्रकार का अतरावन।
भडारघर—कोठाघर।
भँवर—चक्रावत।
भँवरा—भौंरा।
भखियाई—झबदा।
भटा—बैगन।
भडकनी—चमकनी (गाय)।
भड़भड़ाहट—किवाड़ों की आवाज।
भड़भाड़—पास्त को खाने वाला एक घास।
भक्ति-रचना—सात रंगों से हाथी पर एक प्रकार की रचना।
भदई—भादों में पककर तैयार होने वाली तथा कटने वाली (धान की) फसल, भदहिनी।
भदकला—कुछ गोरा, कुछ काला (बादल)
भदभदाना } एक ही साथ पकने
भदभदाना उठना } की स्थिति में होना।

भदरा—कचरा।
भदरा जाना—अधिक मात्रा में तयार होना।
भदवारा—भादों में जब अधिक दिन तक बादल घिरा रहे।
भनभन—मच्छरों की आवाज।
भनसा—रसोई घर।
भभककर—ज्योतिष्मान् होकर चमक कर।
भभरी—(द० फुग्हरा)।
भभूका—भूतरा गरम।
भभरा—किरौना।
भभराना—जलते बालुक भौड में भूनना।
भरका—धान में लगने वाला एक कीड़ा
भरका—ठूह।
भरकी—धान के पौधे में लगने वाला एक रोग।
भरजाना—पूरा हो जाना।
भरता—चोखा।
भर पोरसा—दुबान।
भरानी—फरी।
भरुआ पूड़ी—दाल की पूड़ी।
भरुका—दाहनी मिट्टी का छोटा पात्र।
भर्राई—रोने की सी (आवाज)।
भसड—कमल मूल।
भहराकर—ढहकर गिरकर।
भहराना—यकायक गिरना।
भांटा—बगन।
भाय भांय—भाथी की आवाज सुनसान
भांवर—सप्तपदी।
भागड —जिसमें पानी की नाली बह जाय। —बहुत नीची जमीन।
भागमती—भावी वधू को पहनायी गयी चूड़ी।
भागवती—दुधारी (गाय)।
भाट—मान (रहने का बिल)।
भाटाफूल—एक महीन धान।
भात भोग—विवाह आदि का एक भोज जिसमें भात आदि कच्ची रसोईया बनती है।
भाथी—धौंकनी।
भानस—रसोई।
भिंडी—रामतरोई।
भिगोना—आर्द्र करना।
भितभरा—अमेर।
भित्ति चित्रांकन—दिवाल पर चित्र बनाने की क्रिया।
भिनगी—मोठ।
भिनसार—आधीरात के बाद और अरुणोदय के पूर्व का समय।
भीगने लगना—रात का अधिक अंधेरी होना।
भीटा—डीह।
भीठा—पान की लतर जिन ऊँची जगहों पर उगाई जाती है।
भीत—दीवाल।
भीमसेनी (एकादशी)—जेठ सुदी की एकादशी।
भुइली—भूआ।
भुंडिया—एक प्रकार का बढ़िया गेहूं।
भुजायठ—एक आभूषण।
भुजिया—उसिना।
भुजिया—साग बनाने का एक प्रकार।
भुट्टा-बधुआ—(विरहित) ज्वार का दाना।
भुडडी—मोराह।

भुनभुनाना—मुँह के भीतर धीमी आवाज में असन्तोष के कारण अपना आक्रोश प्रकट करना।
भुरभुरी—महीन।
भुरली—मोटा रसभरी इम।
भुरहरी—सूखी मिट्टी।
भुरिला } भूआ।
भुरिली }
भुलभुल—पानी निकलने वाले छेद की मुहानी पर की ध्वनि।
भुल्ली—भुड्डा।
भुस—भूसा।
भुसौला—घर के पास भूसा रखने की जगह।
भूआ—अडो और बरहट में लगने वाले एक रोएँदार कीड़ो जो आदमी की देह से छू जावे तो भयंकर खुजली पैदा करता है।
भूआ—मक्का का रेशा।
भूँक—कुत्ते की आवाज।
भूजा—भुने दाने (चना आदि अनाज के)।
भूतरा—भभूवा।
भूनना—पकाना।
भूभर—गर्म राख।
भूर—पान का छरका छेद।
भू रचना—पृथ्वी की बनावट।
भूसा—सूखा चारा।
भूसी—अनाज का छिलका।
भेंटवासी—बठी।
भेंडवा—मेंड़ा सूखा पड़ने पर ज्वार बाजरा में लगने वाला एक कीड़ा।
भेडकावर—एक मोटा धान।
भेडिया—ऊँची लहर। जहाँ जल का उठाव।
भेडिया बन जाना—ऊपर-नीचे के क्रम से एक के बाद दूसरी लहर का आना।
भेढिहार—ऊन का कंबल बुनने वाला गड़रिया।
भसा—कटरा।
भोटिया—बटवन।
भोगिला—कपास की एक जाति।
भोचरी—कपास की एक जाति।
भोग—त्योहार या उत्सव की रसोई।
भोज भात—त्योहार या उत्सव की रसोई।
भोडरा—भुट्टा-बबूला।
भोर—पहया।
भोर—प्रातःकाल गाया जाने वाला (गीत)।
भोरहरिया—खेत में मद्धम धीमा हवा।
भोराह—? भुट्टा र छूँछा गड़ेली।
भौंरा—पम्पी।
भौंतो—चलौना।
भौंरा—स्त्रियों के पंजों पर लाल रंग से बनायी जाने वाली नक्काशी या शृंगार।
भौंरा चौंटियाना—छोटी बेना बनाना।
भौंरी—गाय का एक रोग, जल का भँवर।
भौकी—सुराहीदार गर्दन वाला लम्बा टोकरा।
भौरी—तपा राख।
भौरी लगाना—उपलों की आग के भीतर पकाना।

मगर—जमोट।
मगरा—ईख की जड को कुतरने वाला एक कीडा।
मॅझवार—महादेवी।
मझा—डडा।
मडप—मॉडो (विवाह)।
मॅडवाना—मॉडा हिलाने का उपहार, जो समधी (वर के पिता) को मिलता है।
मकई—मक्का।
मकडा—एक घास जो परती में उप जती है।
मकर—वह सक्रान्ति काल जब से उत्तरायण शुरू होता है।
मकराकृति—मगर के आकार का।
मकरी—निचले बलन को घुमाने वाली लकडी जिसपर मदरा घूमता है।
मकुदीदाना—पुआ सदृश व्यजन।
मकुनी—चोकर मिश्रित आटे की रोटी।
मकोय—सीग का खोखला होकर गिरना (बलो का रोग)।
मक्का—मकई।
मक्खनबडा—छेन की मिठाई।
मखौना—पच्चट।
मगद—घी म मदा या बेसन भूनकर बूरा मिला देते हैं।
मगही—एक प्रकार का पान।
मघा—एक नक्षत्र।
मघाड—माघ की जुताई।
मचना—गर्भधारण करने की इच्छा उठना (पडिया की इच्छा)।
मचमच—जूते की आवाज।
मचान—चौंट।
मच्छर—पट्ट (बल)।
मछलीनुमा—एक प्रकार की दुग्गानी।
मछियाया—मक्खिया स आक्रान्त (घाव)।
मछ्ता—पास्ते के खेत म उगने वाली एक घास।
मजना—कूँचो।
मजरूआ—जोत की जमीन।
मजीठी—मजीठसा गहरा लाल रग।
मझधार—धारा का ठीक मध्य भाग।
मझार—मॉझा।
मझोतर—चमडे की गेरी।
मटका—, मटकी— } मिट्टी का बर्तन।
मटकोडरा—, मटमॅगरा—, मटमगरा— } मिट्टी या धरती स मगल की याचना।
मटमटा—एक धूसर रग।
मटमला—मटदला।
मटियाला—एक प्रकार का धूसर रग।
मटरमाला—माला।
मटरुआ—मटर के आकार का घुँघरू।
मटाह—ऊँचा नीचा।
मटियार—एक प्रकार की मिट्टी।
मटोर—लोट एक छोटी डलिया।
मटठर—सुस्त।
मटठा—छाछ।
मठजाउर—मठा क साथ पकाया चावल।
मठरी—गेहूँ के आटे की बनी मिठाई।
मठा—मट्ठा।
मडवा—भदई का एक मोटा अनाज।
मडढ—भड़िहार।

मउवा—मौंडा ।
मउया—बढ़ई ।
मतार—मारा ।
मयढ़क्नी—
मयढ़क्नी— } माथ ढँकनेवाली साडी, कन्या के लिए एक जरी की साडी वर पक्ष द्वारा दी जाती है ।
मयार—नदी का वह भाग, जहाँ से धारा टूट जाती है, अन्यत्र मोड लेती है, वह जगह जहाँ से पानी लिया जाता है ।
मदरा—गोलाकार काठ, जिसमें चरखा बैठाया जाता है ।
मद्धिम—मन्द, धीरे धीरे जलने वाली ।
मधकरी—भभरी, लिट्टी, बाटी, भिण्गा ।
मध्यमा—वाक की एक अवस्था ।
मनगो—एक प्रकार की ईख ।
मनसरी—एक मोटा धान ।
मनवा—कपास का एक जाति ।
मनौटा—वगैरा ।
मन्वन्तर—७१ चौकडी (युग चतुष्टयी) का काल ।
मरकना—सूखना मारने वाला मरखना ।
मरकही—मरखनी (गाय) ।
मरखना—सींग मारने वाला (बैल) ।
मरखनी—सींग मारने वाली (गाय) ।
मरचाई—छोटी मिर्च ।
मरना या मर जाना—नष्ट होना ।
मरसा—मरुसा ।
मरहिला—चतरा ।
मराछी—बछडा मरने पर गाय मराछी कहलाती है ।
मरायल—सूखे से मारी फसल ।
मरिया—छोटी नावों के बीच में जडा गया पतला और मजबूत तख्ता ।
मरिया—टूपोडो ।
मरी—मुआर ।
मरुसा—मरसा एक साग ।
मरोड—आँव (चला का रोग) ।
मर्चा—एक महीन धान ।
ममर—पत्तियों की आवाज ।
मलग—नाव का अगला हिस्सा ।
मलकाठी—मुडिया ।
मलखम—धरन के ऊपर मलखम नाम की छोटी लकडी जडी जाती है ।
मलदहिया—लाल आलू ।
मलना—रगडना ।
मलमास—अधिक मास ।
मलयागिरी—चन्दनसा (रंग)
मलवा—मलिया हल का मुँह ।
मलाई—दूध की साडी बालाई ।
मलाई की पूडी—(एक मिठाई) सूखी मलाई की पूडी ।
मलिया—मस्तूल का पेंदी जिसमें फिट रहती है ।
मलेहरा—एक प्रकार का पान ।
मलो—छान ।
मसरी—नुकीले ठाट वाली (भैंस) ।
मसो का कोहबर—गोबर के लेप के ऊपर चौरठ फैलाया जाता है और इस जमीन पर उडद भून कर बनाये गये आटा से रेखायें खींच कर उनमें यथोचित रंग भरे जाते हैं ।
मसीन
मसीना } —दालवाली फसल ।

मसुरिया जनेर—छोटी जाह्नरी।
मसूर—एक दाल वाला अनाज।
महरी—ग्वालिन चिड़िया।
महाई—बिलोना।
महाजाल—मछली पकड़ने का सबसे बड़ा जाल।
महाजागिन—एक महीन धान।
महादेवी—मँझवार।
महाप्राण—ध्वनि का एक प्रकार।
महावट—माघ की वर्षा।
महावर—पैरों में लगाया जाने वाला लाल रंग का तरल द्रव (स्त्रियों के लिए)।
महाप्रूनी—कामधेनु।
महिया—कड़ाह में गन्ने का रस पकाते समय मल की भाग।
महियाउर—मठजाउर।
मही—मठा।
महुअर—गहर लाल (कालापन लिये वाला) रंग वाला (बल)।
महुई—एक प्रकार का पान।
महोक्ष—विजार।
माग—करवार।
माग—नाव का अगला हिस्सा।
मागर—वार के ऊपर वाला हिस्सा।
मांगी—माथा।
माजन—कूचो।
माजर—बौर।
माजा—कूँचो।
माझा—तक्ली और फरई को जोड़ने वाली लकड़ी।
—मझार।
—तिरकानी वाठी।
—सिपावा का माथा।
—चपोट।
माड़—उबाले चावल का पानी।
माढ़ना—गूँधना।
माड़ पसाना—भात से पानी निकालना।
माड़ो—विवाह मंडप, बरेज की छत।
माऊ—माहो एक कीड़ा।
माखनी—माखन सा (रंग)।
माघी—माघ में होने वाली सब्जी, मगही, माहोटो भंस (असगुनी भंस)।
माट—मिट्टी का बर्तन।
माटा—लाल चींटा।
माठ—कठार।
माठना—चौरस करना चौरस करने का औजार।
मातरिश्वा—मानसूनी हवा।
माता—चरन।
माथ ढाकना—वर के पिता का वधू का माथ साड़ी या चद्दर से ढाँकना।
माथा—मस्तक।
मान—रहट का बिल।
मारतौल—हथौड़ी।
मारा जाना—पाता नहीं पड़ना।
मारिखर—चमड़े की डोरी।
माल—खेती के लिए उपयोगी बल, तकुआ के ऊपर की काली डोरी।
मालदेही—एक महीन धान।
मालपुआ—पुआ-सत्य व्यंजन।
मालवी—मालव प्रदेश का (बल)।

मुनगा—सहिजन का फल।
मुरका—जाला झगरा।
मुरज—मृदंग।
मुरमुरी—मुडी लाई।
मुराया—रखना।
मुरिया—मुखडा।
मुरुम—लाल मिट्टी (पहाडी)।
मुर्ही—सूत की गाठ।
मुसरधार—मूसलाधार।
मुसरा—गहुआ।
मुस्ता—मोथा।
मुहारी—मोथी की नली का वह सिरा जो आग को छूता है।
मूंग—एक दाल वाला फसल।
मूंगिया—मूंग का सा गहरा हरा (रंग)।
मूंज—एक खर जो रस्सी बनाने के काम आता है।
मूंज कूटना—टागो में से सूत निकलना (बलो का रोग)।
मूंडसेंटना—मरखना (बल)।
मूंड—कठी।
मूंस—चूआ।
मूठ—बेंट परिहथ हल का एक अंग।
मूठ लेना—बीज लेन के मुहूर्त को मूठ लेना कहते हैं।
मूठा—हूरा।
मूडा—मुहारी।
मूडी—मकरा के बाज की नाभि।
मूढ़ा—छान्।
मुसलाधार वर्षा—धार वृष्टि।
मृग—मृगशिरा (नक्षत्र)।
मृग मरीचिका—तेज धूप की रेत के ऊपर चमकाहट।
मृण्मूर्ति—माटी की मूरत।
मृदंग—मुरज।
मृद्भाड—मिट्टी का बरतन।
मेचक—गहरा नीला।
मेड—मेंडर।
मेडतोड वर्षा—जब पानी मेंड तोडकर बह निकले।
मेडुकी—बहुगवा राग।
मेहदी—एक पौधा जिसकी पत्तियों को पीस कर औरतें हाथ पर में लगाती हैं और उससे मटमले लाल रंग के अलंकरण करती हैं।
मेहदी रचना—मेंहदी से अलंकृत रचना।
मेघनाद—एक मोटा धान।
मेझा—मझार।
मेढुम—आरन।
मेढन—मझोतर।
मेढ़ासिंगी—मेढ़ा की तरह मुड सींगो वाला बल।
मेथी—एक साग, एक मसाला।
मेल्हनी—बडी नाव जिसका सिरा चौडा और चपटा होता है।
मेवाती—एक प्रकार का बल।
मेवाबाटी—बेसन की एक मिठाई।
मेह—घर के बीच में खंभे जसा होता है।
मेहराब—तोरण।
मेहराबी (वाला पुल)—बड खम्भा (वाला पुल)।
मेहासिन—झिनमिन वर्षा।
मेहिया—मेढ़ के पास वाला बल।
मैगिरी—एक अधचन्द्राकार रेता जो

चिकनपन के लिए काम में लायी जाती है।

मैदा—महीन चाला हुआ आटा।

मैना—कानो के नीचे लटके सीगो वाला बल।

मैनी—स्वयो (गाय)।

मैरन—मलातर।

मोआ लगाना—पानी म भिगोना।

मोहडा—मुहयापडा।

मोरडो—मुहारो।

मोचट्टी—लखका।

मोजम्मा—दाँत।

मोजर / मोजर / मोजरी —नई कलमा की रक्षा के हम बाँधते हैं मजरी।

मोहम—आरन्।

मोटी—दूर दूर की (जुताई)।

मोटी आवाज—गले में निकली हुई आवाज।

मोड—घूमर।

माठ—एक दाल वाली फसल।

मोढ़ा—माहरा।

मोतिया—मोता का सा (रंग)

मोथा—सबसे अधिक जड पकडने वाली घास।

मोमिन—जोल्हा।

मोरपजा—पतलो रस्सी को हाथ की पाँचा उँगलियो में डालकर लगायी जाने वाली फन्देदार गाँठ।

मोरमुरला लिखना—मार आदि का चित्र अकित करना।

मोरहन—तमाखू की एक जाति।

मोरा—गुरगाँठ म एक ओर मोड देने पर मारा कहा जाता है, पलहर।

मोरी—घर क आगन से पानी के निकास का रास्ता।

मोलसिरी हार—एक प्रकार का हार।

मोहडा—मुहारी।

मोहन-पकौडी— चावल क आटे की बनी।

मोहनभोग—खीर माहन।

मोहनमाला—एक प्रकार की माला।

मोहब्बत—कडिया का आगे का मुँह बाधने वाली लकडी।

मोहरा—गाडीवान की बैठकी।

मोहरी—नाह क केन्द्र म लाहे का गोल बेलनाकार छेद जाब।

मौनी—डलिया।

मौर—वर के सिर का अलकार।

मौरना—चूडियाँ पहनाते समय चूडी का तडकना।

मौरा—ऊपर जाकर मिले सीगो वाला (बल)।

मौरी—पीछे ओर दरातीनुमा सीग वाले मवेशी, स्त्रियो के सिर पर का एक शृगार प्रसाधन।

मौहासो—महावर।

म्हौडा—मुहारी।

रगाई—मिट्टी के पात्रा पर विभिन्न रग चढाना।

रची—सरसो की एक किस्म।

रदा—समतल करने वाला औजार।

रँधन—राधी जाने वाली वस्तु।

रदा—लम्बे छद और बडे सुराख के लिए एक औजार।

क—गधे की आवाज।
ड़, रेंड़ों—अदा का पौधा।
ड़ा जाना—ललहा जाना जो गेहूँ में वाला लगना।
ख़ारी—रेखा।
खाहट—अंत में स्वर चढाना।
रेंगनी—कठरेंगनी, एक कीडा।
तना—रेती म काटना।
रेती—रेतने के लिए औजार पुलिन।
रेताली—रेतवाला (मिट्टी) सिल्टी।
रेवड़ा—एक प्रकार की ईख।
रेलापेल—बड़े जोरों की वर्षा।
रेहयुक्त, रेहवार, रेहार—रहवाली मिट्टी।
रेन्ना—लुज्जा सूत।
रची—सरसों की एक किस्म।
रटी—वरखी।
रोजगारी (नाव)—माल ढाने वाली नाव।
रादा—बौंद।
रोपनी—धान रोपन की क्रिया लगभग डेढ़ बित्ते के बियें की खेत म गडाई।
रापा—कल्म गालि।
रोरना—कराना।
रोरी—रोली।
रोली—गरुअट।
रोहार—जीभ पर काँट हो जाना।
रोहितवर्णा—लाल रंग की गाय।
रोहिन—रोहिणी (नक्षत्र)।
रोहिनिया—जेठ में राहिन नक्षत्र चन्ते चढ़ते पक्ने या तैयार होन वाले आम।
रोशनीमार—सचलाइट।
रौंधा—म ने रा एक राग।
रौंदा—एक प्रकार की ईख।
रौना—अरवन दाना।
रामरजी—रामरज क रग की।
लकठा—सब।
लकुची—लग्गी।
लगुन—सगुन लग्न विवाह के पूर्व की एक रस्म।
लगुसी—लग्गी।
लखौरी—लाख की मरया वाला (बाग दा सडक के किनार आम के पेडो की पंक्ति)।
लगाम—घोडे के मुँह म से लेकर गर्दन तक बागडार क अलावा लगाकर बाँधन वाला रस्सा।
लगावरी—हेंगा।
लगेन—दूर दन रहन वाली (गाय)।
लगौद—लौद।
लचनी—नचना।
लचाना—नीचे दबा देना।
लचुई—पूड़ी।
लचन लपना या लचना—चुरना।
लछमिनिया—घुवरला जाति का एक विलक्षण कीला जिसके अनाज की ढरी म रहन से गहस्थ समझता है कि अनाज का भंडार सदा भरा रहेगा।
लटकी—लाका, तुरई आदि बेलो में लगन वाला रोग।
लटोर

लड़ना—पानी की धारा का टकराना।
लड़ा जाना—गर्भस्राव होना।
लड़ाधुर—तुअनी (गाय)।
लड्डुवा—लड्डू।
लँडूरा—बिना पूछ वाला (बैल)।
लढ़िया—
लढ़ी— } बैलगाड़ी।
लतखना—लात फेंकने वाला (बैल)।
लतखनी—लतहो (गाय)।
लतमरुआ—छेहूरी।
लतरी—खेसारी, दाल वाला एक अनाज।
लतहा—लतखना (बैल)।
लतही—लात चलाने वाली (गाय)।
लपट पड़ना—तेज गर्मी पड़ना, लू चलना।
लपसी—पिसे आटे को भून कर तयार किया हुआ घोल।
लपेटन—बुना कपड़ा लपेटने के लिए बना लकड़ी का एक बेलन।
लपेटा भरना—लहरों का किनारे तक जाकर लौटना तथा ऊपर नीचे होना।
लपेटआ—लपेटे रूप में परसा (भोजन)।
लबदा—लाठी।
लबारा—पड़वा।
लबेरी—जलहली।
लमकना—लम्बे कानों वाला (बैल)।
लमटंगा—लम्बी टाँग वाला (बैल)।
लमता—सात सांवियों से होकर नदी की छोटी बड़ी सभी धाराओं को पार करने वाला घाट।
लमेरा—अपने से उपजा (अनाज)।
लर—जिस खेत में पानी बिना चढ़ाय चढ़ता रहे।
लरी—छुच्छी में लपेटा सूत।
लरकटिया—सफेद ज्वार।
लरका—चने में लगनेवाला कीड़ा।
लरछा—पटार।
लरजना—नीचे आना चुकना।
लरना—चलौना।
लरनी—नरी।
लरना—नरमा।
लरवा—गन्ने का एक रोग।
लरहा—सोभना (भाले की सकल का औजार)।
लरही—कुआर में कटने वाली उड़द घरन के ऊपर रखा आधार दंड।
ललवा—लाल।
ललछही—सीकारी (ऊख)।
ललरी—गलकम्बल सास्ना।
ललदेइया—मोटा धान।
ललहा जाना—ज्वार बाजरा में दाना पड़ना।
ललछौंहो आभा—हलकी लालिमावाली ज्योति।
लवनी—कटनी।
लवारा—बछरू।
लसँवार—लम्बी पूछवाला (बैल)।
लहकना—पतली रेखा के रूप में चमकना।
लहकारना—तेज चलना।
लहठिया—पहुँच में पहनने का आभूषण।
लहठी—बन्द।
लहमे भरमें—पल भर में।
लहर्रा—बाजरा।

लहनिया—चंगठी।

लहरुआ—जब नन्ही बूंदें हवा के साथ लहराते हुई पड़ती हैं।

लहरिया—उंगलियों पर की एक प्रकार की मेंहदी रचाई।

लहाई—निहाई।

लहासो—मोटी रस्सी।

लसियाना—लासा लगना, सूख कर गिरना।

लखी—आंख के ऊपर झुके सींग वाली (गाय)।

लग्गा—
लग्गी— } बांस का लकुची (फल तोड़ने के लिए)

लच्छी—करधी।

लच्छा—छड़ा (पाव में पहनने का चांदी का गहना)।

लल्ला—लाल रंग की (गाय)।

लाई—उबले धान के चावल की मूड़ी मुरमुरी।

लाख—लाह।

लाखा—लैर (बल)।

लागनि—नेरसी।

लाजा—लावा।

लाजा होम—विवाह की एक क्रिया।

लाट—नरा।

लाटा—भूनकर कुटे अनाज का बनाया गया।

लाठ—डंडा।

लाठी—मोजी बांस की लमिया।

लाठीडोर—ठेंघनी।

लात मारनेवाली गाय—सांड मिलने पर भी न गाभिन होने वाली गाय।

लार—नार।

लालक्सर—एक महीन धान।

लालपेडा—भुन खोये की एक मिठाइ।

लालभाजी—चौलाई।

लाल मिट्टी—मुरम।

लावा—भुना मक्का खील लाजा।

लाही—सरसों की एक किस्म लाली लालिमा चना और अल्सी में कीड़ा।

लाही लगना—लाली की आभा दिखना।

लिट्टी—(दे० फुटहुरा)।

लिलार—ललाट।

लिहाई—निहाइ।

लिहावर—हथौड़ा।

लीपना—पोतना।

लीलना—अधीर होकर खाना।

लीला—सफेद लाल और नीलाभ रोयें वाला (बल)।

लुकलुक करना—कभी बुझना कभी जलना।

लूक—तपी लू।

लुकुम—पनपियाव (सवेरे का भोजन)।

लुखटा—लुरका।

लुखटी
लुखरी } लमड़ी।

लुरक्यां—ढलवां।

लूडा— } मूंज की एक बटी रस्सी।
लूडी— }

लेंडई—चिचोर।

लेंडरी— } —एक रोग जिसमें जौ
लेंडा— } गेहूँ की बालें पूरी नहीं गदराती और स्याह पड़ जाती हैं।

लेवाडो—पिछाई।

लेघा—डोडा।

लेवारा—नवारा।

लेव लेवहो बावग—मिट्टी को कनई करके की गई बोवाई।

लेवा—पटला नाव में एक सिर से दूसरे सिर तक जोडा गया तख्ता।

लैसो—चार पौवा पान।

लैब्रियाना—फल का विकास न होना।

लोंद का साल—अधिक वर्ष।

लोंदा—मृत्पिण्ड।

लोक—पर।

लोकना—ज़ाल में तोड़ना ताकि वह नीचे न गिरने पाय।

लोवनी—नवनी।

लोट—पान की कलम।

लोर—लाठी

लोहगार—जहाँ लोहार काम करता है।

लोहरी—मरा (भैंस)।

लोहलेगर गिरवी—लगर।

लोहसारी—लोहगार।

लोहामा—फाला।

लोंग—एक आभूषण (नुनेगर)।

लोंगचूना—एक मद्रास पान।

लौंज—साथ में मिलाने के लिए तैयार की गई चीज।

लौजार—औज़ार।

लौर—अधिक मास, कपास का सूखा डंठल।

लौआ— } कद्दू।
लौकी— }

लौर—कान के नीचे का हिस्सा।

वत्सतर—चार दाँतवाला बछड़ा।

वद्य—नि य बल।

वन अजवाइन—अपने आप उगने वाली अजवाइन।

वन करेला—अपने आप उगने वाला करेला।

वन्दनमालिका } तोरण।
वन्दनवार }

वर—भावी पति।

वरदेखुआ—वर देखने या ढूँढने वाला।

वरिच्छा—वर छेंकने की रस्म।

वर्षामुख—वर्षा करने के लिए तैयार।

वल्लरी—वल।

वशा—बिसुकी गाय।

वसंत पंचमी—माघ सुदि पंचमी।

वात—हवा।

वातनुजिका—बत्ती।

वातायन—वात के लि पर (हवा आने खिड़की)।

वापी—गड़हा।

विनम्रित स्वर—करुणा का स्वर।

विभा—प्रभात प्रभात और सायंकाल की ज्योति।

विभात—म – पभा।

विराव—बदद की आवाज।

विलाप—दुःखी का आवाज।

विलापना भीटा—टमाटर।

हँसना—विकसित होना ।

चौवात—ताल या नदी की तरफ से आने वाली वायु ।

ग डूबना—सूर्यास्त हो जाना, अंधेरा छाना ।

खरी—वाक की एक अवस्था ।

ग्रान—चौथा प्राण ।

ग्रास—आरा को तीन जोडियाँ ।

तहदा—पौ सौ लकारा को खोलन वाली बिजली ।

खमाला—एक माला ।

शवाकृति (डलिया)—वर के साथ दी जाने वाली बाँस का खुली रखीन डलिया, जो शवाकृति होती है ।

म्पा—प्रकाश फैंकने वाली बिजली ।

शम्बा—सोमरा ।

ाके—एक सवत ।

शाखा नहरें—बड़ी नहरो से निकली गई नहरें ।

शाखोच्चार—पाणिग्रहण के समय (हवन) कन्या वर के नाम तीन पूर्व पुरुषों के नामों के साथ लिये जाते हैं ।

शालि शाठी—अगहनी धान ।

श्यामकाली—अत्यधिक काली (गाय) ।

श्यामजीरा—एक महीन धान ।

श्यामा—काले रंग की (गाय) ।

शिगाफबन्दी—भराई (नाव की दरारों की पलाश की छाल से भराई) ।

शीतकाल—जाड़ा ।

शीरा—चीनी का पकाया हुआ पतला द्रव्य ।

शीशफूल—बोरिया एक सिर का आभूषण ।

शुभ दिन—सम्मिलन उत्सव का दिन ।

शुक्ल दिन—सुदि ।

शुक्लपक्ष—उजेला पाख ।

शोणित—रक्त

सकरकन्द
सकरकन्दी } —गंजी ।

सकरपारा—एक मिठाई ।

सकेल्ना—बटोरना ।

सकोरना—ऐंठा ।

सकोरा—(मिट्टी का) पुरवा ।

सखरा—कच्ची रसोई कच्ची रसोई वाला बर्तन ।

सगर्वहिता—दलसगना ।

सगाई—वरिच्छा ।

सगुन
सगुनी } —गाड़ी का अगला हिस्सा ।

सगुनी—शुभ लक्षणों वाला या अच्छा (बैल) ।

सगड़—धाड़ागाड़ी ।

सच्छाय—छायायुक्त ।

सजाव दही—मलाई समेत दही ।

सजिवन—कद्दू ।

सजीला—गठीला (बैल) ।

सटकारी—सीधा ।

सटहा—छरका ।

सटनी—कुलावे जुलफा ।

सड़ाक सड़ाक—कोड़े की आवाज ।

सड़ायध—एक प्रकार की दुर्गन्ध ।

सढ़ार—गर्भ धारण करने के योग्य पाड़ी ।

सतदन्ता—सात दाँत वाला बछड़ा ।

सतघरिया—चरनी ।

सतपुतिया—एक प्रकार की तराई ।

सतरंगी—रंग बिरंगी, इन्द्रधनुषी ।

सत वनिया—वह गुड़ा जिसके बीच में मस्तूल की पेंदी फिट की जाती है ।

सतुआ—भुने जौ, गेहूं आदि का पीसा हुआ सुरता भोजन।

सतुआनि—एक पर्व जो मेष संक्रांति के दिन मनाया जाता है जिसमें सतुआ दान प्रमुख कृत्य है।

सत्ता—स्वभाव का तेज और चंचल बैल

सदर दरवाजा—पौर द्वार।

सदागति—सब जगह जाने वाली हवा।

सद्दर—सात दाँत वाला बछड़ा।

सन—भूआ रने वाली एक फसल।

सनई—सन का सूखा तना।

सनसनाना—सान की आवाज हवा चलने की आवाज।

सनसनाहट—उठते भाप की आवाज।

सन पाट—रस्सी के काम आने वाली फसल।

सना—चोथा।

सनाई—मिट्टी को पानी से सानना।

सन्तानवाही—संतति वृद्धि-क्रम वाली (परंपरा)।

संनिपात—पिण्डीभूत राशि।

सपकना—द्रव पदार्थ पीना।

सपाट—समतल एक ही रंग का।

सपुरा—सान का पाती।

सप्तपदी—(विवाहोपरान्त) पाणिग्रहण के बाद की एक क्रिया भाँवर।

सफदा—गन्ने में लगने वाला एक कीड़ा।

सबुजा उड़द—तुलवुल्ली उड़द।

सबुनी—सगुन।

समइल—छूटा जो बैल के दोनों ओर जुआ में लगा होती है।

समधर—बरनी।

समधिन—सन्तान की सास।

समधी—सन्तान का ससुर।

समहुत—जो धान पहले मुहूर्त के रूप में काटा जाता है।

समा जाना—प्रविष्ट होना, अपना स्थान पा लेना।

समान—तीसरा प्राण।

समीर } धीरे चलने वाली वायु।
समीरण }

समया—जुआ की एक भीतरी खूँटी।

समेल—सला।

सरइया—चहलिया एक छोटी चिड़िया।

सरई—ढाँचे को थामने वाला डंडा।

सरकौनी—आगे वाली खूंटी।

सरकंडा—पतला एक ऊंची घास।

सरगपताली—ऊपर नीचे दो दिशाओं में जाने वाले सींगों वाला (बैल)।

सरदर—कारों की पंक्ति को बेड़े सभालने वाली।

सरपत—सरकंडा।

सरसई—सरसों के बराबर फल।

सरसर—हवा की आवाज।

सरवतनी—सबसे ऊपर की छाजन।

सराई—गन्ने का एक रोग।

सरिन्ना—एक नाव।

सरियाना—सहेज करना।

सरिहन—एक मोटा धान।

सरेती फेरना—सुनवी फेरना।

सरेस कपड़ा }
सरेस कागज } जिसमें चिकनापन लाया जाता है।
सरेस पत्ता }

सरेह—गाँव के खेतों के दिग्विभाग।

सरला—गाजा।
सरगा—एक नाव।
सरगा—कम्बल बुनने वाली लकड़ी।
सरजाम—सींग।
सला—पनारी।
सलोना—एक नाव।
सलैया—बमेरी।
सलोना—सुन्दर।
सवारी—सवारी ढोने वाली गाड़ी।
सहन—घर के आगे का खुला हिस्सा।
सहरदार—घुँघरा, घुँघरूदार।
सहलाना—प्रेम स्पर्श करना।
सहाना—भाग्यमन्दी, सौभाग्यसूचक (चूड़ी)
सहारा—एक आभूषण।
सहज—सुहेल (गाय)।
सहली—बिजली नामक आभूषण में छोटा लटकना।
साइत—शुभ मुहूर्त।
सानना—मिलाना।
सानी—पानी के साथ मिलाकर छोटी या भूसा आदि चारा।
साठी—साठ दिन में कटने वाला धान।
साढ़ी—मलाइ।
सात सिहनी—सात सिहनियों के चित्र।
सानी-पानी करना—पशुओं को खिलाना
साफी) एक रदा जिससे चिकना
साफी रदा } पन लाया जाता है।
साबौनी सबौनी—कोरी खाँड की टिकियों के रूप में बनी मिठाई।
साम चुरिया—पाइया में लगी लोहे की मुदरी।
सारगा—एक नाव।
सारस—[illegible]
सालना—बलगाड़ी को ठीक करना।
सास्ना—ललरी।
साहना—गर्भ धारण करना।
साहिल—पटेला।
साहो—एक प्रकार की ईख।
सिकहर—यह रस्सी का बना होता है और दही जैसा सामान टाँगने के काम आता है।
सिकहुला) सींक की बड़ी डलिया (छोटी
सिकौंया } पेंदा वाला तथा बड़े मुँह
सिकौंयी } वाली)।
सिक्का—नाव की पेंदी का निचला पटरा, तिल्क, तिलक का साइत।
सित समेल—जुआ की दूसरी भीतरी खूँटी।
सिझाना—आग पर ज्यादा देर रखना।
सिटकली—एक बार से अधिक काढ़न पर दूध देने वाली (भैंस)।
सितलबुकनी—सतुआ।
सितुरियाई—चठी।
सिनठी—सनई।
सिन्दूरदान—कन्या की माँग में वर द्वारा सिन्दूरदान।
सिन्दूरदानी—सिन्होरा।
सिन्दूर बहोरने की विधि—इसमें सिन्दूर लगी माँग में पुन सिन्दूर भरा जाता है।
सिन्दूरी—सिन्दूर का सा (रंग)।
सिन्नल—कातिल टाँगों वाला (बैल)।
सिन्होरा—सिन्दूरदानी।
सिन्होरी—चौखुट।
सिपहरी—तिजहरी।
सिपावा—सिरपाया (बलगाड़ी के टेक के लिए)।

सिपोरिया—बीच में मुड़ा हुआ (खेत)।
सिमरी—सेमल के पेड़ों के पास की जमीन।
सिम्मल—समइल।
सियराना—मंद पड़ना, ठंडा पड़ना।
सियारबियाही मेह—कोढ़िया मेह, धूप छाहीं वर्षा।
सियाह उड़द—काला उड़द।
सिरकटा—स्यार।
सिरकटी—पियरी (गाय)।
सिरनी—खीर।
सिरपावा—सिपावा।
सिराजाना—जुड़ा जाना, ठंडा हो जाना।
सिरा फुलकना—कनछिया फेंकना।
सिरा—धारा।
सिरारा } सिरारी } पाई का लटकन वाला हिस्सा
सिरुका—सुरवा।
सिरोरा—दक्खिनी बयार से उत्पन्न रोग।
सिल—धाराओं की टक्कर।
सिलटी—बालू, सिल्टी।
सिलहट—एक मोटा धान।
सिलो—अनाज की इकट्ठी राशि।
सिल्टी—रेतीली जमीन।
सिधवाई—गाड़ी को उलटने से रोकने के लिये इसकी टेक लगाई जाती है।
सिवान—हार, सीमान्त।
सिसकटनी—नटकटनी।
सिसुआ—लाल ज्वार।
सिहराना—ठंडी प्रदान करना।
सीकड़—पकर।
सीता बनना—बुवाई और जुताई का काम होना।
सीतावस्त—अनाज वाले खेत की मिट्टी का एक ढेला।
सीधा घरवा—पूरब से हवा के रुख के साथ उठने वाला बादल।
सीना लगना—गन्ने की फसल में कीड़ा लगना।
सीरा—चाआ।
सीस—गहूँ की बाली।
सुअरगोड़ा—छोटा टाँग वाला (बैल)।
सुआ—सुई, अंकुर।
सुइयाना—अँखुआना।
सुई—नुकीला अंकुर, बीज का पहला उकसाव, धान का नया पौधा।
सुकवा—शुक्रतारा।
सुकवा उगानी—जिस समय शुक्र तारा उगता है।
सुखठा } सुखड़ा } गन्ने का एक रोग जिसमें नीचे से ही डंठल सूख जाता है।
सुखाई—मिट्टी के कच्चे पात्रों को सुखाना।
सुखार—मरायल।
सुगही—लकड़ी की सँड़सी।
सुगापंखी—एक महीन धान।
सुगिया—छोटी हरी मटर।
सुग्गा—तोता।
सुग्गा कटारी—जिन आमों के कुछ भाग तोते खा चुके रहते हैं।
सुग्गा लिखना—तोते का चित्र बनाना।
सुटकनी—बहुत पतला सोंटा।
सुड़कना—द्रव पदार्थ पीना।

सुतरियाई—चठो।

सुतरी }
सुतली } पतली रस्सी।

सुतुही—बीच म कटी हुई सीपी।

सुदि—शुक्ल पक्ष, शुक्ल दिन।

सुदिन—अच्छा दिन।

सुनारी—गहना बनाने का काम।

सुनती फेरना—झाड़ू फेरना।

सुन्न काली—अत्यधिक काली (गाय)।

सुपौजा—दुहत्थी।

सुरका—तयार धान।

सुरका—इख चना और मटर तीनो म लगने वाला कीडा जो पत्तियो का एक दम साफ कर जाता ह।

सुरका चिउडा—हरे धान का भून कर तयार किया हुआ चिउडा।

सुरमा }
सुरमी } भाथी का नली।

सुराना—चूरी।

सुरसुराना—धार धीर हवा चलना किसी छेद म से पानी का निकलना।

सुरसुराहट—बालू का आवाज।

सुरीली—मधुर स्वर।

सुलखनियाँ—पाल।

सुलझाना—कंघा करियाना।

सुल्ला—पोली गाठ।

सुसकार—साँप की आवाज।

सुहाग मागना—सौभाग्य का याचना जो क या पक्ष म कन्या के लिये की जाती ह।

सुहागा सुहागी—हेंगा।

सुहागिन सुहागिल—शुभ पुरवया (हवा), बिछुआ।

सुहेल—कम खुराक पर अच्छा दूध देने वाली गाय।

सुअरा } उत्तर पश्चिम से चलने वाली
सुअरी } बयार।

सूचीभेद्य—सूई से छेदे जाने योग्य अर्थात पत्थर घना अधेरा।

सूतकताई—मिट्टी के पात्र बनाकर सूत से काटना और अलग करना या रखना।

सूतकनी—मदा के चाल से बनी सूत दारी कचौडी।

सूता पडानी जून—सो जान के बाद का समय।

सूतिया—सूत के आकार का गाव मे पहनने का एक आभूषण।

सूरजमुखी—एक प्रकार की हथेली की मेंहदी रचाई।

सूरन—ओल जमीकन्द।

सूत—पाल सुतयनिया।

सेत—धोरा (बादल)

सेव—बेसन का बना एक खाद्य पदाथ चीनी या शक्कर में कुछ आटा मिलाकर बनाई मिठाई।

सेल }
सेली } बछडा को गाय थन से खीच कर इसस बाँध देते ह।

सेल्हा—एक मोटा धान।

सेल्ही }
सेव } हलका (हल) हल्की जुताई।

सेवइ—एक मीठा भोज्य।

सेवता—काठ का एक छिछला बरतन जिससे नाव म आये पानी को उलीचा जाता ह।

सेहा—सेव ।
सेहा हो जाना—खड़ा हो जाना ।
सेहू—इस रोग से दाने काले पड़ जाते हैं ।
सरा—आरानी ।
सला—जुआ के दो सिरों पर की एक खूँटी पतवार की घूमने वाली लकड़ी ।
सलाव—बाढ़ ।
सोफी—जिससे बैल के पैरों के नीचे डाँठ डाला जाता है ।
सोझघट्टी—नाव से सीधे इस पार से उस पार तक जाने की जगह ।
सोता—सेवता ।
सोधना—सोधा शुद्ध करना ।
सोन—एक प्रकार का सन ।
सोन हलुआ—सोहन हलुआ ।
सोहा जाना—सोधा होना ।
सोमरा—दुबहो ।
सोया—एक शाग ।
सोरहा } सोरहो } सोलह बोझों की राशि ।
सोहन रेती—एक प्रकार की रेती जो मोटे काम के लिए उपयोग में लाई जाती है ।
सोहन हलुआ—भुने बेसन में बनी मिठाई ।
सोहनी—निराई ।
सोहाग पुरी—एक प्रकार का पान ।
सोहारी—एक प्रकार की पूड़ी ।
सौमरा—गन्ना दूसरी बार जुताई ।
सौरमास—सूर्य के राशि संक्रमण के आधार पर होने वाला मास ।
सगिया—दाहा, कटनी का साधन ।
सँचा जाना—मक्के में दाना पड़ने की अवस्था ।
सचिका—लकड़ी की साँचिया ।
सझलौंका } सँझलौको } सन्ध्याकाल ।
सझवाती दिया—सन्ध्याकालीन दीपक ।
सझा—सायंकाल का गीत ।
सझौंवा—शाम का भोजन ।
सटी—सिनठी ।
सँडसी—जिससे गरम लोहा पकड़ने का काम लिया जाता है ।
सड़री—बेलन ।
संदेश—छेना से बनी एक मिठाई ।
सँवरा—सँवता वाला (जलने के बाद) ।
सँवरा—बादल के आने से कुछ मंद सा हुआ घाम या प्रकाश ।
सँवराना—कुछ कम तेज होना, ठंडा या मंद पड़ना ।
सांकड़ा—पैर का आभूषण ।
सारन्डी—उँगलियों पर की एक प्रकार की महँगी रचाई ।
साकरछल्लो—पैर की उँगली में पहना जाने वाला आभूषण (छल्ला और साँकरी के योग से बना) ।
साँकरी—सिकड़ी साँकल की तरह फन्देदार गाँठ पैरों की उँगलियों के पोरों में पहना जाने वाला आभूषण ।
साकल—किवाड़ी उठान के बाद लगाये जाने का साधन ।

साग } सरजाम ।
सागड़ }

साची—एक प्रकार का पान ।

साटा—चाबुक ।

साड—बिजार ।

साढ—हरिम ।

सापिन } बाहर जीभ निकाल कर लर
सापिया } लपाने वाला (बैल) ।

साय साय—शून्य की आवाज ।

सावा—एक भदई फसल ।

सात—बेसन की एक मिठाई ।

सासत } खाने के दो मुना से बीच म रखा
सासर } जाने वाली बास की एक पट्टी ।

सिंगार—पट्टी—एक आभूषण ।

सिंघाडा—बीडा, पानी का एक फल ।

सिजो } ओखर, ओखली ।
सिजोय }

सिही—सिंह का संक्रांति में ब्यान वाली गाय बहुत ही असगुनी गाय ।

सीक—टट्टर मे सेंकन की जगह ।

सीकी सींग—मूंज की सीक ।

सीकड—बरहा ।

सींकडदार—सीकडी वाला ।

सींका—छिक्कहर ।

सूग—? ।

सूडी } एक प्रकार की गिडार ।
सूडा }

सूतना—हाथ से नाज पर डूबना ।

सेंकना—आग पर ज्यादा देर रखना ।

सेंठो—सिमटा ।

सेंठा—बूदीदार गोल गहना ।

सेंवता—सेंदरा ।

सटा—बानर ।

सावन—सिलेटी रग वाला (बैल)

सोवनी—कुछ सफेदी लिये सिलेटी रग की (गाय) ।

साटा—पैना ।

साठ—नमकीन व्यजन, दालिलो ।

साठना—पशुगण अलग करना ।

सौंकन—सावेगा ।

सौंबरी—रग व हिंयार से बिल्कुल काली (भैंस) ।

सौंपी—एक सवारी गाडी ।

सौंदी—जडहन एक मोटा धान ।

स्तनित—बादलों का गर्जन ।

स्निग्ध—जलयुक्त ।

स्यावड—सीतावत, अनाज वाले खेत की मिट्टी का एक ढेला ।

स्यावडी—राश मे से अलग किया हुआ दाना ।

स्याम—स्यान साम चुरिया ।

स्याह—काला उदास ।

स्याही—कांति की कमी मालिन्य ।

हई—चराई ।

हडहडा—छोटे दाने वाला ।

हडहोडा—हडहरा (हवा) ।

हडडा—तम्बाकू का एक रोग जिसमें एक सफेद नया तना निकलने लगता है और मुख्य पौधा नष्ट हो जाता है ।

हडहा—उवटा ।

हडँहरा—दक्षिण पछाही हवा ।

हनकरी—मूठ ।

हलिया—हल का एक अंग ।

हतटी—दुतररा ।

हताना—पाँड की पहियेनुमा मिठाई।

हत्या—पनोनी जलिया पानी उली चन म लिए ओजार, बैंत सचिया।

हयक्डा—चलौनी।

हथकल—चौंक।

हथगर— हड़हर।

हथपई—हाथ म पानी स चुपड़ कर तयार की गई रोटी।

हथफल—हथेली पर का आभूषण।

हथफूल—मेंहदी को न हीं बूबा की रचना।

हथसँकरी—हथेली पर का आभूषण।

हथिया—हस्त नक्षत्र घात में लगने वाला एक कोढ़ा, चलौना।

हथुनी—एक प्रकार की ईख।

हथेली—गदोली।

हथौड़ा—लोहा पीटने के लिए या ठोकने के लिए एक औजार।

हथौड़ी—हथौड़े का लघु संस्करण।

हथौरी—चलौनी।

हबसान्ना—गेहूँ के दाने बड़ा होना।

हर—हल।

हरचाडी—नजारा।

हरदा—अधिक वर्षा के कारण होने वाली हल्दी की तरह पीला रोग।

हरनाधा
हरपगहा
हरपघा
हरवागा
—नारा हल जोता, पगहा।

हरवत—साइत (खेत म अच्छे मुहूर्त म बीजारोपणार्थ हल चलाना।

हरसा—तागा।

हरहो—हर मता पर टूटने वाला (गाय)।

हराई—हल स जोती गयी गहरी रखा।

हरियरी—बल का हरा चारा (चार)।

हरिया—हरहो (गाय)।

हरिनयनी (एकादशी)—असाढ़ सुदि का एकादशी।

हरिस—हरस हल का एक अंग।

हरी—बरधाने योग्य (गाय)।

हरी होना—गर्भ धारण करना।

हरा बगुला—खोइया (ईख का)

हस—हरिस।

हल्दई—चितवा।

हलना—बिना परे मनी के जल म पर रख कर चलना

हलमचानी—वीट।

हल मे काढ़ना—हल चलाना सिखाना।

हल मे निकालना—हल चलाना सिखाना।

हलवाहा—बैल को जोतनेवाला व्यक्ति।

हल्हला जाना—रेंडा जाना।

हलान—जहाँ बिना पैर हल कर नदी का पार किया जाय।

हलीपा—हरिस।

हल्दी उबटन लगाना—लगन निश्चित होने पर कन्या और वर को जल्दी उबटन लगाना शुरू होता है।

हल्दी चढ़ाव—तेल चढ़ाव विवाह की एक रस्म।

हल्दी सोपारी—विवाह के लिए हल्दी सोपारी पड़ोस में बाटना।

हल्लना—झूमना (बल)।

हतगभा—रोटी निकालने के लिए लोहे की छड़ ।

हस्त—एक नक्षत्र ।

हहकारना—हवा का तेज चलना ।

हाथीडुबान—जल की गहराई जिसमें हाथी डूब जाय ।

हाबुस—भुने जौ की बाली ।

हार—गले का आभूषण, सिवान बाहर का खेत ।

हाल—पहिया के चारों ओर चढ़ाया गया लोहा ।

हासिल—बढ़ी ।

हिच्छा—सीक का आधार ।

हिनहिनाहट—घोड़े की आवाज ।

हिमबात—बर्फीली गिरिमृखलाओं से आने वाली हवा ।

हिरनबाइ—कुआर पूस की तेजी से दिशा बदलने वाली हवा ।

हिलकोरा मारना—नाव का लहरों के साथ हिलना डगमगाना, तेजी से भागना ।

हिलावर बनाना—हल चलाने का (खोंचने का) अभ्यासी बनाना अथवा हल खींचने योग्य बनाना ।

हिला देना—डंडों से प्रभावित कर देना ।

हिलोर—हिलावट, कंपन ।

हिलोरना—हिला देना, लहरें उत्पन्न करना ।

हिसारी—हिसार का (बैल) ।

हुआ हुआ—सियार की बोली ।

हुप हुप—उल्लू की बोली ।

हुमना—समधर ।

हुमेल—मुहरों से गुथी हुई (एक आभूषण) ।

हूरना—बहुत ही भद्दे तरीके से खाना ।

हूरा—लोहे के फार के छेद के बाहर निकले बेंट का हिस्सा ।

हूरा—सिरा ।

हेमुली—कटनी का एक छोटा साधन ।

हैकल—एक आभूषण (सीकड़ीदार) ।

हेंगा—जोते खेत को बराबर करने का साधन ।

होरहा
होल्हा
होला —डंठल समेत भुना अनाज ।

हीन—फसल ।

हुंकना—हांफने वाला बैल ।

हंसराज—एक महीन धान ।

हंसली—गले का एक आभूषण ।

हंसिया
हसुआ
हंसुआ —दरांत, फसल काटने के लिये ।

हंलुआ—सामान के लिए अलग एक जगह ।

हुंकार—गाय बैल की आवाज ।

हूंतना—सूंतना ।

हेंगा—पटेला, पाटा ।

हेंगाना—बराबर करना ।

हेंमही—बरही ।

हेंवती—हेमन्ती कपास की एक जाति ।

ह्रादिनी—गड़गड़ा, बिजली ।

टिप्पणी—प्रस्तुत दा नानुक्रमणिका जितनी व्यवस्थित होनी चाहिए था, उतनी नहीं है। साथ ही अभी इसमें तुलनात्मक सामग्री भी नहीं है। अगले संस्करण में पुस्तक का कलेवर कुछ दूसरे ढंग का होगा और अनुक्रमणिका भी अधिक व्यवस्थित और पूर्ण होगी। प्रूफ की भूलों के लिए लेखक क्षमाप्रार्थी है।

—लेखक